

गुणों का ख़ज़ाना

(गृहस्थियों के अतीव उपयोगी)

जिसे

स्वर्गवासी स्वामी परमानंदजी उदासी

ने

गृहस्थों के उपकारार्थ बनाया.

वही

मोतीलाल बनारसीदास

अध्यक्ष—पंजाब संस्कृत पुस्तकालय

सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर

ने निज श्री

मुम्बई

संस्कृत प्रेस, लाहौर में छाप कर प्रकाशित किया

संवत् १९८१]   मूल्य २)   [सन् १९२४

प्रकाशक—
मोतीलाल बनारसीदास
अध्यक्ष—पंजाब संस्कृत पुस्तकालय,
सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर

मुद्रक—
अमरनाथ "रौणक"
मैनेजर—मुम्बई संस्कृत प्रेस,



ग्रन्थकर्त्ता स्वामी परमानंदजी उदासी,
पेशावर निवासी.

भूमिका ।

इस ग्रन्थ के पांच आध्याय हे प्रथम अध्याय में यूनानी तरीके से शरीर की उत्पत्ति और शारीरक रोगों की औषधियां और स्त्री तथा बच्चों के रोगों की औषधियों का निरूपण है और अनेक रोगों पर चलने वाली अज़माई हुई दवाईयों का निरूपण है सब ७३ गुण इम में भरे है ।

दूसरे अध्याय मे धातुओं के शोधन मारने और उत्पत्ति तथा परीक्षायों का निरूपण है, इस में सब १०४ गुणों का निरूपण है ।

तीसरे अध्याय में २४१ गुणों का निरूपण है जिन को बना कर पुरुष रुपया भी कमा सक्ता है ।

चौथे अध्याय में १११ वतुओं के गुणों का निरूपण है जिनको जानने से गृहस्थ को अनेक प्रकार का लाभ पहुचता है ।

पांचवें अध्याय में १४६ वस्तुओं का निरूपण है तथा हर एक वस्तु के गुण और अवगुण का हाल है ।

सब मिलाकर ६७५ गुणों का इस ग्रथ में निरूपण है जिन के जानने और सेवन से गृहस्थ को बड़ा भारी लाभ पहुच सक्ता है।

उपकार दृष्टि को लेकर स्वामी परमानंद ने इस ग्रन्थ को बड़े परिश्रम के साथ निर्माण किया है सर्व सज्जन पुरुषों को उचित है कि इसकी एक २ प्रति लेकर अपने २ घर में रखें और इस से लाभ उठावें ॥

❀ विषय सूची ❀

पहला अध्याय.

अथ द्वितीयोऽध्यायः।

अथ तृतीयोऽध्याय ।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

अथ पंचमो ऽध्याय

गुणों का खजाना



[सोरठा]

जो अनन्त चिद्रूप, पूर्ण सब में एकरस ।
है वह परम अनूप, आदि अतते रहित जो ॥१॥

[दोहा]

निराधार निरवयव जो, व्याप्य रयो सब थांहि ।
निर्विकल्प चद्रूप जो, घाट बाट कहुं नाहि ॥२॥
हंसदास गुरुको प्रथम, प्रणवों बारबार ।
नामलेत जह तम मिटै, अघ होवत सब छार ॥३॥

[चौपाई]

परमानंद मम नाम पछानो, उदासीन मम पथ को जानो ।
राम दास मम गुरुको गुरु है, आत्मवित जो मुनिवर मुनि है ॥४॥

[दोहा]

परशराम मम नगर है, सिंधुनदी उस पार ।
भारत मडल के विषै, जानै सब ससार ॥५॥

जिस काल में मनुष्य भोजन करता है और वह भोजन महदा के भीतर जाता है शरीर के साथ मिलने तक इस की चार हालतें होती हैं ऐसी यूनानी

हकीमों की राय है पहले वह भोजन महदा में जाकर के पकता है तब सार उसका रगों अर्थात् नाड़ियों द्वारा जिगर को जाता है और जो कि उसका स्थूल भाग फोग होता है सो आंतो द्वारा गुदा के रास्ते से मल हो कर बाहर को निकल जाता है फिर जो कि भोजन का सार भूत रस जिगर में जाता है वह फिर जिगरमें जाकर के पकताहै सार उसका फिर नाड़ियों द्वारा संपूर्ण शरीर के अवयवों में जाता है और फोग उसका पेशाव है वह गुरुदा से मसाना में हो कर उपस्थ इन्द्रियद्वारा बाहर गिरजाता है और तीसरा वह सार नाड़ियों में जाकर के पकता है जो कि शरीर के साथ मिलजाने के योग्य हो जाता है अर्थात् शरीर का हिस्सा बनजाता है फिर जो सार कि शरीर के अवयवों मे जाता है वह भी वहां पर जाकर के पकताहै और अवयवों में ही मिलजाता है सो वीर्य होता है इसी वास्ते वीर्य संपूर्ण शरिर में व्याप करके रहता है नाड़ियों में और शरीर के अवयवों में जो कि सार अंश भोजन का पकता है उसका फोक जो मैल होती है जो कि शरीर पर जितने रोमकूप हैं उनसे बाहर निकलता और पानी जो कि उसका [illegible] । है वह

उन्ही रोमकूपों द्वारा पसीना होकर बाहर को निकलता फिर भोजन के सारभूत रसों की चार तरह की ताकतें शरीर में पैदा होतीं हैं एक वह ताकत पैदा होती हैं जो दूसरे अवयवको या उससे सारको खैंचती है दूसरी वह ताकत पैदा होती है जो एक अवयव जो कि अवयवों को अपनी २ जगह पर थामे रखती है तीसरी ताकत हजम करती है अर्थात् पचाति है चौथी वह ताकत है जो एक अवयव से रसको दूसरे अवयव की तरफ पहुंचाती है जब कि इन चारों ताकतों में से कोई भी ताकत कमजोर होजाती है तब हाजमा बिगड़ जाता है इसी से फिर बिमारी खड़ी हो जाती हैं जिगर में जिस काल मे जाकर के गजा पकती है तब उस काल मे उसकी चार सूरतें बनजाती हैं उन्ही का नाम चार खिलते भी हैं एक का नाम सफराह है जो कि फेनकी तरह सबसे उपर रहती है दूसरी खिलत का नाम खून जो कि सफर के नीचे अच्छी तरह से पकता है तीसरी खिलत का नाम सोदा है जो कि तिस के नीचे लच्छे की तरह या मोतीकी तरह रहता है चौथी खिलत का नाम बलगम है जो कि अच्छी तरह से नहीं पकता है किंतु कच्चा रहता है और शरीर की स्थिरता इन चारों

से ही है। फिर जिस काल में जिगर में जाकर के पकती है तब एक हिसा इसका पका हुआ दिल की तरफ जाता है वहां पर जाकर के जो कि इसका सार होता है वह जौहर बन जाता है उसको हकीम लोग रुहे हैवानी कहते हैं क्यों कि वह दिलकी सूक्ष्म नाड़ियों द्वारा खून के साथ तमाम वदन में फैलजाता है फिर वहि रुह दिमाग में जाकर रूहे नफसानी बनजाती है और तमाम वदन में क्रिया को पैदा करती है वही रूह आंखो में देखने की ताकत को और कानों में सुनने की ताकत को और जिह्वा में रस लेने की ताकत को घ्राण में सूंघने की ताकत को जिह्वा में बोलने की ताकत को पैदा करती है और वही रूह हैवानि जिगर में जाकर के और भी बहुत से फायदे वदन को देती है फिर इसी का नाम रूहेतबई हो जाता है। भीतर ग़जा में जो कि अवखरे गलीज उठते हैं उनको रीह कहतेहैं और जब कि हाजमा में किसी तरह का फसाद पैदा हो जाता है तब रीयाहें बहुतसी पैदा हो जाती है चाहे वह महदा में चाहे जिगर में चाहे आतों में होजायें। साफखून का मिजाज गरम व तर है कवाम अर्थात् पाक उस का मोत दिल है मजा फीका और रंग सुपेद है क्यों

कि खून के साथ बलगम का भी हिसा होता है और सब नाड़ीयों में वह विद्यमान होता है जिसकाल में खाने की गजा नहीं मिलती है वही खून बन कर बदन की गजा बनजाती है और वही हड्डियो के जोड़ों वगैरह को भी तर रखता है फिर सफरा खालस का मिजाज गरम व खुशक है कवाम उसका पतला और स्वाद तीता रंग उसका पीला है फिर सफरा के तीन फायदे हैं एकतो यह खून के साथ मिल कर के मोटी रगों में अर्थात् नाड़ियों में जाता है और इस के जाने से कवाम खून का पतला हो कर महीन नाड़ियों में भी जाता है दूसरा यह पित्ते में जाता है पित्ते से जब कि थोड़ा सा आंतों पर गिरता है तब जंगल फिरने की हाजत होती है तीसरा यह रीह की भी गजा याने खुराक होता है। सौदा का मिजाज सरद और खुशक है वाम इसका गाढ़ा है स्वाद कसैला तुरसी की तरफ माइल है और रंग इसका स्याई की तरह है इसके भी तीन फायदे है एक तो खून के साथ रगों में जाता है और खून के कवाम को गाढा करता है दूसरा यह हड्डी को भी-गजा हो जाती है तीसरा तिली में जाता है और वहां से जब कि इसकी दो एक बूंद महदा के मुखपर गिर-

ती हैं उसकाल में कुछ भूख मालूम होने लगती है

सब विमारियें दो तरह से पैदा होती हैं एक तो सूर्य्य की गरमी से और पानी की सरदी से होती है दूसरा रीह के वदलने से या खिलत में रीह का वदलना हो कर एक ही खिलत में या वहुतसी खिलतों में होने से भी वीमारी होती है हर एक विमारी की चार हालतें होती हैं पहली हालत रोग का पैदा होना है दूसरी हालत वढना है तीसरी हालत अपनी हदतक पहुंचना है चौथी हालत घटने पर होते जाना है।

अव रोगों के पहचान के चिन्हों को दिखाते हैं गरमी सरदी तरी और खुशकी इन्ही को चिन्हों से जानना चाहिये अकेली गरमी या अकेली सरदी नहीं होती किंतु गरमी साथ तरी और खुशकी के और सरदी साथ तरी या खुशकी के जमा होती है जैसा कि गरमी साथ तरी के खून में और साथ खुशकी के सफरा में और सरदी साथ तरी के वलगम में और साथ खुशकी के सौदा में जमा है। अव खून से वीमारी के होने के चिन्हों को दिखलाते हैं जव कि खून का गलवा होता है तव तमाम वदन भारा वुझाता है या वदन का कोई एक अवयव भारी वुझाता है और वदन टूटता है उदासियें वारंवार आती

हैं रूंगाईयें भी आती हैं मूंह का मज़ा मीठा हो जाता है और चेहरे का रंग लाल हो जाता है नेत्रों और जिह्वा का रंग भी और पेशाव का रंग भी लाल हो जाता है नवज तेज चलती है अधिक हसना और मुसकराना फोड़े और फुंनसी का अधिक निकलना मसूडों से खून का निकलना मिजाज में जलदिपने का होना नकसीर का फूटना यह सब चिन्ह खून के विगाड़ से वीमारी को वताते हैं।

अव सफराह से विमारी के चिन्हों को दिखाते हैं वदन और आंख का रंग पीला होना और जिह्वा का मजा फीका होना मूंह और नाक में खुशकी हो और नासिका से गरम वायु का निकलना प्यास का वहुत लगना भूख का कम लगना मूंह का मचलाना और केकडवी का होना पेशाव का रंग पीला होना नींद का कम आना खराव स्वप्नों का देखना वदन पर खाज होना खराव वस्तु के खाने को इच्छा होना और नवज की जगह पर यत्किंचित सोज का होना यह सव चिन्ह सफरा से वीमारी को वताते हैं।

अव वलग़म से वीमारी के चिन्हो को दिखाते हैं वदन में सुपेदी और नरमी का तथा सरदी का प्रगट होना और नेत्रों में तथा जिह्वा में भी सुपे-

दी का होना और शरीर के अवयवों में भारापन का होना और नींद का बहुत सा आना बदहज़मी का होना खटे डकारों का आना और नाक से पानी का वहना और मुख से लुआव का निकलना और पेशाव का रंग सुपेद होना और अधिक पेशाव का आना और नवज़ का सुस्ती से चलना जिस बीमार में यह चिन्ह पाये जाय उसकी बीमारी वलगम के ग़लवा से जान लेनी ।

अव सौदा से बीमारी के चिन्हों को दिखाते हैं बदन का सुस्त होना और बदन का रंग स्याह होना खून का ग़लीज होना फिकर और चिन्ता का बहुत होना खराव स्वप्नों का आना या नींद का बिलकुल न आना जुवान का रंग भी काला होना और वगैर प्यास के जुवान का सूकना पेशाव का कम आना और पतला आना यह सव चिन्ह सौदा के फसाद से बीमारी को वताते हैं हकीम को उचित है जो पहले बीमारी के खून वगैरह कारणों को जान करके बीमार की दवाई को करे विना जाने सें कभी भी न करे

अव बच्चो के उत्पत्ति के हाल को यूनानी तरीके से दिखलाते है स्त्री और पुरुष दोनो की वी-

र्य एकही काल में जबकि गर्भाशय में गिर करके मिलते हैं उस काल में यदि गर्भाशय में किसी तरह की बीमारी गर्भ होने को रोकने वाली न हो तब उस काल में दोनो वीर्य परस्पर मिल करके इकट्ठे हो जाते हैं इसी को हकीम लोग नुतफा कहतेहै फिर इस नुतफा में चार नुकते सुपेद बुड़बुड़ी की तरह पैदा हो जाते है एक नुकता दिल की जगह पर और एक जिगर की जगह पर और एक दिमाग की जगह पर होता है चौथा नुकता तीनो से बड़ा और सुपेद रंग का होता है जो कि धीरे धीरे बढ करके सब महदे को घेर लेता है और महदा महीन तह स छा जाता है। फिर उसी नुतफे के अंदर एक तरह की गरमी स्थित हो जाती है जो कि स्त्री पुरुष दोनों के वीर्यों से पैदा होती है उसी को हकीम लोग हरारते अज़ीजी और हरारते असली भी कहते है जब तक कि शरीर में यह हरारत अर्थात् गरमी बनी रहती है तब तक ही इसकी जिंदगी भी बनी रहती है और इसके कम हो जाने पर कमज़ोरी हो जाती है इसके बढ़ जाने से ताकत बढ़ जाती है फिर सात रोज में वह चारों नुकते लाली को पकड़ लेते हैं अर्थात् लालरंग वाले

होने लग जाते हैं और चिन्ह अवयवों के उनमें प्रगट होने लगते हैं और माता के रहम की रगों का मुंह अर्थात् माता के गर्भाशय की नाडियों का मुख उस नुतफ के जिगर से जा करके मिल जाता है उन्हीं नाडियों से उस नुतफा में थोड़ी थोड़ी गज़ा पहुंचने लगती है फिर चार दिन के पीछे वह नुकते लाल हो जाते हैं और नाडियों के रास्ते भी प्रगट होने लग जाते हैं फिर उनहीं चारों नुकतों में से एक नुकता नाभी के स्थान में स्थिर हो जाता है और नाड़ियां भी इसी नाभी में आकर के जमा हो जाती हैं और उन्हीं द्वारा हैज का खून नुतफा में पहुंचता है और वही उसकी खुराक होती है फिर सोलह दिनों के पीछे सब शरीर के अवयव फूटने लगते हैं और थोड़ा थोड़ा खून रहम से उन पर टपकता है और उस की खुराक होता जाता है फिर उस में चेतनता पैदा हो जाती है उसी को फारसी वाले जान कहते हैं फिर उस के तीन दिन पीछे स्त्री या पुरुष के चिन्ह उस में पैदा हो जाते हैं। फिर के पांच रोज के पीछे सब अवयवो की सूरतें प्रकट हो जाती हैं और स्त्री या पुरुष का जैसा कि शरीर बनता है वैसाही उस में स्वभाव भी स्थिर हो जाता है और ना-

ड़ियों के रास्ते जारी और अवयवों के जोड़ भी प्रकट होने लग जाते हैं लड़के का शरीर ३५ दिन से ४५ दिनों तक पूरा हो जाता है और लड़की का शरीर ४० दिन से पचास दिनों तक पूरा तैयार हो जाता है तैयार हो जाने के पीछे छः महीनों तक बराबर ही बढ़ता रहता है जो कि ३५ दिन में तैयार होता है वह ७० दिन में क्रिया वाला हो जाता है और दोसौदस दिनों के जो कि सात महीने होते हैं उन सात महीना में निकल आने की कोशिश करता है बाहर आकर वह जीता भी रहता है और जो४० दिन में शरीर पूरा तैयार होता है वह अस्सी ८० दिनों में चेष्टा को करता है फिर २४० दिन के आठ महीना होते हैं अर्थात् वह आठवें महीने मे पैदा होता है और जीता नहीं रहता है और जो बच्चा नवें महीने में पूरा पक करके निकलता है वह ताकत वर होता है और जीता भी रहिता है।

जब कि बच्चे के पैदा होने का समा समीप आवे तब दो एक होश्यार दाइयों को बुला कर उसे कोठडी में रखे। अधिक स्त्रियों की भीड़ उस कोठड़ी में होने नदे जब कि बच्चा पैदा हो तब होश्यार दाई बहुत होश्यारी से और धीरे से चार अंगुल छोड़

कर कें नाफ के उपर से नाड़े को काटै और बहुत धीरे से वच्चे की मैल से सफाई को करै और रूई के फाहे को सरसों के तैल में या जीतों के तेल में तर करके वच्चे की नाभी पर रखे और शीर गरम पानी में थोड़ा सा नमक मिलाकर उस पानी से वच्चे को स्नान करावे मगर उस के नाक और कानों में पानी जाने न पावे यदि उस पानी में थोड़ीसी मेथी की पत्ती को जोश दे कर स्नान कर कोसे २ से स्नान करावे तव और भी अच्छा होवेगा और एक अंगुली में शहत लगा कर उस के मुख में देवें फिर वच्चे को नरम कपड़ा में लपेट कर पोंछ कर नरम विछौना पर रखे और जिस मकान में अधिक चांदना न हो उसी में पहिले तिसको रखे फिर धीरे २ उस को हिलाया जुलाया करे और धीरे २ चांदने में भी रखा करें और जीतो का या सरसों का तेल उस के वदन पर लगाया करे।

अब वच्चे को दूध पिलाने की विधि को लिखते हैं प्रथम पांच रोज़ तक वच्चे को इस तरह से दूध पिलाना चाहिये जो दूध में रूई के फाहे को तर करके वच्चे के मुख में दे जो उसके कोमल मुख के अवयवों को नुकसान न पहुंचे और वच्चेको दूध कामजा मालूम

हो और वह मुखको हिला करके दूध को अपने महदे में उतारे इस रीति से बच्चा धीरे २ दूध को पीने लगेगा यदि किसी नेकचलन वाली तंदुरुस्त स्त्री का दूध मिल जायें तब बड़ा गुणकारी होगा यदि ऐसी स्त्री न मिलै तब बकरी का या निरोग गौ का दूध लेकर शीर गरम करके उसमें रुई को तर करके बच्चे के मुखमें रखें फिर माता अपने स्तन को पहले बच्चे के मुखमें निचोड़े जो उसको दूध का मज़ा मालूम हो और आप स्तनो से दूध को खैचना सीखे अगर माता को किसी तरह की बीमारी न हो तब उसका दूध बच्चे को बड़ा गुणकारी होता है लेकिन छै रोज़ तक माता का दूध अच्छा नहीं होता है कोई चालीस रोज तक ही उसको अच्छा नहीं मानते हैं यदि इतने दिनों तक माता के दूध को न पिलाया जावे तब तो बहुत ही अच्छा है यदि इतने दिनों तक किसी दूसरी स्त्री का दूध पिलाया जाव तब एक तो वह सुंदर हो और नेकचलन वाली हो बीस से लेकर तीस बरसो तक की उमर वाली हो इससे बड़ी न हो दूध उसका न बहुत गाढ़ा हो न बहुत पतला हो छाती उसकी चौड़ी हो लड़का जनी हो लड़की न जनी हो और दूध पिलाने वाली दूध और

घृत वगैरा उत्तम भोजन को किया करे फिर वह पहले दो एक दूध की बूंदे जमीन पर गिरा करके फिर स्तन को बच्चे के मुख में देवे और बहुत सा चलना फिरना भी न करै।

अगर दूध उसका बहुत गाढ़ हो तब तिस को सादी सिकंजबीह या शरबते बजूरी पिलाना चाहिये और पूदीना का अरक भी तिस को पिलाना चाहिये अगर दूध पतला हो तब भोजन स्निग्ध उस स्त्री को खिलाना चाहिये या दूध रोटी खाये यदि तिस का दूध बहुत होकर फसाद करे तब कम खुराक खाये और जो दूध कम हो लड़के की उससे तृप्ति न हो तब दूध पिलाने वाली दूध भात खाये और दूध के साथ सतावर को खाये यदि दूध पिलाने वाली के स्तनो में कोई फोड़ा फुनसी होजाय तब कदाचित भी तिस का दूध नहीं पिलाना चाहिये फिर लड़के को लिटा करके कदाचित भी दूध नहीं पिलाना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से उसके कानमें रतूवत आजाती है।

फिर लड़के को दो वरसों तक बराबर ही दूध पिलाना चाहिये और जब तक लड़के में खड़े होने की ताकत न हो तबतक उसको पानी न पिलाये और अन्न को भी न खिलाये जब कि उसमें खड़े होने की

ताकत होजाये तव धीरे २ उसकी जल के पीने की और अन्न के खाने की आदत को डालै मगर पहले लड़के को दूध भांत या दूध के साथ रोटी खाने की आदत करै।

जिस काल में बच्चे के दांत निकलने लगते हैं उस काल में पहिले बच्चे के मसूड़ों में या गले में जरासी सोज प्रकट होती है तव गुलबाबूना को पीस करके नीम गरम करके सोज पर मले और मुख में बच्चे के खाज भी होने लगती है इसी सबब से बच्चा अपनी अंगुली को मुख में चवाता है तव शहत में जरासा नमक मिला कर बच्चे के मुख को उससे धोवे अगर पेट के भीतर भी इसका असर जायेगा तव भी कुछ नुकसान नहीं करैगा और एक टुकड़े मुलठी को छील करके बच्चे के हाथ में दे जो उसको चूसा करे दांत निकलने के समय किसी २ बच्चे को दस्त भी आने लगते हैं इसी से बच्चे के मूंह का खराब लुहाव उसके पेटमें जाता है यदि थोड़े से दस्त आवें तव तो दवाई को न करै अगर अधिक आवें तव दवाई को करै गुलाव के फूल और जीरा दोनो को सिरका में पीस करके उसके पेट पर लेप को करै या बाजरे के दानों को सिरकेमें पीस करके पेट पर

लेप करे और जब के दांतों की जड़ें जमती दिखाई देने लगें तब बाबूना का तेल और शहद दोनों को मिला करके दांतों पर मले और जब तक के बच्चे के सब दांत निकल न आवें तबतक बच्चे को अन्न कदाचित भी न खिलावे दांतों का काम आतों से न ले। अन्न को कुचल करके भीतर लंघाना यह काम दांतों का है और दांतों करके कुचले हुए अन्न को आतें जल्दी पचा भी लेती हैं मूर्ख मातायें बिना ही दांतों के निकले बच्चों को अन्न खिलाने लग जाती हैं उसको बच्चे की आंते हज़म नहीं कर सकती हैं इसी से बच्चों को दस्त भी लग जाते हैं और कमजोर भी हो जाता है इस वास्ते जब तक के सब दांत बच्चे के निकल न आवें तब तक कदाचित भी अन्न को न खिलावे।

बच्चों की बीमारीयों की दवाईयों को अब लिखते हैं जबतक बच्चा दूध को पीता हो और उस को किसी तरह की बीमारी हो जाय तब दवाई दूध पिलाने वाली को खिलाई पिलाई जाय जो दवाई का असर दूध के ज़रीये से बच्चे को पहुंचेगा अगर बच्चे को भी दवाई पिलावे तब भी उस दवाई को दूध पिलाने वाली को भी पिलावे जो दवा का असर

दूध द्वारा भी उसको पहुंचे ऐसा करने से फायदा बहुत सा होगा

जो बच्चा कि बहुत सा रोए और सोए नहीं तब काहू का तेल या खशखास का तेल उसकी कनपटी पर लगावे या खरफा के बीज या काहू के बीज और वादीयान इन को पानी में पीस करके उस में थोड़ीसी शक्कर मिला करके पिलावो अगर बच्चे को मुंह आवे तब मीठे अनार के छिलके को खूब महीन करके मूंह में तिसको छिड़के यदि बच्चा सोता सोता रो उठे तब जानना चाहिये जो बदहजमी से खराब स्वप्न को देखता है तिस को खालस शहत चटाना या वादीयान को और पुदीने की पत्ती को जोश करके पिलाना।

अगर बच्चे को दस्त पतला आवे तब जान लेना जो इस का मेहदा कमजोर है तब माजू या अनार के छिलके को पीस कर मेहदे पर लगाना या पुदीना की पत्ती के साथ छोटी लाची के दाने को पीस करके पिलाना या तवाशीर कबूद और छोटी लाची का दाना और मिश्री तीनों को खूब महीन पीस कर माता के दूध के साथ मिला करके चटाना।

अगर बच्चे को कबजी हो जाये तब गुलरो-

गन को कोसा करके पेट पर लगावे अगर बच्चा रोवे और हाथों को पेट पर मारे तब जानलेना कि इस के पेट में दरद है तब पुराने बिनोलों को नीम गरम करके पेट को सेके या गुलरोगन को शीर गरम कर के पेट पर लगावे या नमक को सुरमे की तरह महीन करके पेट पर मले ।

यदि बच्चे को हिचकी बहुत आवे और आप से आप बंद न होती हो तब सौंफ और शकर को पीस करके खिलावे अगर पाखाना के साथ खून आता हो तब चार तुखम को गौ के घृत के साथ चिकना करके रेशाखतमी के लुआब के साथ दूध पिलाने वाली को पिलादें यदि बच्चे के पेट में चुन्ने पैदा हो जायें तब जरदचोब को बाबाडिंग के साथ पानी में पीस कर उस में शकर को मिला करके पिलादे और ककरौंदा की सबज पत्ती को लेकर पानी में पीस कर उपर लगावे ।

अगर सोने में होठ बच्चे के तर हो जायें या दिन बदिन लागरा होता चला जाये तब जानलेना कि इस के पेट में किचवें पैदा हो गये हैं तब खट्टे अनार की जड़ का छिलका लेकर उस को पानी में डाल कर आग पर जोश देकर छान कर पिलावे

और बच्चा रोवे और कान को मले और सिर को कान की तरफ झुकावे तब जानलेना कि इस के कान में दरद है तब हरे पूदने की पत्ती को पीस कर उस का शिरा निकाल कर शीर गरम करके कान में टपकावे या मसूर के दाने को जोश देकर उस का पानी टपकाये अगर कान से रतूवत जारी हो तब फटकड़ी और माजू को महीन पीस कर शहत में मिला करके वत्तीसी वना करके कान में रखे अगर बच्चे की आंख की पलकें फूली रहें तब रसोंत को शीर गरम करके पलको पर लगावें और बाबूने को पानी में जोश देकर उस से आंखों को धोवे यदि बहुत रोने से आंखें सुपेद हो जायें तब मकोह की पत्ती का पानी आंख में लगाये।

अगर बदन पर दाने निकल आवें तब माजू गुलनार और गुलेअरमनी इस को महीन पीस कर फिर इन में गुलेरोगन मिला कर उन पर लगावें अगर दाना निकले और टूट करके उस में सुपेद पानी जारी हो तब उन पर अलसी का तेल लगा कर फिर उस पर मेंहदी की पत्ती को और बबूर की पत्ती को महीन पीस करके छिड़कें।

जब कि बच्चा के पेट में किसी तरह की खराबी

हो जाये तब उस काल में बच्चे को जुलाब का देना फायदा करता है एक या दो मासा अरंडी के तेल देने से जुलाब हो जाता है और नाल काटने के पीछे बच्चे को पाखाना आने के वास्ते जन्मघुटी का देना अच्छा होता है इस से उस के पेट की सफाई हो जाती है और इस से फिर उसको बहुत सी बीमारियें भी नहीं होती है और पेट पर एरंड के तेल की मालिश से भी फायदा होता है।

फिर हररोज शीरगरम जल से बच्चे को स्नान कराया करे मगर जल में समुद्र का नमक जरासा डाल करके तिस को गरम किया करें और पहिले तेल लगा कर पीछे स्नान कराके नरम कपड़ा से पोंछ दिया करे।

फिर बच्चे के कपड़ों को हर वक्त साफ रखना चाहिये अगर ज़रासा भी उसमें कहीं मैला लग जाय तब उसको तुरंत धो देना चाहिये गरमी के दिनों में सूती महीन कपड़ा बच्चे के बदन पर होना चाहिये सरदी के मोसम में फलालैन वगैरह का गरम कपड़ा होना चाहिये जो सरदी लगने न पावे।

अगर बच्चे को माता का दूध छुडाना चाहो तो तब छुडा सकते हो जब कि बच्चे के दो दांत निकल

आवें तब माता के दूध को छुडावे। तब बकरी का या गौ का दूध पिलावे और अरारोट या सागूदाना को दूध में पका करके उसको देवे। और अंदाज का मीठा भी तिसमें डालो अधिक न डालो क्योंकि अधिक मीठा डालने से बच्चे के खून में खराबी पैदा होजाती है और तिस के पेट में चुनचुने वगैरह पैदा होजाते हैं कि फिर बच्चे को अधिक खिलाने से बद-हज़मी वगैरह रोग पैदा होजाते हैं इस वास्ते जब कि बच्चा खाने से या दूध पीने से मुंह को फेरले फिर उसको कदाचित भी न खिलावे।

जिस बच्चे की माता की छाती से दूध कम उतरे उसको सुपेद जीरा और सटी के चावलों को दूध के साथ मिला करके खिलाये गरमी के दिनो में रात्री को साये के नीचे बच्चे को सुलाना चाहिये और एक सुपेद महीन कपड़ा उस पर उढ़ादे और सरदी के दिनोंमें उसको गरम मकान में सुलाये और हर तरह से उसको गरम रखे।

छोटे बच्चों में कसरत करने की ताकत नहीं होती है इस वास्ते उनको सवेरे या तीसरे पहर बाहर खुली हवा मे लेजाना अच्छा होता है जब कि बच्चा चलने फिरने लग जाता है तब उसमे आप से आप ही

कसरत करने की आदत होजाती है।

चेचक की बीमारी से बचने के वास्ते ब
को टीका जरूर लगवाना चाहिये मगर जिस क
में बच्चे को एक तो किसी तरह की बीमारी न
और पौष या माघ का महीना हो तभी टीका
लगवाना अच्छा होता है मगर दो या तीन च
महीने के बच्चे को टीका नहीं लगाना चाहिये कि
छैः महीने से अधिक वाले को ही टीका लगा
अच्छा होता है फिर टीका किसी होशियार डाक्ट
लगाना चाहिये टीका लगाने पर अगर उस
चौबीस घंटे तक पाखाना न आवे तब उसको एरं
का तेल अच्छा होता है फिर गर्भवती स्त्री का
बच्चे को कदाचित भी न पिलावे।

फिर यदि बच्चे को दवाई देने का काम
तब एक महीना तक की उमर वाले बच्चे को ए
मासा से लेकर तीन मासा तक एरंड का तेल
और एक महीना से ऊपर तीन महीना तक च
मासा एरंड का तेल दे इसी हिसाब से आगे जाने

यदि बच्चा अचानक उबकाई ले तब ज
लो कि इसके पेट में किसी किसम को खलल

दें और वदन ठंडा हो तव जान लेना कि इसको वद-हज़मी है उसको अरारोट दूध में पका करके दे और कोई खराव चीज़ खाने न दे और जो जरूरत हो तप एरंड के तेल का एक जुलाव दे दे।

जव कि वच्चे के पाखाने में वहुत सी दुर्गंधी आवे तव जान लेना कि वच्चे को किसी न किसी किसम की वीमारी है उसको जान करके उसका इलाज करना चाहिये फिर वच्चों का पाखाना प्रायः करके पीले ही रंग का होता है अगर वह स्याह या सुपेद या सुनैरी रंग का होजाये तो यह भी वीमारी का चिन्ह है उसकी यह दवाई है जुलापा के वीज एक रती और रेवतचीनी एक रती इन दोनों को महीन पीस कर पानी के साथ एक साल या डेढ साल की उमर के वच्चे को देना अगर वच्चा थोड़ी २ देर के पीछे पाखाना फिरे तव एरंड के तेल का जुलाव दे अगर वच्चा कै करै और उसमें फटा हुआ दूध वाहर आवे तव तिसको चूने का पानी दे तिसके वनाने की यह रीति है किसी पत्थर या चीनी के वरतन मे अढाई सेर साफ पानी पाकर उसमें पांच तोला कलई चूना मिलाकर रखदे फिर उस पानी को नितार कर वोतल में पा रखे और उसमें

से पांच तोला पानी को डेड पाव दूध में मिला व
थोड़ा २ दिया करे ।

कद्दूदाना नाम वाले एक किसम के गोल गो
कीड़े होते हैं वह वच्चे के पेट में पड़ जाते हैं ज
कि वच्चा पाखाना फिरता है तव तिस के पाखा
से बड़ी दुरगन्ध आती है और थोड़ी देर के पी
उस के पाखाना पर कीड़े चलने फिरने लगते
तव वच्चे को कमीला दूध या दधी के साथ दे
चाहिये अगर वच्चे की आंखें दुखें और गरमी
दुखें तव लोद पठानी दो मासा लेकर उसको ज्
कोव करके एक सुपेद कपड़े की पोटली में वांध
फिर मट्टी के एक सकोरे में पानी डालकर कई वा
उस पोटली को बच्चे की आंखों पर लगावे । य
रात्री को सोते समय वच्चे की आंखों पर रसौ
का लेप कर देवें ।

और आंखों के रिड़कने के वास्ते रात्री क
सोते समय वकरी के दूध की मलाई को वच्चे क
आंखों पर वांधै ।

अव स्याने आदमियों के रोगों की दवाईय
को लिखते हैं ।

सिर दरद का इलाज।

यदि गरमी से किसी के सिर में दरद हो तब गुले सुरख कपूर सुफेद संदल धनियां काहू का बीज खुरफा कासनी खयारीन का बीज कद्दू का मगज़ तरबूज का मगज़ पेठे का बीज बीहदाना खसखास का दाना आलूबुखारा नीलोफर गुल-बनफशा इनको पीना और लगाना तथा सूंघना या अफीम को गुले रोगन में या सिरका में पीस करके लगाना या मेंहदी की पत्ती को या फूलों को सिरके में पीस करके सिर पर लगाना।

आधे सिर का दरद।

आधे सिर का दरद दिमाग़ की कमजोरी से होता है कागज़ को जलाकर उसका धूवां नाक से खैंचना या अफीम केसर बबूर का गोंद इन तीनों को मुरगी के अंडे की सुपेदी में मिलाकर फिर उसको कागज पर लगा कर जिस तरफ शिरके दरद हो उधर की कनपटी पर कागज को चिपटा देना जलदी फायदा हो जायगा।

जुकाम का इलाज।

यदि जुकाम बहुत जारी हो और कष्ट होता हो तब कपडे को गरम करके उससे सिर को सेकना

या गरम पानी में कपड़े को तर करके सिर पर रखना या चनों को भुना कर गरम २ को सूंघना यदि जुकाम बंद हो जावे तब शरबत बनफशा को मकोह के अरक में मिला करके पीना या गुले बनफशां तुखमे खतमी असलुल सोस बीहदाना इनका जुशांदा (काथ) या खिसादा बनाकर सुपेद चीनी डाल के पीना ॥३॥

मिरगी का इलाज।

ढाक का बीज पीस कर नाक में टपकाना या इशकपेचा की पत्ती का रस निकाल कर नाक में टपकाना मस्त हाथी का पसीना नाकमें टपकाना॥४॥

जनूनपने का इलाज।

गुले सेवति गुले सुरख गुले नीलोफर गुले बनफशां अस्त खदूस गावजुबान की पत्ती आमला इनका खिसादा बनाकर उसमें मीठा डाल करके पीना ॥५॥

निसीयां का इलाज।

बाजी बातो को बार बार भूल जाने का नाम ही निसीयां है काबली हरड़ छोटी हरड़ आवला दालचीनी असारून पीपल जोज़ बोआ मुबीज कबाब चीनी कंदर मस्तगी इनको खाना ॥६॥

अब नेत्रों की बीमारियों की दवाईयों को लिखते हैं नेत्रों में दरद की दवा भूनी हुई फटकड़ी लोद अंबा हलदी रसौंत अफीम केसर इन सबको घिस कर शीर गरम करके पलकों पर लगाओ या भूनी हुई फटकड़ी अफीम केसर इनको तिमरेहिंदी की पत्तीके रसमें घिस करके शीर गरम करके पलकों पर लगाना या लोद को महीन पीस कर गेहूं का मैदा और गौ का घृत बराबर का लेकर उसमें मिलाकर गोला सा गरम करके उससे आंख को सेकना ॥७॥

नेत्रों की सुरखी का इलाज ।

नीम की पत्ती मकोह की पत्ती इनका रस निकाल कर लगाना या अफीम केसर इनको गुलाब के अरक मे घिस करके लगाओ ॥८॥

जिसकी आंखों से पानी जारी हो कीच निकलता हो ।

पहले फटकरी के पानी में कपड़े को भिगो कर सुका कर फिर काली मिरच और नमक दोनों को बराबर लेकर पीस कर उस कपड़े में रखकर उसकी बत्ती बना कर फिर गौ के घृत को दीये में भर कर उसमें इस बत्ती को जला कर काजल उतार कर आंख में लगाओ ॥९॥

नेत्र की लाली का लेप

भुनी हुई फटकरी १ मासा अफीम ३ रत्ती काला जीरा अधभुना एक कागजी नीबू का रस ऊपर वाली तीनों चीजों को नींबू के रस में खरल करो जब कि सूकने पर आवे तब १ रत्ती केसर उसमें छोड़ कर फिर खरल करो और उसकी गोलियां बना कर सुका कर एक शीशी में रख छोडो जिस के नेत्रों में लाली हो १ गोली को पानी में घिस कर के पलकों के उपर उसका लेप करो यदि लाली की वजह से नेत्रों में करक हो तब अंदर भी लगादो दो तीन बार लगाने से आराम हो जायगा ॥ १० ॥

नेत्रों की कमजोरी का सुरमा।

उमदा सुरमा दो तोला जबरदज ३ मासा अणवेंदे मोती ४ रत्ती सोने का १ पत्र मूंगा ३ मासा इन सब को केले के पानी में आठ रोज तक खरल करो जब कि सुरमा तैयार हो जाय तब किसी शीशी में रख छोड़ो रोज ही दोनो वक्त नेत्रों में लगाओ और सिर पर नारयिल के तेल की मालिश को करो थोड़े दिनों तक ऐसा करने से नेत्रों की कमजोरी जाती रहेगी ॥ ११ ॥

नेत्र के नासूर की दवा।

जिस के नेत्र में नासूर हो जाय वह काले सांप की कंचुकी को लेकर उस को अग्नि में जला कर सात रोज तक बराबर सोते समय उस का नासूर पर लेप करो और सो जावो लेप करने के पीछे फिर हुक्का या पानी को न पीवे नासूर भर जायगा ॥१२॥

नेत्रों की सब बीमारियों का सुरमा।

फटकरी ७ मासा शोराकलमी ३ मासा बड़ी पीपल अढाई मासा सरस की पत्ती छाया में सुकाई हुई अढाई मासा जंगीहरड़ अढाई मासा चासकू अढाई मासा सुरमा असफहानी ७ मासा इन सब को महीन करके खरल में छोड़ कर पांच तोला मीठा और साफ पानी उस मे डाल करके सात रोज तक खरल करो जब कि तैयार हो जाय तब शीशी में पा रखो रात्री को सोते समय दो सलाई नेत्रो मे डाल करके सो जाओ इस के सेवन से नेत्रों की रोशनी तेज होवेगी और नेत्रों को हर एक बीमारी से बचावेगी बालक और जवान तथा बूढा सब को फायदा करेगा और मोतियाबिंद नाखना और जाला वगैरा बीमारियो को भी यह हटाता है ॥

आंख में फूली हो या जाली हो तिसका इलाज

मिश्री को स्त्री के दूध में घिस कर नेत्रों में टपकाना या फटकारी को गुलाब में घिस करके आंख में टपकाना अथवा समुद्र झग और नमक लाहोरी दोनों को बराबर लेकर सुरमें की तरह महीन कर के नेत्रों में लगाना ॥ १४॥

पलक के किनारे पर सोज का

मोम को गरम करके उस पर लगा अथवा किशमिश को फाड कर नीम गरम करके आंख पर रखना या रसोंत का पानी घिस करके लगाना ॥१५॥

आंख के किनारे पर जो कि लाल जालासा हो जाता है

कंदर को गुलाब में घिस करके उस पर लगावे चंवेली की कली और मिश्री दोनों को सुरमें के बराबर महीन करके लगाना ॥१६॥

अब नाक की बीमारियों की दवाईयों को लिखते हैं—

नकसीर फूटने में

फटकरी को पीस कर नाक में डालना या गुलेअरमनी और निरानिसी को पीस कर माथे पर लगाना ॥१७॥

नाक से गन्धी का आना रुकजाना

जिसको कि पहिले सुगंधी या दुर्गंधी आती हो और पीछे किसी सबब से बन्द हो गई हो उसकी दवाई केसर मस्तगी और छडेला इन को बराबर लेकर कूट पीस करके सूंघना जंगली तुरई के बीजों का चूरन बना करके सूंघन ॥१८॥

नाक से दुर्गन्धि आने की दवा।

जिस के नाक से दूसरे को दुर्गन्धि आवे सो इस दवाई को करे खरदल पूदीना की पत्ती ताजा दोनों को पीस कर नाक मे टपकाना या करनफल जटामांसी और पुदीना इन तीनो को लेकर नाक में फूकना या कौड़े कद्दू के पानी की दो बूंदें नाक में डालना ॥१९॥

जिसके नाक से गांठें निकलें।

जिसके नाक से गांठे २ दुर्गन्धि वाली निकले इस रोग का नाम पीनस है वह इस दवा को करें अजमूदा वावड़िंग शिंगरफ अजवाइन खुरासानी यह सब बराबर लेकर पीस कर इसकी नस लेवे या मेंहदी दारचीनी जावत्री और लौंग सबको बराबर

लेकर कूट के महीन करके दूना शहत मिला कर हर रोज नौ मासा बराबर २१ दिनों तक खावे ॥२०॥

नाक का पक जाना या उसमें सोजका होना।

सुपेद कत्था काली हरड़ इन दोनों को पानी में घिस कर शीर गरम लगाना या वंदाल को तिली के तेल में पीस के लगाना ॥२१॥

नाक में घाव का होना।

जिसके नाक मे घाव होजाता है उस घाव से कभी गलीज पानी सा निकलता है और कभी सूखा रेशा निकलता है वह मुरगे की चरवी और मोम और गौ का घृत तीनों की बत्ती बना करके नाक में तिस को रखे या मुरगे की चरवी में गुले रोगन को मिला कर मलम सी बना उसमें बत्ती को तर करके नाक में रखे ॥२२॥

अब कानों की बीमारीयोंके हाल को लिखते हैं।

कान में दरद।

जंजवील गौ का दूध इनको गौके घी में पका करके कान में डालना या अदरक का रस और शहत तिली का तेल लाहौरी निमक इनको बराबर लेकर मिलाके पका कर फिर शीर गरम करके कान मे डालना या कागजी निंबू को लेकर काट कर

उस पर निमक लगा कर गरम करके उसकी दो चार बूंदे कान में डाल लें॥२३॥

जिसके कान में कीड़े पड़ जाय।

नमक को खालस सिरके में मिला करके कान में डालना या शफतालू की पत्ती और पुदीना इनको सिरके में मिलाकर पका करके कान में डालना या प्याज के पानी को कान में टपकाना ॥२४॥

कान में ज़खम का होजाना।

समुद्रफ्ग को महीन पीस कर नीम की पत्ती के पानी में मिला करके कान में डालना या सुहागे को महीन करके कान में डालना और ऊपर से निंबू कागजी के रस की दो चार बूंदे डाल देनी॥२५॥

कान में यदि सन २ की आवाज होती हो।

अगर खुशकी से कान में आवाज होती हो तब बादाम रोगन को कान में डालना अगर रीह से हो तब सरसों का तेल या गुले रोगन या मूली का तेल या गुले रोगन में सिरके को मिला कर डालना ॥२६॥

कान के वहरे हो जाने का इलाज।

मदार का नया निकलता हुआ छोटा पत्ता

लेकर उसको नीम गरम करके कान में निचोड़ना या प्याज का पानी पुदीना तिली का तेल तीनों को बराबर लेकर पका कर कान में डालना ॥२७॥

कान में सोज।

एक मासा आँवला दो मासा ज़रद चौब दोनों को पानी में घिस के लगाना अगर सुपेद रंग हो तब बिसखपड़ी मलना या काली निरबिसी और गेरू को लगाना ॥२८॥

होठों की बीमारियों को दिखाते हैं।

जिसके होठों पर सोज़ होजाय वह बड़ी हरड़ का छिलका आंवला छोटी हरड़ और पान की पत्ती इनको बराबर लेकर मिला कर पीस करके होठों पर मले या सबज माजूको शहतमें घिस करके लगावे या ईसबगोल को सिरके में तर करके लगावै जिसकी लबें पक जाय गौ का घृत लगावे या काली हरड़ को पानी में घिस करके लगावे या रसोंत को पानी में घिस करके लगाओ ॥२६॥

दांतों के रोगों के इलाज।

जिसके दांतों में दरद हो गुलाब का फूल और सिरका इनको मिला कर शीर गरम करके दांतों पर मले या कपूर और नमक दोनों को घिस करके

मले या अकरकरा काली मिरच हींग भूनी हुई न
कचूर नमक लाहौरी सब को बराबर लेकर चूरए
बना कर फिर शहत में मिला कर गोलियां बना क
सुखा के एक गोली को दांत के नीचे रखना। जिस
के दांत हिलते हों वह ६ मासा फटकरी को भूनले
और १ तोला शहत निखालस और छः मासा सिरक
इन सबको पका कर गाढ़ा करके दांतों पर मलन
या सुपारी को जला कर और सुपेद कत्था गोल
मिरच रूमी मस्तगी लाहौरी निमक सबको बराब
लेकर पीस कर दांतो पर मलना ॥२०॥

जिसके दांत आपस में घिसते हों वह मस्तगी
और वायविड़ग को बराबर लेकर दांतों पर मले
या नीलकंठ के पर को एक दो रोज गले में बांधे
और गले के साथ लगावे। जिसके दांत नपड़ जाय
अर्थात् ऊपर नीचे के दांत आपस में मिल जायें
तब खरदल को पानी में पीस कर दांतों पर लगावे
जिसके मसूड़ों में सोज होजाय वह काली मिरच
और फटकरी को भूनकर फिर काली हरड़ लाहौरी
निमक इन सबको पीस कर मिला करके मले।
जिसके मसूड़ों से रुधिर निकले वह सबज़मानी
और खुरफा का बीज दोनों को पानीमें पीस कर

गरारे करे जिसके मसूड़ोंमें घाव होजाय या नसूर होजाय वह माजू फटकरी दोनों को बराबर लेकर सिरके में जोश करके मले या गरारे करे या कंदर और मस्तगी को लगावे ॥३१॥

मुख और जिह्वा के रोगों के इलाज।

जिस का मुंह आवे अगर वह लाल हो तब सूखा धनियां तबाशीर गेहूं का निशास्ता इनको बराबर लेकर उनमें जरासा कपूर मिलाकर महीन पीस कर थोड़ा २ उस पर छीटें। यदि सुपेद रंग का हो तब फटकरी और जिंगार बराबर लेकर पीसकर शहत और पानी में मिला करके उस पर मले। जिस के मुख से दुर्गन्धि आवे वह मस्तगी नागरमोथा कबाबचीनी जायफल जावित्री ऊदे हिंदी इन सबको बराबर लेकर कूट पीसकर पानी डाल करके गोलियां छोटी २ बनाकर उनको छाया में सुखा करके मुख में रखे। जिस की जुबान भारी होजाय वह अकरकरा जंजबील लाहौरी नमक इन सबको बराबर लेकर महीन करके जिह्वा पर मले। जिसकी जिह्वा फूल कर मुखमें न समावे वह शोरे और नमक को कूट कर जुबान पर मले ॥३२॥

अब गले की बीमारियों को दिखाते हैं

जिस की आवाज वंद होजाय वह हरड़ की छाल पिपलामूल लाहौरी नमक इनको वरावर ले कर दूना शहत मिला कर फिर पांच मासा उसमें से रोज खाय। अगर खुशकी से हो तव मक्खनमें मिश्री मिला कर चाटना।

जिसके गले पर सोज हो जाय और दरद हो वह अनारदाना माजू कतीरा इनको वरावर लेकर गोली वना कर चूसे तिमरे हिंदी का तुखम मेंहदी की पत्ती इनको पीस कर नीम गरम करके गले पर मलना। अगर ताल के पानी पीने के साथ किसी के गले में जोक महीन जा करके लग जाय तव वह सिरके में निमक और हीग को मिला करके गरारे करे या ताल की मट्टी की पोटली वांध कर मुख में रख कर के लेट रहना जोक उस में लपट जायेगी या नानखवाह को पानी में जोश करके गरारे करे। अगर मछली का कांटा गले मे अटक जाय तव करनफल को मूंह मे रखे ॥३३॥

खून थूकने में या विना थूकके।

जिस की थूक के साथ खून निकले तव कच्चा मीठा अनार लेकर पानी में पीस कर उस में कच्ची

शकर थोड़ीसी मिला करके पीवे या गुले अरमनी तवाशीर खरवाश्र का किया कतीरा समगे अरवी निशासता गुले मुलतानी और कपूर इन को वीहदाना के लुआव में गोली वना कर मुंह में रखना यदि विना ही थूक के मुख से खून निकले तव चंदन सुपेद चंदन लाल असुळल सोस सूका- धनियां इनको पानी में पीस कर पीना या गरारे करने ॥३४॥

दमे की वीमारी।

जिस को सरदी से हो वह वारासिंहे का सींग लेकर उसके टुकड़े कराकर संपुट वना कर फूंक के फिर थोड़ीसी वारासिंगे की राख और गोल मि- रच लाहौरी निमक इनको भी महीन पीस के उस में मिला करके मूंह में रखे या वड़ी हरड़ को लेकर कूट कर चिलम में भर करके हुक्के की तरह पीना या देसी अजवायन खुरासानी अजवायन काली मिरच अजमूद पीपल.मूल जंजवील वड़ी लाहौरी निमक खारी निमक सवको एक २ तोला लेकर मट्टी के सकोरे में भर कर फिर उस पर ढकना देकर कपड़ मट्टी करके दस सेर गोहा में फूंक कर फिर उस में से उस राख को निकाल कर उस

में तिगुना शहत का मिला करके चाटना अगर खु-
शकी से तब सरदी के दिनों में ६ मासा गुलेजूफा
गुले वनफशां ३ मासे उनाव ६ दाना बीजनिकांसा
हुआ मुनका ८ दाने हंसराज ३ मासा मुलट्ठी छिली
हुई २ मासा इनका काढ़ा बना कर जरासी चीनी
डाल करके सवेरे और संध्या को पीवे और गरमी
के दिनों में इसका शरबत बनाकर पीवे ॥३५॥

जिस की छाती पर दरद हो और भीतर बाहर दरद हो।

वह ऐसे करे वह पीले रंग के मोम को पिघला
करके लगावे और कतीरा निशास्ता मुनका समगे
अरबी इन को गोली बना कर मूंह में रखे ॥३६॥

खफकान की दवाई।

आंवला महताबी गुलकंद आफताबी गुलकंद
सेवती इन को मिला करके खाना या सुपेद जीरे
को मिश्री के साथ पीना या आंवले का मुरब्बा खाना
या रैवंद चीनी को दोनो शानो में मलना ॥३७॥

वेहोशी की दवा।

तेज गन्ध वाले अतर वगैरा को सूंघना और
हाथ पांव को जोर से बांध देना या गावजुबान गु-
लकंद सेवती सेव का मुरब्बा आंवला का मुरब्बा

खाना और काह्न का तेल सीने पर लगाना या खुपे
संदल को सीने पर लगना ॥२८॥

महादा में दरद की दवा।

बंगला पान पुदीना का पत्ती पिपलामूल इ
को जोश करके पीला या जंजवील सुहागा भुन
हुआ काला नमक इनको वरावर लेकर सुहाजने
के दरखत की छाल के रस में छोटी २ गोलियें बना
करके खाना। अगर महदा पर सोज हो तब संभाल
की पत्ती अमरवेल दरखत रूसीअस गन्धा गुले
अरमनी इनको पानी में पीस कर इन में सिरके क
मिला कर नीम गरम मलना ॥२९॥

कै कराने की दवा।

जिसको कै करानी हो उसको सिकंजबी और
नमक और तुरब का पानी इनको गरम पानी मे
मिला करके देना कै हो जावेगी और खराब मवाद
निकस जायगा। जिसकी वलगमी मिजाज़ हो वह
वावड़िंग जंजवील काली मिरच इनको शहत में
मिला करके चाटे या हलदी को जला कर पानी में
बुझाकर उस के पानी के पीवे या खट्टे अनार का
शरबत और नींबू का शरबत पीवे ॥३०॥

हैजे की दवा।

कपूर के अरक की दो बूंद पतासे पर डाल करके दो २ घंटे के पीछे पीवे या मदार की कली १ तोला गोल मिरच ६ मासा सोंठ १ तोला अजवायन १ तोला इनको महीन पीसकर छोटी गोलियां बनाकर दो २ घंटे के पीछे एक २ गोली को देवे अच्छा होजायगा ॥४१॥

डकार बार बार आने की दवा।

हरड़ का छिलका आंवला मस्तगी काला जीरा नानखवाह छोटी इलायची और बड़ीइलायची का दाना सोंठ काली मिरच यह सब बराबर लेकर कूट कर इनके बराबर मिश्री मिलाकर खाये आराम होजायगा ॥४२॥

बात गोला की दवा।

सबज भंगरा और खानी नमक इनको बराबर लेकर गोली बना करके खाये या भुनाहुआ सुहागा भुनी हुई हींग दोनो को बराबर लेकर सुहांजन दे पोस्त दी रस नाल गोली बनाकर खाये और उसीको जरा सा गरम करके मलै॥४३॥

करो या वहरोजा का सत ७ मासा तवाशीर ७ मासा फटकरी भूनी हुई ३ मासा संग जराहत ७ मासा छोटी इलायची का दाना ७ मासा इन सव दवाईयों को कूट छान करके तैयार करे फिर ६ मासा काहू का वीज ६ मासा खयारीन इनको कूट कर इनमें ठंडा पानी मिला कर आध पाव भर शीरा निकाल कर फिर इसमें शरबत नीलोफर या शरवत वन फशा को मिला कर इसके साथ उस कूटे हुए से १ तोला खावो ॥४८॥

आतशक की दवा।

आतशक की बीमारी का नाम ही गरमी की बीमारी है यह दो तरह का होता है एक नर कहाता है दूसरा मादी कहा जाता है फिर इसके तीन दरजे होते हैं। पहिले दरजे में तो इन्द्री पर ही घाव होता है। और दूसरे दरजे में सब खून में पहुंच कर जैरीला कर देती है और सब शरीर पर अपना पूरा २ कवजा जमा लेती है। तीसरे दरजे में जाकर हड्डियों को गलाना शुरू कर देती है और सब शरीर के अवयवों को जला कर विगाड़ देती है।

इसी रोग वाली स्त्री के साथ भोग करने से

यह वीमारी मरद को भी होजाती है और इसी रोग
वाले मरद से यह वीमारी स्त्री को भी होजाती है
प्रथम नर आतशक के चिन्हो को दिखाते हैं जिस
काल में यह वीमारी किसी मरद को होती है तव
पहले जखम उसकी इन्द्री की सुपारी पर होता है
और जखम से मवाद निकल कर इधर उधर लगता
है तव और भी इरद गिरद उसके वहुत से ज़खम
होजाते हैं आतशक का जहर जव कि वदनमें दाखल
होता है उसके एक ही दिन पीछे जिस जगह पर
जखम होने को होता है वहां पर सुरखी प्रगट हो
जाती है और हलकी सी खाज भी होने लग जाती
है फिर उसी जगह पर एक फुनसी प्रगट होजाती
है फिर एक दिन पीछे वह फुंनसी छाला सा वन
जाती है और उस छाले का मुंह जरा सा काला सा
होता है और तिसके गिरदे के घेरे का रंग लाल होता
है फिर चौवीस घंटा में उसके अंदर का मवाद गाढा
सा होजाता है और ये ही फोड़ा फिर दुंलव की
सूरत वाला वन जाता है फिर एक हफता के पीछे
उसका पड़दा भी उतर जाता है और उस पर उरद
के दानेके वरावर एक नंगा ज़खम दिखाई देने लग
जाता है जैसे कोई अग्नि की चिनगारी रख दे ऐसा

उसको दुख होता है नींद तक भी उसको नहीं आती है।

अब मादी आतशक के चिन्हों को दिखाते हैं इसमें हलका और छोटा सा जखम होता है इस जखम से बीमार को दुख नहीं होता है फिर बाज़े समय यह ज़खम इन्द्रि पर भी नहीं होता है किन्तु शरीर के किसी अवयव पर ही होता है और मादी आतशक का ज़हर उसी काल में प्रगट होजाता है मगर बीमार को कुछ भी मालूम नहीं होता है इस तरह की बीमारी में डर वाली बात यह है जो बहुत जलदी उसका खून खराब होजाता है और शरीर के चमड़े पर कई जगह में ज़खम प्रगट होजाते हैं नर आतशक में जो ज़खम इन्द्रि पर होता है वह मार देने वाला ही होता है और धीरे २ इन्द्री को गलाना शुरु कर देता है इसी से इन्द्री सब गल कर गिर जाती है मगर मादी आतशक में उसके गलने का डर तो नहीं होता है तब भी भीतर की ताकत को नुकसान पहुंचाता है बदन को गलाने लग जाता है और थोड़े ही दिनों में दूसरे दरजे पर पहुंच जाता है।

अब दवाई को लिखते हैं— रसकपूर १ तोला

सरद चीनी १ तोला गौ का दूध ६ तोला सब को खरल में डाल करके खूब खरल करो जबकि सब दूध सूक जाय तब उड़द के दाना के बराबर गोलियां बना लेवो और सवेरे निरंने मुह एक गोली उसबा के अरक के साथ खावो यदि मरज़ अधिक बढ़ी हो तब एक गोली सवेरे और १ गोली सन्ध्या को खावो और खूब घी डाल करके रोटी को खाली खावो और कोई चीज भी मत खावो सात रोज में आराम हो जावेगा ॥ ४६ ॥

दूसरा आतशक का नुसखा

डेढ तोला इन्द्रायन की जड़ डेढ तोला तूतीआ हिंदी डेढ तोला काला सुहागा गुलाबी कत्था डेढ तोला इन सब दवाईयों को खरल मे डाल कर एक दिन उशबा के अरक में खरल करो फिर एक दिन नीम की पत्ती के रस मे खरल करो फिर चने के बराबर गोलियों को बना लेवो और साफ पानी के साथ गोली सवेरे और एक सन्ध्या को खावो ऊपर से दूध भात (खीर) खावो। अथवा बालछड़ १ तोला गुग्गल १ तोला बकायन का बीज १ तोला छोटी इलायची १ तोला शिंगरफ १

तोला गुलाबी कत्था १ तोला तूतीआ हिंदी १ तोला इन सब दवाईयों को दो रोज तक प्याज के अरक में खरल करके फिर चने के बराबर गोलियां बनाले वह सवेरे निरने मुंह एक गोली बकरी के दूध के साथ खाओ फिर दही मीठे के साथ चावलों को खाओ ॥५०॥

धातू क्षीण की दवा

गोखरु बड़ा मोचरस तालमखाना लकमगसूल ढाक का गोंद इन सबको बराबर लेकर कूट पीस कर दूनी मिश्री को मिलाकर १ तोला सवेरे खाकर ऊपर से आद पाव गौ का दूध पी लेना या जामन की पाव भर गुठालियाँ लेकर सुका कर कूट कर उन का छिलका उतार कर बीच के मगज का मैदा बना कर दो तोला वह एक तोला उस में सुपेद चीनी डाल निरने मुंह खाकर ऊपर से पाव भर गौ का कच्चा दूध पी लेना ॥५१॥

खूनी बवासीर की दवा

काला सुरमा १ तोला पुराना गुड़ ६ तोला दोनों को जंगली बेर के बराबर गोली बना कर २१ गोली रोज खाये या रसोत ६ मासा सूखा धनियां दो तोला चूरण बना करके खाय अथवा रसौत १ तोला

गौका मक्खन चार तोला में मिला करके खाये भिंडी तोरी की जड़ को सुका कर छील कर गूदे का मैदा बनाकर दो तोला चीनी सुपेद को तीन या चार तोला उस मैदे में मिला कर फांक ऊपर से डेढ पाव गौका दूध पीलेवे ॥५२॥

बादी बवासीर की दवाई ।

नीमके बीज का मगज और बकाइन के बीज इनको पीस कर मकोह की पत्ती के रस मे मिलाकर मसों पर लगाना य मीठे कद्दू का मगज और आलु बुखारा का बीज इन दोनों को पानी में पीस करके लगाना या शोरजाती की मछली के सिर को लेकर आग पर उसको सुकाकर उसका चूरन बनाकर मसों पर छीटना इससे मसे सूख करके गिरजायेंगे अथवा ज़रद चोबा मुरदासंग हर एक तीन २ तोला गुले रोगन दो तोला पीला मोम १ तोला इनमें पानी को डाल करके पकाना जब की पानी न रहे और मल मसी बनजाये तब मसो पर लगाना ॥५३॥

जिसकी गुदा का मकद बाहर निकलता हो

सबज माजू अनार के दरखत की छाल इन दोनों को पानी मे जोश देकर उस पानी से शौच करना या नई ईटका गरम करके इससे दबाना ॥५४

फील पांव का इलाज।

गुले खैरो को पीस मुरगे के अंडे की सुपेदी में मिला करके लगाना या बाबूना काली मिरच नरकचूर जमूदाकाय का वीज चोवचीनी वायविडंग इन को वरावर लेकर पीसकर शहत उनमें मिलाकर शीर गरम करके लगाना ॥५५॥

नारवा की दवाई।

सुहागा भूनाहुआ काला गुड़ दोनों को मिला ६ मासा रोज खाना या सवरको खाना और लगाना जव की निकलने लगे तव अगर चितावर इनको पीसकर गौ के घृत में लगाया करो धीरे २ वह सव निकल जायेगा मगर ख्याल रखो टूटने न पावे ज्यों २ वह निकलता जाये एक छोटी और पतलीसी लकड़ीके उपर उसको बुद्धिमानीसे लपेटते जाओ॥५६

हाथ या पांव पर दानों के पैदा होजाने की दवा।

मेंहदी जरदचोव अदस भूजाहुआ इनको वरावर लेकर पानी मे पीस करके लगाना या सिधूर मुरदासंग फटकरी सुपेद कत्था लाहौरी नमक इन को वरावर लेकर सिरके में या नीबू के अरक में

खरल करके सरसों का तेल और शहत उनमें मिला करके लगाना ॥५७॥

पांव की एडी फटने में।

विलायती सावन को पानी में घिस करके उस में भरो या तुखम वैद अंजीर के मगज को पीसकर के लगाना ॥५८॥

बालचर की दवा।

जिसके बाल झड़गये हों वह मुरगी के अण्डे की जरदी का तेल निकाल करके सात रोज तक लगाने से फिर सब बाल जम आवेंगे या काला दाना पीस करके लगावे या हाथी दांत और रसौंत दोनो को बराबर लेकर पीस के लगावे ॥५६॥

नखों के रोग की दवा।

जिसका नख फटजाये तब जरदचोब और बड़ी हरड़ दोनों को लोहे दे वर्तन विच घिस करके नख पर लगाना जिसके नख के तले सोज होजाये या गिरजाय तब उस पर ईसबगोल को बांधे या कच्चा मोम पीला बाबून को तेल में पकाकर फिर उसमें दो तोला सबज मेंहदी की पत्ती का रस और दो तोला पालक की पत्ती का रस और लट जीरा,

की पत्ती का दो तोला रस निकाल उस तेल में पकाना जब की पानी जल जाय मलमसी बनजाय तब उस मलम को लगाना ॥६०॥

दाद की दवा।

अमलतास की ताजी पत्ती को लेकर दिन में चार पांच वार मलना या संदल और सुहागे को नींबू के अरक में घिस करके लगाना या पालक का बीज और जुई इनको निंबूके रसमें घिस करके लगाना या पनबाड़ के बीज काले तिल और सरसों इन तीनो को पीस करके लगाना ॥६१॥

अग्निसे या घी तेलसे या गरम पानी से जले हुए की दवा।

जिस जगह से जल जाय उस जगह पर तुरंत ही मुरर्ग के अण्डे की खुपेदी लगा देनी या अलसी के तेल में गोके दूध को मिला करके लगावे या सरसों को जला कर पानी में पीस करके लगावे या घी कुवार के गूदे को लगावे या जीते चूने को अलसी के तेल में मिला करके लगावे ॥६२॥

पेलड में दरद या सोज की दवा।

कतीरा जों का आटा गुले रोगन और ईसब-

गोल का छुआव इनको मिला करके लगाना या जीत की पत्ती को जोश दे कर के बांधे।

अगर पेलड़ फट जाय तब सरसों को पानी में पीस कर नीम गरम करके लगावे या जंजबील और एरंड की जड़ को पीस करके लगाना ॥६३॥

पेलड़ पर या लिंग पर खाज या दाने निकलने की दवा।

मुरदासंग को गोके घृत में नीम के डंडे से घिस कर लगाना या काली हरड़ और रसौंत को पीस कर उसमें थोड़ा सा गुले रोगन मिला करके लगाना ॥६४॥

फोड़े फुनसी में

जब कि खून खराब होजाता है तब बदन पर फुंनसियें या जहां तहां छोटे २ फोड़े निकलने लगते हैं या घरफड(शीतपित्तज)पडने लगते हैं खून की सफाई के वास्ते ६ मासा पित्तपापड़ा ८ दाने काली मिरच के तीन मासा गेरु इनको रगड़ के आध पाव पानी डाल कर छान के फिर उसमें तीन तोला शहत डाल करके सात रोज तक पीवे खटाई अचार और बादी चीज न खाय अच्छा हो जायगा या नींम

की कोमल-२ एक छटांक पत्ती लेकर उसमें १ तोला गोल मिरच मिला कर महीन पीस कर छोटी २ गोलियें बना कर दो गोली सवेरे पानी के साथ खा जाय और संध्या को भी दो गोली पानी के साथ सात रोज तक बराबर ही खाय खटाई न खाय घृत दूध खूब खाय खून साफ हो जायगा ॥६५॥

स्त्रियों के रोगों की दवा।

जिस स्त्री के स्तनों पर सोज होजाय वह जोंके लगवाय या नीम की पत्ती और बकायन की पत्ती से सेंकना और बांधना या गुलेबांसे को पत्ती और मकोह की पत्ती से सेके और उसी को बांधे या काहू को सिरका मे पीस कर लगाय। यदि दूध कम हो तब सतावर को गोके दूध में पीस कर उसमें सुपेद शकर को मिला करके खाय या सुपेद जीरा को साटी के चावलों के साथ पका कर दूध के साथ उनको खाय।

जिस स्त्री को प्रसूत बाई होजाय वह लुबान का सत एक मासा कसतूरी एक रत्ती दोनों को मिला कर सात रोज तक खाय या नाग केसर एक मासा गोल-मिरच दो मासा दोनों महीन पीस कर अदरक के शीरा में गोली बना करके खाय।

ऋतु वाली स्त्री के साथ अर्थात् जिस स्त्री को ऋतु आई हो उसके साथ कदाचित भी पुरुष भोग न करे क्यों कि उसके साथ भोग करने से एक तो हैज की गरमी से सुजाख हो जाता है दूसरा यदि हैज की भाप मसाना को लग जाती है तब हमेशह के लिये पुरुष नामरद होजाता है। फिर गर्भवती स्त्री के साथ भी कदाचिद भोग न करे क्योंकि गर्भवती के साथ भोग करने से नेत्रों में बीमारी पैदा होजाती है और किसम की बीमारीयों के पैदा होने का डर है।

फिर जब कि स्त्री की मरज़ी न हो तब भी उस के साथ भोग न करे क्योंकि इससे संतति खराब पैदा होती है और मरदको धातुक्षीण की भी बीमारी पैदा होजाती है। बेवा के साथ भी भोग को न करे क्योंकि वह अपनी रुकी हुई गरमी को निकासेगी उस मरद को सुजाख और जिगर की कमजोरी और धड़का होने का डर होता है। परकी स्त्री के साथ भी भोग न करे लोगों के डर मे दिमाग को नुकसान पहुंचता है धातु क्षीण की बीमारी होजाती है वृद्धा स्त्री के साथ भोग करने से कमजोरी वगैरह रोग पैदा होते हैं फिर भोजन करने से उत्तर तुरंत न करे रगों को नुकसान पहुंचता है कमसन के साथ करने से शिर

दरद जुकाम सुजाख होने का डर होता है। फि
स्त्री को उलट पुलट करके भोग करने से स्त्री मर
दोनों को अनेक बीमारियें पैदा होजाती हैं स्त्री च
कमल विगड़ जाता है फिर संतति का होना रु
जाता है और जो संतति हो भी जाय तो कमजो
पैदा होती है।

अबुउलसेना हकीम फरमाते हैं कि दिन
भोग करने से सुजाक या धातुक्षीण और वीर्य
जल जाता है आंखों में कमजोरी होजाती है उम
भी उसकी कम होजाती है बाल भी जलदी सुफे
होजाते हैं और नित्य इकट्ठे सोने से भी अनेक तर
की बीमारियां पैदा होजाती हैं इस लिये नि
इकट्ठा कभी न सोवे ॥६६॥

पहले हम इस ग्रन्थ में उन औषधियों क
लिखते हैं जोकि तीर का निशाना हैं अर्थात् जिन
सेवन से तुरंत ही पुरुष की बीमारी दूर होजाती
और दुःख से छूट करके सुखी होजाता है औ
फिर जलदी रोग ग्रस्त भी नहीं होता है॥

अमृतला।

इसके सेवन से अनेक रोग दूर होजाते
औषधी यह एक ही दी जाती है केवल अनुपा

को ही वदलना पड़ता है अब औषधि के वनाने की रीति को लिखते हैं—६ मासा प्याज का सत, १ तोला पुदीना का सत, १ तोला मुशक कपूर, ३ माशा निम्बू का सत, १ तोला सौंफ का सत, १ तोला इलायची का सत, १ तोला अजवायन का सत, ४ माशा अदरक का मत, ३ माशा दालचीनी का सत, ४ माशा वादाम रोगन, ३ माशा सरदचीनी का सत, ६ माशा केसर का सत, ६ माशा संदल का सत, ६ माशा पान का सत, ६ माशा नारङ्गी का सत, ५ माशा जायफल का सत, इन सव औषधियों को एक साफ और पक्की शीशी में डाल देवो फिर उस शीशी के मुख को एक काक से वंद करके रख देवो और उस शीशी को १५ मिणट तक धूप में रखने से एक अरक सा वन जायगा फिर इसको किसी अच्छी जगह में रखदेवो जिसको तपेदिक की वीमारी हो वह १ तोला कुज्जे की मिश्री लेकर उसपर ३ बूंद उस शीशी मे पाकर खाजाए और पाव भर या डेडपाव वकरी का ताजा दूध उसके साथ पान करे दस या पन्द्रह दिन सेवन करने से तपेदिक उसका जाता रहेगा।१।

जिसकी धातु क्षीण होती हो या पतली हो

गई हो या रात्री को स्वप्न में वार २ गिरजाती हो तव एक तोला सिंगाड़ा को महीन करके उस में तीन बूंद शीशी में छोड़ साथ डेढपाव गो के दूध से खाये ११ दिनों तक वरावर सेवन करने से अच्छा हो जायेगा खटाई और तेल तथा लाल मिरच और वादी चीज को न खाये ॥२॥

ऊपर पुराने तपेदिक वाले के लिये कहा है यदि तपेदिक नया हो तव दो तोला गिलो के अरक में दो रत्ती अवकर (अभ्रक) काले की राखको पाकर उसी में फिर २ बूंद इसकी छोड कर सात रोज तक वरावर ही सवेरे खिलावें और इसी अमृतला की तीन बूंद की नित्य ही छाती पर मालिश भी किया करें और घृत दूध भी खाया करे खटाई दही और वादी चीज को न खाये ॥३॥

जिसको तिजरा तप आता हो तिजरा उसको कहते हैं जो कि एक रोज वीच मे छोड करके आता है। और जिसको चौथईया बुखार आता हो चोथईया उसको कहते हैं जो कि दो रोज वीच में छोड़ करके आता है या जिसको रोज ही ताप चढ़ता हो उसको १ मासा गिलो को महीन पीस कर उस में ३ बूंद इसकी छोड़कर गौ के दूध के साथ खिलावे ॥४॥

जिसको हरवक्त ही बुखार बना रहता हो या पुराना हो गया हो उसको एक रत्ती कोनैन में तीन बूंद छोड करके गौ के दूध के साथ खिलावे सातरोज तक खाने से अच्छा हो जायेगा ॥५॥

जिसको नामर्दी की कसर हो या सुस्ती हो उसका डेड मासा समुदरमोख डेढ मासा तजसक डेडमासा बादामकी गिरी डेड मासा छोटी इलायची का दाना यह सब चारों चीजें छः मासा हुई इनको कूटकर चूरण बनाकर उसमे तीन बूद अमृतलता को छोड़कर ११ दिन तक बराबर ही सवेरे गौ के दूध के साथ पीवे खट्टा दधी को न खावे फायदा हो जायेगा ॥६॥

जिसके पेट में दरद हो या बदहजमी हो खट्टे डकार आते हो के होती हो जी मचलता हा इन में से कोई भी हो तब एक मोटे बतासे पर या १ तोला मिश्री पर दो बूद डाल करके खाजाये तुरंत आराम हो जायेगा ॥७॥

किसी तरह का भी जिसके सिरमें दरद हो वह [illegible] रपर डाल करके मले

[illegible] बूंद को

दांतों पर मले जिसके दांत की दाढ़ में दरद हो वह छोटे से एक रूई के फाहे पर एक बूंद इसकी पाकर उस फाहे को दाढ़ में रखे और धीरे २ थूके अच्छा हो जायेगा और फिर २१ मासा फटकडी को पीस कर उसमें तीन बूंद इसकी डालकर दांतों पर नित्य मलने से सफा भी होवेंगे और मजबूत भी होवेंगे ॥९॥

यदि किसी के शरीर में चोट लग जायेतो चार या पांच बूंद इसकी लेकर मले ऊपर से उसके गरम रोटी को बांध दें तुरंत हो अच्छा हो जायेगा ॥१०॥

जिसको हैजा होजाय उसको तीन बूंद मोटे बतासा में छोड़ करके खिला देना उपर से बादीयान का अरक पिलाना या चार बूंद १ तोला मिश्री पर डाल करके खिलाये और ऊपर से गुलाब का अरक या बादीयान का अरक या पूदीने का अरक पिलावे जब २ कै हो या दस्त आवे तब २ इसको ब ावर ही देते जावो रोटी न खावे यदि बीमार इसको मिश्री पर न खावे तब अरक में डाल करके पिलादे अच्छा हो जायगा फिर जलदी पचने वाली चीजों को खिलावो ॥११॥

जिसका दिमाग़ कमजोर हो या बदन में खून

कम होगया हो वह रोज ही रात्री को ३ बूंद मलाई में लपेट करके खाजाये और ऊपर से शीरगरम गौ के दूध को पान करे ॥१२॥

जिसको सुजाख की बीमारी हो वह चारबूंद मिश्री १ तोला मे पाकरके सवेरे खाये और ऊपर से गौ के कच्चे दूध की लसी को पीवे और रात्री को ६ मासा या १ तोला सिंगाड़े के आटे पर ३ बूंद पा करके खाये अच्छा हो जायेगा ॥१३॥

और शराब अफीम वगैरह नशों को छोड़ने के लिये इसकी चारबूंद मलाई में पाकरके सवेरे और संध्या को खाजाये और ऊपर से आधसेर गौ के दूध मे १ छटांक गौ का घृत डालकर उसमें १ छटांक मिश्री डालकर शीरगरम पीजावे थोड़े दिनों तक ऐसा करनेसे नशा छूट जायेगा और शरीर भी आरोग्य हो जायेगा ॥१४॥

जिसके वदन में खारश हो वह पाव भर मीठे दधी मे २० बूंद इसकी डाल करके वदन पर मले फिर नहाले खारश जाती रहेगी ॥१५॥

जिसको हंजीरे निकली हो वह तीनबूंद बतासा पर डाल करके खाये और ऊपरसे अरक वादीयान

को पीवे और हंजीरों वाली जगह पर भी दिन में चारवार इसको लगाये अच्छा हो जायेगा ॥१६॥

जिसको जुकाम हो जाये वह दो बूंद नसवारले ॥१७॥

जिसको नमूनीयां हो तो वह १ मासा खांड में ४ बूंद डाल करके खाये और ऊपर से चार तोला शरवत शहतूत का पीवे और एक हिस्सा इसका दो हिस्से कड़वे तेल में मिलाकर वदन पर मालश करे ॥१८॥

जिसको तर खांसी हो वह रात्री को ३ मासा वतासा पर डालकर खाकर सोजाये सवेरे शरवत शहतूत चार तोला में दो तोला पानी मिलाकर पिलावे ॥१९॥

जिसको खुशक खांसी हो वह ६ मासा मुलठी का चूर्ण बनाकर चार बूंद इसकी उसमें डाल करके खाये और सवेरे शर्वत शहतूत का पीवे ॥२०॥

जिसको गंठीया हो वह चारबूंद इसकी बतासे पर डाल करके दोनो वक्त खाये और १ तोला बदाम रोगन लेकर छै बूंद उसमें छोडकर तिसको मालिश भी करे ॥२१॥

जिसके जोड़में दरद हो वह उस दरद की जग

पर उसकी मालिश को करे और तीन बूंद इसकी सुपेद चीनीपर छोड करके सवेरे और संध्या को खाये और ऊपर से १ तोला हरड़ में पानी डालकर जुशांदा बनाकरके पीवे ॥२२॥

अगर किसी को बातगोला हो तब एक तोला ईसबगोल का चूरन करके उसमें तीन बूंद इसकी डाल करके पीवे ॥२३॥

अगर किसीको मिरगी हो तब एक मासा नसवार में चार बूंद इसकी छोड कर बार २ नाक में नसवारले और बतासामें तीनबूंद छोडकर खाये ॥२४॥

जिसको नामरदी हो वह १ मासा मलाई में ३ बूंद पाकर खाये और ऊपर से गौ का आधसेर नीम गरम दूध पीवे ॥२५॥

जिसको बिच्छू काटै अर्थात् जिस जगह में डंग मारे उस जगह मे इसकी चार या तीन बूंद एक मासा कड़वे तैल में छोड तिसको गरम करके लगाये या इसीकी केवल तीनचार बूंदो को लगाये मगर दो घंटा के पीछे लगाने से आराम हो जायेगा पागल कुत्ते के काटने पर भी इसी रीति से लगाये ॥२६॥

जिसको तापतिल्ली हो वह रात्री को दो मासा नौशादर में तीन बूंद इसकी छोड करके खाये और

ऊपर से शरबत बनखशा तीन तोला पीवे आठ या दस रोज करने से फायदा होवेगा ॥२७॥

जिसको कमजोरी हो वह तीन बूंद इसकी मलाई में डाल करके खाये और उपर से बकरी का दूध पीवे ॥२८॥

जिसके चेहरे पर जरदी हो जाये या हाथ पांव फूलजायें या दिल धड़कता हो तब गौ के दूध की तीन तोला मलाई में तीन बूंद लपेट कर सवेरे और संध्या को खाये और ऊपर बकरी का ताजा दूध पीवे बकरी का न मिले तब गौ का ताजा दूध पीवे ॥२९॥

तंदुरस्ती को कायम रखने के वास्ते या ताकत के वास्ते रोज ही रात्री को दो बूंद मलाई मे लपेट कर खाकर उपर से गौ का दूध पीया करो ॥३०॥

जिसका जे़न कुंद हो वह ३ बूंद गौके दूध की लस्सी पर डाल करके पीआ करे जे़न तेज होजायगा। ३१॥

जिसको ताऊन की गिलटी निकल आवे उस गिलटी को उसतरे से पछ करके उस पर इसी को बार २ लगावे और उसको खिलावे भी ॥३२॥

जिसको दमा की बीमारी हो वह तीन बूंद

इसको वतासा में डाल करके खाय और ऊपर से अरक वादीआंन को पीवे ॥३३॥

जिसको ववासीर हो वह इसकी २ बूंद वतासा पर डाल करके खाय और ज़खम पर भी लगाये या २ तोला रसौंत को लेकर तीन पाव पानी में औटा कर तिसको छान कर एक वोतल में भर रखे सवेरे वोतल से तीन तोला पानी को लेकर उसमें तीन बूंद इसकी छोड़ कर पीजावे और इसी को ववासीर के तुकमों पर लगावो यदि यह लगे तव मसों पर मक्खन को लगाना एक महीना तक करनेसे फायदा हो जायगा ॥३४॥

जिसका हाथ वगैरह कोई अंग आग से जल जाय तव उस जगह में इसको चार चार घंटा के पीछे लगाने से फायदा हो जावेगा ॥३५॥

जिसको लकवा मार जाय उसको ४० दिन के अंदर इलाज करना चाहिये वरना फिर मुशकिल से जाता है जिस को लकवा मार जाय इस अमृतलता को लेकर उसके मुख पर और गरदन पर इसकी खूब मालश करे और दो बूंद इसकी सवेरे और संध्या को शहत में डाल करके खिलादे वहुत फायदा हो जायेगा ॥३६॥

जिसका सिर घूमता हो वह इसकी माथे पर मालिश करे या नाक में नसवार की तरह चढ़ावे और दो बूंद इसको सवेरे और शाम को पानी में डाल करके पीवै ॥३७॥

जिसके कान में खुजली हो वह ६ बूंद वादाम रोगन का और एक बूंद इसकी मिला करके कान मे डाले ॥३८॥

जिसकी जुवान पर सोज़श हो वह इसकी मालिश करे ॥३९॥

जिसको गले पड़ जायें वह इसको अंगुली पर लगा-कर गले के भीतर मलदे और तीन बूंद पानी में डाल करके खा भी जाये और गले के वाहर भी मले ॥४०॥

जिसका गला वैठ जाय इसकी गले के ऊपर खूब मालिश करे या आँवला के पानी में मिला कर मालिशकरे और एक या दो बूंद इसबगोलके लुआव के साथ पीवे ॥४१॥

जिस स्त्री या बच्चे के वालों के पहरने से कान पक जाय तव इसको फाया के साथ लगा कर कान पर लगाने से आराम हो जायगा यदि कान के भीतर

दरद हो तब एक बूंद इसकी लेकर चार बूंद गरम तिली के तेल में मिला कर कान में डाले ॥४२॥

जिसके दिमाग में चोट लग जाय उसको चार रत्ती सिलाजीत को दूध में घोल कर दो बूंद इसकी उसमें डाल कर पिला देवे दो चार दिनों तक पीने से फायदा होवेगा ॥४३॥

जिसको मिरगी की बीमारी हो वह इसकी तीन बूंद गुलाब के अरक में मिला करके पीआ करे और सिर पर भी इसकी दोनों वक्त मालिश किया करे और जिस वक्त दौरा हो दो बूंद इसकी दोनों नथों मे डाल दिया करे यदि न डाल सके तब इसकी नसवार लिया करे आराम होजायगा॥४४॥

जिसको भस डकार आते हों वह भोजन से उत्तर एक तोला अदरक के रसमें तीन बूंद को दोनों वक्त खाय ॥४५॥

जिसको बार २ हिचकी आती हो वह ३ बूंद इसकी और दो मासा मुलट्ठी और दो तोला शरबत उनाब तीनों को मिला करके चाट जाय दो २ घटा के पीछे चाटने से अच्छा हो जायगा ॥४६॥ ॥६७॥

सतों के निकालने की रीति।

जिस चीज़ का सत निकालना चाहो उसको

पहले दरड़ लेवो फिर पानी में घोल कर आठ पहर तक तिस को रख छोडो फिर मल करके पानी को नितार लेवो फिर तिस पानी को आग पर इतना पकावो जो उसमें आधा पानी सूख जाय फिर दूसरे दिन उस पानी को नितार कर अग्नि पर रख कर सुखावो जो कि सूख कर बाकी रह जायगा वही सत होगा इसी रीति से सब तरह के सत बन जाते हैं ॥६८॥

जौहर निकालने की रीति ।

जिस चीज का जौहर निकालना हो उस चीज को कुचल करके जौकोब करके एक कोरे प्याले में बिछा देवो फिर तिस के ऊपर उतना ही दूसरा प्याला कोरा ऊँधा धर देवो और दोनों प्यालों के किनारों पर चिकनी मट्टी लगा कर मजबूत कर देवो फिर चूल्हे पर धर कर तिस के नीचे दीये की बत्ती की तरह मंद २ अग्नि को जलाओ और ऊपर वाले प्याले पर पानी से भिगो करके कपड़े को लपेट देवो जब २ कपड़ा गरम होजाय तब उस पर जरा २ पानी को डाल कर तिस को भिगोते रहो फिर ठंडा करके पीछे से खोलो ऊपर वाले प्याले में जौहर सब लगा

होवेगा उसको चाकूसे खुरच करके उतार कर फिर अपने काम में लावो ॥६६॥

अतिप्रभूत रस का बनाना।

१ तोला पारा १ तोला संखिआ सुपेद १ तोला हरताल वरकी १ तोला आवलासारगन्ध २ तोला त्रिकटु २ तोला त्रिफला १ तोला सुहागा १ तोला जमाल गोटा १ तोला लौंग १ तोला पीपल १ तोला जवाखार धातूओं को शोधना और जमालगोटा को भी शोध लेना फिर पहले पारा और हड़ताल को मिला कर खरल करना फिर तिस में गन्धक और संखिआ को मिला कर खरल करना फिर सुहागा को और पीपल को मिलाना मगर सुहागा को भी शोध लेना फिर त्रिकुटा को मिला कर पश्चात् वाकी की सब औषधियों को मिला कर भंगरा के रस के साथ खरल ६ पहर तक करना तव तैयार हो जायगा फिर एक रत्ती के वरावर गोलीयां वना लेनी पुष्टी की इच्छा वाला एक गोली को पान में धर करके सवेरे खाया करे १ जिसकी धातु क्षीण होती हो वह अदरक के रस के साथ १ गोली खाय २ खाज वाला एक गोली

छाछ के साथ खाय ३ गौके घृत के साथ एक खाने से बुखार दूर होता है ४ अजवाइन के साथ खाने से पथरी वाले को फायदा होता है ५ बबूर के फल के साथ खाने से बाद फिरंग दूर होता है ६ गूमा के रस के साथ खाने से विषम ज्वर जाता है ७ अलसी के तेल में मिला कर मालिश करने से सब तरह का दरद दूर होता है और धतूरे के रसमें मिला कर मले तब कमर का दरद जाय ८ और पसुरिया बांई भी जाय ६ अर्द्धांग भी जाता है और गंठियां बाई जाय १० और सब तरह की बाई भी जाती है ११ कटहरी के रस के साथ खाय तो दमा जाय १२ गोमूत्र के साथ खाने से त्तयी रोग जाय कठोदर भी दूर होता है १३ निंबू के रस के साथ खाये तो भूख बढ़े अर्थात् भूख बहुत लगे १४ और पित्त रोग भी जाता है बकरी के मूत्र के साथ खाने से ताप तिल्ली जाती है १५ और पेट के वात कृमि भी जाते हैं और पेट के सब तरह के रोग भी चले जाते हैं १६ छोटी लाची और चीनीआ कपूर के साथ देने से मुख की दुर्गंधी दूर हो जाती है १७ लौंगों के साथ खाने से अजीर्ण दूर होता है ॥७०॥

घोड़ा चाली की गोली ।

१ तोला शोधी हुई तबकी या हरताल १ तोला शोधा हुआ पारा १तोला सुपेद शोधा हुआ मंखीआ १ गंधक आँवला सार शोधी हुई १ तोला शोधा हुआ जमालगोटा १ तोला शोधा हुआ सुहागा १ तोला शोधा हुआ वछ नाग १ तोला वच १ तोला भैदासोठ १ तोला काली मिरच १ तोला बड़ी पीपल १ तोला कुटकी १ तोला वड़ी हरड़ की छाल १ तोला हींग १ तोला गोखरू यह सब १५ दवाईयें हैं इन सब को जुदा २ पीस कर छान कर फिर इनको लोहे के खरल में पाकर तिसमें भंगरे का रस छोड़ कर ४० पहर तक खरल करे फिर एक रत्ती के बराबर इस की गोलियां बना लेनी और छाया में उनको सुका लेना १ संग्रहणी वाले को एक गोली गौके मठा के साथ तीन दिनों तक बराबर देनी और खट्टी या मीठी चीज़ को तिस के ऊपर न खाये फायदा होगा २ जिस को बदहजमी हो या पेट मे दरद हो तिस को एक गोली घृत के साथ देनी ३ यदि किसी को साप ने काटा हो तब तिस की टांग की पिंडी को पछ के जरासा रुधिर निकास कर फिर तिस गोली को पानी में घिस कर उसी जगह पर लगादे

४ जिस के पेट में कीड़े पड़ गये हों तब अदरक के रस के साथ एक गोली तिस को खिलानी ५ जिसको बिछू ने काटा हो तो सोंठ के पानी में एक गोली को घिस कर उसी जगह पर लगा देनी ६ जिसके शरीर में जलन हो आँवला के रस में एक गोली को घिसके उसकी आंखों में लगा देनी ७ एक गोली को नित्य ही प्रातःकाल को खाया करे तब तिसका शरीर नीरोग रहे ८ और जो शहत के साथ तीन दिनों तक नित्य ही सवेरे खाय उसमें भोग शक्ति बहुत सी होय ९ जिसके नेत्र बहुत लाल होजायें तब एक गोली को जलमें घिस कर नेत्रों में लगाने से लाली जाति रहेगी १० एक गोली को मुरगी के अण्डे की जरदी मे घिस कर लिंग पर लेप करके स्त्री से सत्संग करे तब स्त्री वश्य में होजाय। ११ जिसको सुजाख हो वह जवाखार के साथ एक गोली को खाने से अच्छा हो जायेगा। १२ जिसके सिरमें दरद हो वह एक गोली को मीठे तेल में घिस करके मले। १३ जिसको जलंदर रोग हो वह नौ मासा ब्रह्मदंडी के साथ एक गोली को खाय फायदा होगा। १४ यदि चालीस दिनो तक १ गोली को नित्य ही सवेरे एक तोला भर सुपेद चीनी के साथ खाय तब शरीर के

सब रोग चले जायें। १५ जिसको बदहजमी हो वह पान के साथ एक गोली को नित्य खाया करे। १६ शहत के साथ एक गोली को खाने से बन्धेज होय। १७ सरदी के दिनो में जिसके अंगो में दरद हो वह एक गोली को शहत मिरच और पीपलके साथ खाये १८ जिसका सिर घूमता हो या चक्कर आता हो वह तोला भर वच के साथ पीस कर एक गोली को खाये १९ जिसके मुख से दुर्गन्धि आती हो सो नौ मासा खसरके साथ एक गोली खाय। २० जिसको नासूर हो वह बिल्ली की हड्डी के साथ एक गोली को घिस करके लगावै। २१ जिसको बालचर हो जरा सी घूंघची के रसके साथ एक गोली को घिस करके लगावै। २२ जिसका पेट चलता हो वह अजव इन को पीस कर एक गोली को तिस मे मिला करके खाय। २३ जिसके पेट से खून जाता हो वह मोचरस के साथ एक गोली को खाय। २४ जिसके कान में दरद हो वह दो मासा खजूरके रसके साथ एक गोली को घिस करके कान में टपकावै या अजवाइनके रस के साथ घिस करके कान मेंडाले अच्छा हो जायगा। २५ दांतो में दरद हो वह जीरे के रस के साथ एक गोली को घिस करके दांतों पर मले अच्छा हो

जायेगा । २६ रतौंदी वाला एक गोली को अपने थूक के साथ घिस कर नेत्रों में लगावै । २७ जिसको छाजन हो वह वैगन के रस के साथ एक गोली को मलै । २८ जिसको वादी वहुत हो वह १ गोली को सोंठ और गरम दूध के साथ खाये २९ जिसके पेट में दरद हो वह लौंग के साथ एक गोली को खाये। ३० और गोखरू के रस के साथ खाने से पेशाव की जलन जायेगी । ३१ कमर का दरद जिसको हो वह चालिस सुपारी के रस के साथ एक गोली को खाये ३२ सिरके दरद वाला असगंध के साथ १ गोली को खाये । ३३ नारवारोगवाला धतूरे के रस के साथ एक गोली को खाये ३४ । त्रिफलाके साथ एक गोली को खाने से मुख के सव रोग चले जाते हैं । ३५ वकरी के दूध के साथ एक गोली खाने से पथरी की बीमारी चली जाती है । ३६ घृत के साथ एक गोली खाने से पेट का दरद चला जाता है । ३७ और एक गोली को मीठे तेल में या फुलेल में घिस करके शरीर पर मलने से शरीर की सव दुर्गन्धि चली जाती है । ३८ फिर त्रिफला के साथ जाता है । ३९ अजवाइन के साथ खाने से छाती का दरद जाता रहता है । ४० मालकंगनी केसा

थ खाने से बल बढ़ता है। ४१ जिस स्त्री के बालक जन्मने में दुख हो तिस को इन्द्र जौं के साथ खिलाने से तुरंत बालक उत्पन्न हो जाता है। ४२ बरगद के रस के साथ खाने से अतीसार दूर होता है। ४३ आँवला के रस के साथ खाने से कमर का दरद जाता रहता है। ४४ शहत के साथ खाने से शरीर पुष्ट होता है। ४५ जिस का पेशाब रुकता हो वह १ गोली को गौके दूध के साथ खाय जारी हो जायेगा। ४६ आँवला के रसके साथ खानेसे जलन दूर होजाती है। ४७ जटामांसी के साथ खाने से गर्भ रह जाता है। ४८ और तुरई के रस के साथ २१ दिनों तक नित्य एक गोली खाने से बादफिरंग दूर होजाता है ४९ सर्प के काटे हुए को सेंधे निमक के साथ या चीत के साथ १ गोली खिलाने से विष उतर जाता है ५० चूने के साथ एक गोली देने से हलकाये कुत्ते का विष उतर जाता है ५१ गधे के मूत्र के साथ खिलाने से मिरगी जाती रहती है। ५२ अकरकरा के साथ देने से खांसी दूर होजाती है। ५३ बबूर के रस के साथ नित्य ही १ गोली १५ दिनों तक खाने से दमा जाता रहता है। ५४ जिसका कफ गिरता हो वह लाची शहत लौंग तीनों २ मासा

लेकर लौंग और इलायची को पीस कर शहत में मिला कर तिस में एक गोली को रख कर खाजाये कफ फिर नहीं गिरेगी। ५५ अदरक के रसके साथ खाने से भूत प्रेत की छाया जाती है। ५६ भंगरा के रस के साथ खाने से बादी दूर होजाती है। ५७ हींग के साथ खाने से संग्रहणी दूर होती है। ५८ पान के साथ खाने से कफ दूर होजाता है। ५६ निंबू के रस के साथ एक गोली ४० दिनों तक बराबर रोज खाने से कुष्ट रोग जाता रहता है और ऊपर से चने की रोटी खाया करे। ६० फिर आँवला के रस के साथ खाने से मृगी दूर होती है। ६१ और भंगरा के रस के साथ खाने से पुराना ज्वर दूर हो जाता है।

६२ मुनक्का के साथ खाने से भूख बहुत लगती है। ६३ आँवला के रस के साथ खाने से खाज जाती रहती है। ६४ अजमोदा के रसके साथ खाने से क्रमि रोग दूर होजाता है। ६५ चित्रा के रस के साथ खाने से भूख बहुत लगती है। ६६ मीठे के साथ खाने से सन्निपात दूर होजाता है। ६७ यह गोली तजरबा की है महात्माओं से मिली है इस को महात्मा लोग जलदी बताते नहीं बड़े परिश्रम

से मिली है और उपकार जान कर इसको हम ने प्रगट किया है ॥७१॥

बरश का नुकसा ।

यह यूनानी हकीमों का नुकसा है और तुरंत ही फायदा करता है अनेक बार अजमाया हुआ है इस तरह से यह बनता है ५ तोला सुपेद गोल मिरच ५ तोला खुरासानी अजवाइन ५ तोला साफ की हुई अफीम २ तोला केसर एक तोला बालछड़ ३ मासा अकरकरा ३ मासा फरयून इन सबको कूट पीस कर सबसे तिगुना शहत उमदा लेकर उसमें मिला कर फिर एक टीन की डिब्बी मे भर कर ढकना से बंद करके फिर एक सेर भर जों को एक थैली में डाल कर उन जवों में इस डिब्बीया को दबा देवो और उस थैली को कहीं ऊंची जगह में घर मे लटका देवो तीन महीना के पीछे डिबिया को निकाल कर के दवाई बरतो जिसका जुकाम बिगड़ जाता है उसका रेशा नाक के रास्ता से नहीं गिरता है किंतु भीतर गले में गिरता है तिस की पहचान यह है जो गले में खारश होती है और खांसी जारी हो जाती है इसी के पुराना होने पर फिर दमा भी पैदा हो जाता है इस वास्ते इसकी उमदा दवाई ये ही

वरश है आधा मासा सवेरे तीन दिन बराबर ख
अगर बूढ़ा हो या बली हो तब दोनों वक्त आध
मासा खाये लड़का एक रत्ती या दो रत्ती ख
तीन दिन में आराम हो जायेगा ।

बलगमी खांसी वाला भी आधा मासा ती
दिनों तक नित्य ही निरने मूंह खाये या संध्या
समय खाये तीन दिन में आराम हो जायेगा जि
को बलगम गिरता हो वह भी उतना खाये जुक
और नजले वाला भी उतना खाये बंधेज की इ
वाला भी आधा मासा खाया करे जिस को व
हो वह भी आधा मासा इसको खाये बहुत फाय
होगा ॥७२॥

दस्तों को लाने की गोली ।

हरड़ गोल मिरच सोंठ आँवला पीपल पिपर
मूल बायबडिग मोथा तज पत्रज यह सब एक
तोला निसोंत ८ तोला जमालगोटा ४ तोला मि
६ तोला सबका चूर्ण बनाकर शहत के साथ मे
के दाने के बराबर गोलियां बनावें १ गोली खा
ऊपर से ठंडा पानी पीवे जबतक ठंडा पानी पी
रहेगा दस्त आते रहेंगे जब बंद करना चाहे ग

गोबर भर कर तिसमें रख कर एक पहर तक कंडों की आग पर पकाये जबकि नरम होजाये तब घी में भूने जबकि भून जाये फिर महीन पीस कर काम में लावे ॥२॥

गुंजा का शोधन।

गुंजा १ पहर तक कांजी में औटाने से शुद्ध होजाती है ॥३॥

अफीम का शोधन।

अदरक के रस में मिला कर साफ करने से शुद्ध होजाती है ॥४॥

धतूरे का शोधन।

धतूरा के बीजों को४पहर तक गोमूत्र में भिगो रखें फिर निकाल कर मलके छिलका उतार देने से शुद्ध हो जाता है ॥५॥

कुचिला का शोधन।

कुचिला को घृत में भूंजने से शुद्ध हो जाता है। मदार धतूरा सेहुड़कनइल केरिहारी घूंघची अफीम यह सब शोधे नहीं जाते हैं गुण इनमें बहुत हैं अरक कुष्ट खाज दाद वायु विष कफ रक्त पित बवासीर इन सब को फायदा करते हैं इनमें सेहूंड रेचक दीपन तीक्ष्ण मूल आम गुल्म उदर अफारा

अथ दूसरा अध्याय ।

अब इस दूसरे अध्याय में धातुओं और उप-
धातुओं की उत्पत्ति और उनके शोधन के
तथा मारण वगैरा की रीतियों
को दिखाते हैं।

जमालगोटे का शोधन ।

एक हांडी में गौ का गोबर पाकर तिसमें जमालगोटा को पाकर हांडी को एक पहर तक गोठों की आग पर देवे फिर ठंडा करके जमाल-गोटे को निकाल कर उसका छिलका उतार कर बीच में से गिरी को निकाल कर तिस की दो २ फांके करके उसके बीच के सवज रंग के पत्र को निकाल दे और उस दाल को तीन वार डोला यत्र में दूध डाल करके शोधे फिर तिस को किसी तखते पर या कपड़ा पर धूप में फैला दे जबकि सूक जाये तब कूट कर फिर काम में लावो ॥१॥

वछनाग का शोधन ।

इसका दूसरा नाम सिंहिया है इसी को मीठा तेलीया भी कहते हैं इसको एक हांडी में गौ का

गोवर भर कर तिसमें रख कर एक पहर तक कंडों की आग पर पकाये जबकि नरम होजाये तब घी में भूने जबकि भून जाये फिर महीन पीस कर काम में लावे ॥२॥

गुंजा का शोधन ।

गुंजा १ पहर तक कांजी में औटाने से शुद्ध होजाती है ॥३॥

अफीम का शोधन ।

अदरक के रस में मिला कर साफ करने से शुद्ध होजाती है ॥४॥

धतूरे का शोधन ।

धतूरा के बीजों को ४ पहर तक गोमूत्र में भिगो रखें फिर निकाल कर मलके छिलका उतार देने से शुद्ध हो जाता है ॥५॥

कुचिला का शोधन ।

कुचिला को घृत में भूंजने से शुद्ध हो जाता है। मदार धतूरा सेहुड़कनइल केरिहारी घूंघची अफीम यह सब शोधे नहीं जाते हैं गुण इनमे बहुत हैं अरक कुष्ट खाज दाद वायु विप कफ रक्त पित ववासीर इन सब को फायदा करते हैं इनमें सेहूंड रेचक दीपन तीक्षण मूल आम गुल्म उदर अफारा

विष इनको हरता है प्लीह कुष्ट वायु उन्माद पांडु इनका नाश करता है।

अब उपधातुवों के शोधन और कायम करने तथा मारन के हालों को लिखते हैं जो कि आग पर धरने से उड़ जाती हैं सो जलदी उड़ने नहीं पावेगी।

पारा का शोधन।

दो तांबे के बरतन को लेवो जोकि कलई किए हुए न हों एक बरतन को आधा पानी से भर कर उसमें पारे को छोड़कर दूसरा बरतन ऊपर उसको धर कर उसमें भी पानी को भर देवो फिर चूले पर धर कर नीचे तिसके आग को जलावो थोड़ेंही काल में पारा नीचे वाले बरतन से उड़ कर ऊपर वाले के साथ लग जायेगा यह पारा बहुत साफ और अच्छा होवेगा। दूसरी रीति १ पकी हुई ईंट लेकर उसमें गड़ा खोदो उसमें पारे को डाल कर ईंट के छोटे से टुकडे से फिर खरल करो ऐसा करने से पारे की सब स्याई दूर हो जायेगी और उम्दा सफा पारा रह जायेगा या १तोला पारा को चार कागजी निंबूओं के रस में एक दिन खरल करने से भी शुद्ध हो जाता है।

पारे का कायम करना।

लाल रंग की चौलाई को कूटकर तिसका पांच

सेर रस निकाल कर एक बरतन में रक्खे फिर१ तोला पारा को मट्टी की कोरी हांडी में पाकर उसमें थोड़ा चौलाई का रस छोड़कर आग पर धर कर अग्नि दीवे की मोटी वत्ती की तरह नीचे जलावो और थोड़ा २ करके सब रस को उसमें डाल कर सुखा देवो पारा कायम हो जायेगा अर्थात् फिर आग पर रखने से उछलेगा नहीं मगर अधिक तेज आग पर रखने से धुआं बन कर उड़ जायेगा। दूसरी रीति ६ मासा सुरमा को लेकर पीसकर एक बरतन में आधे सुरमे को बिछा कर उस पर १ तोला पारा को रख कर उसके ऊपर फिर आधे सुरमे को बिछावो फिर ४ रत्ती कलमीशोरे को उस पर डाल कर बरतन को कोइलों की आग पर रखो और एक भखते कोइले को लेकर शोरा को आग लगा देवो जबकि सब शोरा जल जाये तब बरतन को ठंडा करके पारे को निकाल लेवो पारा जम कर कायम हो जायेगा।२।

पारा के मारने की रीति।

पारा १ तोला लेकर एक कोरे ठीकरे में पाकर उसके ऊपर पीले फूल वाली रुद्रदन्ति की पत्ति के रस को निकाल कर छोड देवो फिर उस ठीकरे को आग पर धर देवें वह उबल करके पारा बतासा हो

कर जम जायेगा यह कुशता जन्म के नामरद को भी मरद बना देता है और भी अनेक रोगों को दूर करता है ॥३॥

गन्धक का शोधना।

गन्धक को एक कपड़ा में बांध कर एक हांडी में लटका दे और बीच में लहसन का शीरा डाल दे और आग पर धर कर नीचे आग को खूब वालो जब कि शीरा सब सूखजाये फिर गन्धक को निकाल कर तिली के तेल में तिस को तल लेवो फिर ठंडा कर के प्याज के पानी में तिस को धो डालो साफ हो जायेगी ॥४॥

गन्धक का कायम करना।

१ तोला आँवलासार गन्धक साफ की हुई, आठ तोला तिल का तैल लेकर उसमें गन्धक को छोड़ देवो और इतने काल तक तेलमें पड़ी रहे जो मिल करके लाल होजाये फिर निकाल लेवो कायम हो जायेगी। दूसरी रीति आँवलासार गंधक को लेकर एक मौ दो वार पिगला कर अलसी के तेल में डाल २ करके ठंडा करो फिर कायम हो जायेगी जो गन्धक के कायम हो जाती है वह अग्नि पर

धरने से जलती नहीं है बल्कि मोम की तरह नरम होकर पकने लगती है ॥५॥

हड़ताल का शोधना ।

हड़ताल को पेठे के रस में पीस कर फिर तिस को चूने के पानी में पकावो फिर तिस को तेल में ठंडा करो साफ हो जायेगी ॥६॥

हड़ताल को कायम करना ।

हड़ताल को अंगूरी सिरकामें पीसकर टिकिया बना कर फिर एक बरतन में चूना बिछा कर उस पर टिकिया को धर कर फिर तिसके ऊपर चूने को बिछा कर दूसरा बरतन ऊंधा ऊपर तिसके धर के ५ सेर जंगली कंडों की आग देने से कायम हो जायेगी ॥७।

शिंगरफ के साफ करने का अर्थात शुद्ध करने का तरीका पीछे पहले अध्याय में लिख आये हैं अब तिसके कायम करने की रीति को लिखते हैं।

शिंगरफ का कायम करना ।

पाव भर शोरा में १ तोला काफूर को मिला कर दोनों को महीन पीस कर फिर १ बरतन में दो तोला शोधी हुई शिंगरफ की डली के नीचे और ऊपर उस

शोरे को डाल कर आग पर धर देवो जबकि शोरा जल जाये उतार लेवो कायम हो जायेगा दूसरी रीति एक सेर भर तोल की मोटी मूली लेकर उस के बीच में १ तोला भर शिंगरफ की डली को धर कर आग देवो और चालीस बार ऐसा करनेसे शिंगरफ कायम हो जायेगा तीसरी रीति एक मोटे मार बैंगन को लेकर उसमें शिंगरफ की डली को धर कर बैंगन को आग पर रखो भुज जाने पर उतार के ठंडा करो इसी तरह एक सौ बैंगन में करने से कायम होजाता है ॥८॥

संखिया का कायम करना ।

उमदा संखीया वही होता है जो कि रूखा और खुशक हो जिसमें कुछ चमक पाई जाये और जो कि बिल्लौं की तरह साफ हो वह उमदा नहीं होता है पाव भर सजी खार को लेकर खूब महीन पीस लेवो फिर एक बरतन में आधी सज्जी को नीचे रखो उस पर संखीया की डली को धर कर उसके ऊपर बाकी की सज्जी को पाकर फिर उस बरतन को चूले पर धर के नीचे तिसके लकड़ियों की आग को एक घंटा तक जलावो संखिया जम के फूल जाय तब उतार कर ठंडा करके निकाल कर एक क

की पोटली में बांध कर फिर पोटली को एक डोरे से बांधो फिर एक छोटीसी मट्टी की प्याली में सूराख करके उसमे तागे को निकाल कर फिर एक हांडी में घी कुवार के लुआब को डालकर उस पर संखिये की डली को लटका देवो मगर लुआब से दो अंगुल ऊंची रहे उसको हांडी पर रखो मगर उस पर कपड मट्टी कर देनी फिर हांडी के नीचे आग को जलावो जब तक भाप निकलती रहे आग जलाते जावो जबकि भाप निकलनी बंध होजाये तब आग को ठंडा कर देवो फिर ठंडे होजाने पर उतार लेवो संखिया मोम की तरह हो जायेगा इसी को कायम होजाना कहते हैं ॥६॥

नौशादर का शोधना।

नौशादर को महीन पीस कर पानी में डाल करके पकावो जिस काल में पानी उबलना शुरु हो जाये तब ठंडा करके पानी को नितार लेवो फिर तिसमें दूसरा पानी पाकर इसी तरह पांच दफा करने से नौशादर शुद्ध हो जावेगा ॥१०॥

नौशादर का कायम करना।

मज्जी का खार पांच हिस्सा नौशादर १ हिस्सा

कि ठंडी होजाये तब तिस को तोल करके देखो वजन में जितनी फटकरी कम होजाये उतनी उसमें और देकर फिर उसी रीति से आग देवो जब तक फटकरी का वजन पूरा न होजाये तबतक करते रहो पूरा होने पर कायम हो जायेगी ॥१५॥

निमक का शोधना ।

नमक को किसी बरतन में पाकर आग पर रखो जबकि लाल होजाये तब तिस को तिली के तेल में डाल कर ठंडा कर लेवो । दूसरी रीति निमक को पानी में डाल देवो जबकि गल करके मिल जाये फिर उस पानी को नितार कर किसी बरतन में डाल कर आग पर सुकाओ जब कि पानी सूख जायेगा निमक जम कर रह जायेगा वह शुद्ध नमक कहाता है ॥१६॥

निमक का कायम करना ।

नमक को बारीक पीस कर किसी हांडी में डाल कर तिस का मुंह बंद करके तिस को आग पर धरो फिर ठंडा करके देखो जितना वजन कम होजाये उतना उसमें और मिलाओ इसी तरह करते जावो जब कि वजन पूरा होजाये फिर कायम हुआ जान कर रख देवो ॥१७॥

सज्जी की सफाई और कायम करना।

जो रीति नमक के साफ करने की है वही रीति सज्जी के भी साफ करने की है अरस्तु और अफलातून हकीमों ने कहा है जो चीज गरम और खुशक हो और खारदार जेर भी हो वही चीज सज्जी को साफ कर सक्ती है सो चूना और संखिया है और साफ करने की रीति वही है जैसी कि निमक की बताई है और तिसके कायम करने की रीति यह है सज्जी को पीस कर एक कड़ाही में डाल कर खूब भूनो जब कि भुन जायगी तब कायम हो जायेगी ॥१८॥

जंगार की सफाई

जिगार को पीस कर पानी में मिला देवो जब-कि पानी मे मिल जाये उस पानी को जुदा करो और जो कि नीचे बैठ जाय उसको फिर पीस कर पानी में मिलाओ इसी तरह सब जंगार को करके फिर पानी को एक बरतन में डाल कर टका देवो जब कि सार भूत पानी के नीचे बैठ जाये तब पानी को नितार कर फेंक देवो नीचे का निकाल लेवो वह शुद्ध होगा ॥१६॥

जिंगार का कायम करना।

जिंगार को पीस कर मदार के दूध में मिला कर उसकी गोली बना लेवो उस गोली को चूना में या पीसी हुई सज्जी में रख कर आग को देवो एक घंटा के पीछे गोली का रंग पीला हो जायेगा तब वह कायम हो जायेगा ॥२०॥

नीले थोथे का शोधना।

नीले थोथे को साफ करने और कायम करने की सब रीति जिंगार वाली है ॥२१॥

मुरदासंग की सफाई।

जितना मुरदासंग हो उतनाही नमक पीस कर उसमें मिलाओ फिर उस पर इतना पानी डालो जो चार अंगुल तिस के ऊपर आजाये फिर तिस बर-तन को धर देवो और हर रोज दिन में तीन बार तिस को हिलाते रहो आठवें दिन पानी को बदलते रहो इसी तरह चालीस दिनों के पीछे तिस को निकाल कर सुखा लेवो तब वह साफ और कायम हो जायेगा और दवाई में डालने से गुणकारी भी होवेगा ॥२२॥

कासीस की सफाई।

एक तोला कासीस को भंगरा के रस में डाल

करके पकाओ फिर तिस को तिलों के तेल में ठंडा करो साफ हो जायेगा ॥२३॥

कासीस का कायम करना ।

कसीस को घी कुवार के रस में खरल करो फिर मेंदी के अरक की सात पुढें देवो फिर शराब दो आतशा में डाल करके मिलाओ फिर सुखा के फिर उस पर भंगरा के अरक का चोवा देवो तब यह उपधातु कायम हो जायेगी ।

एक कासीस उपधातु होती है । दूसरी हीरा कसीस उपधातु होती है इसमें वही उत्तम होती है जो कि अंदर से सोने के रंग की तरह चमकती है॥२४॥

रस कपूर व दालचिकना का शोधना ।

इन दोनों मे से जिसको साफ करना चाहो तो इस तरह से साफ करो कि एक बरतन में एक तोला घी डाल कर उस पर १ तोला की डली को धर देवो फिर तिस बरतन का मुंह ढकने से बंद करके फिर तिस हांडी के नीचे दीये की वत्ती की तरह आग को जलाओ और उस ढकने पर थोड़ा २ ठंडा पानी डालते रहो जब थोड़ी देर में वह साफ होकर ऊपर ढकने के लग जायेगा वही साफ होगा ॥२५॥

दाल चिकना और रस कपूर का कायम करना।

दाल चिकना और रस कपूर इन दोनों में पारा और संखिया मिला हुआ होता है इन दोनों के कायम करने की यह रीति है निंबू का रस दो तोला लाल रंग की चुलाई के साग का रस दो तोला दोनों को मिला कर फिर एक तोला दाल चिकना या रस कपूर लेकर उस पर चुलाई के रस को धीरे २ चुवा कर सब को सुखा दे फिर जंगली गोभी के पत्तों को पीस कर नुगदी बनावो और उस नुगदी की दो टिकियां बना कर नीचे ऊपर धर के बीच में दाल चिकना को रख कर या रस कपूर को धर कर फिर सुपेद सज्जी को पीस कर उससे उसको ऊपर से ढक देवो फिर उस बरतन के नीचे लकड़ियों की आग को जलाओ तब वह थोड़ी देर में कायम हो जाती है ॥२६॥

शोरा को साफ करने का तरीका।

शोरा को पानी में घोल कर उस बरतन को किसी ठंडी जगह में धरदेवो शोरा के दाने बनजायेंगे और नमक नीचे बैठ जायेगा ऊपर से शोरा को

निकाल लो और नमक को छोड देवो यही साफ किया हुआ शोरा कहा जाता है ॥३॥

धातुओं के शोधने की रीतियें।

जितनी धातु होती हैं वह सब शोधी हुई औषधियों में गुणकारी होती हैं विना शोधने के गुणकारी नहीं होती है इसी लिये प्रथम उनके शोधने की रीतियों को दिखाते हैं जितनी के रांगा और शीशा वगैरह पिघलने वाली धातु हैं उनके शोधने की यह रीति है किसी बरतन में तेल या छाछ अथवा गोमूत्र या कांजी का पानी डालकर फिर तिस बरतन के मुख पर एक छोटे से छिद्र वाले मट्टी वगैरह के ढकने को धर दो फिर धातु को किसी लोहे के कड़छे में डालकर अग्नि पर रखो जबकि गल जाय तब ढकने में छोड देवो वह छिद्र द्वारा नीचे बरतन के तेल वगैरह में जा रहेगी जबकि ठण्डी हो जाय फिर पिघला करके छोड़ो जितनी वार अधिक पिगला करके छोड़ोगे उतनी ही अच्छी शुद्ध हो जावेगी नहीं तो कम से कम सात वार जरूर करना चाहिये।

सोना चांदी वगैरह के शोधने की रीति।

चांदी सोना तांवा फौलाद वगैरा जो कि

पिघलने वाली धातूएं नहीं हैं इनके शोधने की यह रीति है इनको कुटवा कर इनके महीन पत्र बनवाकर फिर उन पत्रों को अग्नि में तपा कर छाछ कांजी गोमूत्र या तेलमें डुबोना अर्थात् बार २ तपा कर उनको छाछ वगैरह में ठंडा करने से वह शुद्ध हो जाती हैं परंतु कम से कम सात बार तो जरूर ही तपा करके छाछ वगैरह में ठंडा करना चाहिये ॥४॥

शिंगरफ के शोधने की रीति ।

नर शिंगरफ की एक तोले की या दो तोले की एक साबित डली को लेकर एक तागे के साथ उसको बांधो फिर एक हांडी लेकर उसमें आध सेर गोमूत्र डालकर उस डली को एक पतली लकड़ी के साथ बांधो फिर उस लकड़ी को हांडी पर रखकर डली को हांडी में लटका दो मगर गोमूत्र से दो अंगुल ऊंची रहे हांडी को मंद आंच पर धर देवो गोमूत्र की भाप शिंगरफ को लगती रहे एक पहर के पीछे डली को निकाल कर गोमूत्र को फेंक दो फिर उसी हांडी में आध सेर गौ का दूध डालकर उस पर डली को लटकावो जब आधा दूध सूख जाय तब डली को निकाल कर

उसको भी फेंक दो फिर हर रोज़ हांडी में आध सेर या अढाई पाव दूध डालकर उसके ऊपर उस शिंगरफ़ की डली को लटका दिया करो मगर दो अंगुली दूध से ऊपर रहे जो दूध की भाप शिंगरफ को लगती रहे शिंगरफ को निकाल कर संभाल कर रख दिया करो और दूध में मीठा डाल कर पी जाया करो चालीस रोज ऐसा करने से शिंगरफ बहुत ही उमदा शुद्ध हो जायगा और वह दूध भी बड़ा गुणकारी अर्थात् बल को बढाने वाला होगा मगर जब तक उस दूध को पीते रहो तबतक खटाई और तेल या बादी को नहीं खाना और भोजन से एक घंटा पीछे पीना ॥६॥

शिंगरफ शोधने की दूसरी रीति ।

एक तोला भर शिंगरफ को एक छटांक निंबू कागज़ी के रस में खरल करके सुखा लेवो इसी तरह सात बार छिटांक २ निंबू के रस में खरल करके सुखाने से शुद्ध हो जायेगा ॥७॥

शिंगरफ शोधने की तीसरी रीति ।

एक तोला भर शिगरफ की डली को लेकर उसको किसी लोहे के बरतन में रख देवो फिर पाव

भर निंबू का रस निकाल कर अलग रखो और थोड़ा २ उस डली के ऊपर डाल कर सुखाते जाओ जब कि सूख जाय फिर थोड़ा डालो जब कि इसी तरह पाव भर रस सूख जाय तब फिर सुपेद रंग के प्याज के गट्ठे लेकर पाव भर उनका रस निकाल कर उसी रीति से थोड़ा २ शिंगरफ की डली पर डाल कर के सुखाते जावो जब कि प्याज का रस सारा सूख जायेगा तब शिंगरफ शुद्ध हो जायेगा ॥८॥

संखिये के शोधने की रीति ।

एक तोले भर की सुपेद संखिये की डली को लेकर एक तागे के साथ उसको बांध कर फिर एक हांडी में आध सेर गौ का दूध डाल कर उसमें उस डली को लटका देवो मगर नीचे हांडी के तले के साथ लगने न पावे और दूध में डूबी भी रहे हांडी को अग्नि पर धर देवो नीचे उसके बराबर की अग्नि को बालो जब कि दूध गाढ़ा होजाय उसमें डली को निकाल लेवो और दूध को फेंक देवो मगर दूध की भाप से बचाव रखना जिस से नेत्रों को लगने न पावे संखिया शुद्ध हो जायेगा ॥९॥

संखिया के शोधने की दूसरी रीति ।

एक तोला भर संखिये को एक कागजी निंबू

के रस में खरल करे जब रस सूख जाय दूसरे निंबू का रस निकाल कर खरल करे इसी तरह सात मोटे कागजी निंबूओं के रस में खरल करने से शुद्ध हो जायेगा और कोई २ वैद्य इसको बकरी के दूध में सात पुटें देकर खरल करके शुद्ध कर लेते हैं ॥१०॥

तबकीया हरताल के शोधने की रीति ।

दश तोला तबकीया हरताल को लेवो और १ तोला सुहागा लेवो फिर एक मोटे कपड़े का टुकड़ा लेकर उसके चार टुकड़े करके हरताल के भी चार टुकड़े करे और सुहागे के भी चार हिस्से करे कपड़े के एक २ टुकड़ा में एक २ हरताल का हिस्सा और एक २ सुहागे का हिस्सा डाल कर चार पोटलियां बना करके बांधे फिर एक मोटी मिट्टी की हांडी लेकर उसमें पाव भर निंबू का रस निकाल करके पा देवे और हरताल की चारों पोटलियों को तागे के साथ बांध कर उस हांडी पर लटका दे जब कि रस कुछ सूख जाय तब उतार कर निकाल कर फिर उसी हांडी में पाव भर सिरका को पाकर उस पर उन पोटलियों को लटका दे मगर नीचे लगने न पावे नीचे तेज अग्नि जलादे फिर तिलों के तेल में

पकावे फिर त्रिफला के काढ़े में पकावे शुद्ध हो जायेगी ॥११॥

पारे के शोधने की रीति ।

जितना पारा शोधना हो उसको लेकर एक मोटे कपड़े में पाकर निचोड़ करके निकाल लेवै चार पांच वार ऐसा करने से पारा शुद्ध हो जायेगा॥१२

पारा के शोधने की दूसरी रीति ।

चीतराई पीपल मिरच सों ठञ्चौर सांभरनिमक इन सवको वरावर लेकर पीस कर फिर पारे के साथ खरल करे ओर तिसमें निवू के रस को छोडे तीसरे दिन दवा को वदल दे दो वार ऐसा करने से पारा शुद्ध हो जायेगा ॥१३॥

गंधक के शोधने की रीति

एक मट्टी की हांडी में आधसेर गौ का दूध डाल देवो फिर उस हांडी के मुंह पर एक महीन कपड़ा वांध देवो और तिसके गिरदे आटे की या चिकनीमट्टी की दोअंगुल वरावर ऊंची कंद वनाओ फिर उस कपड़े के ऊपर आवलेसार गंधक को रक्खो फिर उस गंधक पर एक छोटा सा लोहे का तवा रक्खो उस तवे पर अग्नि के भखते हुए कोइलों को

धर देवो अग्नि के ताव से गंधक सब पिगल कर हांडी में जा रहेगी. तीन वार ऐसा करने से गंधक शुद्ध हो जाती है ॥१४॥

रांगा के शोधन की विधि ।

रांगा को गला कर पहले भंगरे के रस में बुझाओ फिर सरसों के तेल में फिर गौ के दूध में फिर निंबू की पत्ती के रस मे अर्थात् हर एक में सात वार बुझाने से शुद्ध हो जायेगा शुद्ध रांगा ही मारा हुआ गुणकारी होता है ॥१५॥

अवरक के शोधने की रीति।

पाव भर अवरक को लेकर तिसको अग्नि में में तपा कर गौ मूत्र में सात वार फिर चौराई की पत्ती के रस में सात वार फिर खटाई में सात वार बुझावे अवरक सुपेद और काला दोनों इसी तरह से शुद्ध हो जाते हैं ॥१६॥

मुरदासंग के शोधन की रीति ।

१ तोला भर मुरदासंग को आध पाव धतूरे के रस में ४ पहर खरल करने से शुद्ध होजाता है ॥१७॥

अब धातुओं के अनुपानों को दिखाते हैं।

चांदी की भस्म को घृत या मक्खन में खाने से

क्रांति बढ़ती है तांबे की भस्म को संपूर्ण रोगों पर छोटी पीपल या शहत के साथ खाने से सर्व पर गुणकारी होती है रांगा की भस्म शहत बल को बढ़ाती है पीपल के साथ मंदाग्नि को करती है सुपारी के साथ अजीर्ण रोग को करती है लोहे की भस्म सोंठ मिरच और पीपल के साथ खाने से संपूर्ण धातुओं के विकारों को दूर करती है पारे की भस्म सौंचल नमक और अजवाइन के साथ मंदाग्नि को दूर करती है क्षुधा को बढ़ाती है और गिलो के सत के साथ खाने से पुष्टी को करती है अभ्रक की भस्म १ रत्ती से ६ रत्ती तक पीपल और शहत के साथ खाने से श्वास कुष्ठ विष वात पित्त कफ खांसी क्षीणता को भी दूर करती है प्रातः काल में अभ्रक की भस्म को पीपल और शहत के साथ सेवन करने से २० प्रकार का प्रमेह दूर जाता है ॥१८॥

जिस्त का मारना।

एक तोला जिस्त को गला कर फिर न की उस पर चुटकियां को छोड करके साफ करे फिर उसमें एक तोला पारे को मिला कर फिर पर मिश्री की चुटकियां डालें भस्म हो

भस्म नेत्रों की बीमारी में सुरमा में मिला करके नेत्रों में पाई जाती है नेत्रों की बीमारीयों को दूर कर देती है ॥१६॥

जिस्त के मारने की दूसरी रीति ।

एक तोला जिस्त को गला कर उसमें बथुए के साग का पानी निकाल कर डाले सुपेद भस्म बन जायेगी जिस की आंख दुखती हो इसके डालने से आराम हो जायेगा यदि इसकी भस्म को बिनोला के तेल में पकाए तब इसका रंग जरद हो जायेगा जिस की आंख में जाला हो फोला हो धुंद हो इस के डालने से आराम हो जायेगा ॥२०॥

सिक्के का कुशता ।

एक छटांक सिक्के को कढ़ाई में डाल कर गला कर गंधक की चुटकियां डालते जावो और किसी लोहे के दस्ते से हिलाते रहो काले रंग का कुशता बन जायेगा इसको सुरमें में मिला कर आंख में डालने से नेत्र की नजर बढ़ती है ॥२१॥

अबरक की भस्म ।

उमदा सुपेद अबरक आध पाव लेकर उसके पत्रों को जुदा २ करके रखो फिर पाव भर कलमी-

शोरे को लेकर खूब महीन पीस कर उसमें आध पाव गौ का दधि मिलावो फिर एक मट्टी का कोरा सकोरा लेकर उसमें नीचे दही वाले कशोरे की तह ऊपर अबरक के पत्ते की तह फिर शोरा फिर पत्ता इसी तरह तहों को जमा कर फिर सकोरे को कपड़ मिट्टी करके सुका के पंद्रह सेर जंगली गोहों में गढ़ा खोद कर फूक डालो भस्म हो जायेगा फिर उस को गरल में पीस कर शीशी में रखो ॥१॥

जिस को गरमी का बुखार हो उसको दो पैसा भर अमली की पत्ती को लेकर खूब महीन पीस कर फिर उसमें आध पाव पानी को मिला कर छान लेवो सवेरे निरने मुंह एक रत्ती अवरक की राख को छः मासा चीनी में डाल कर खिला देवो और ऊपर से इमली के पानी को पिला देवो सात या नौ दिनों में अच्छा हो जायेगा ॥२॥

यदि किसी को बुखार और खांसी दोनों हों तब छः मासा काहू को आध पाव पानी में पीस कर फिर छान कर पहले १ रत्ती अवरक की भस्म को चीनी के साथ खा कर ऊपर उस पानी को पी जाये सात रोज तक पीने से बीमारी जाती रहेगी॥३॥

यदि किसी को गांठिया बाई हो तब ११ दिन

तक बंगला पान में या पुराने पान में १ रत्ती ऊपर वाली भस्म को खाये यदि फायदा मालूम हो तब चालीस रोज तक बराबर ही खाये ॥४॥

यदि पेट वगैरा किसी अंग में दरद हो तब ६ मासा अजवाइन को पीस कर उसकी ६ पुड़ियां बना कर हर एक पुडी मे एक २ रत्ती उसी भस्म को मिला कर खाय बड़ा भारी फायदा होवेगा ॥५॥

यदि किसी को तिली की बीमारी हो तब ६ मासा गुले दारूदी की सबज़ पत्ती को तीन छटांक पानी में पीस कर फिर छान कर १ रत्ती भस्म को चीनी से खाकर ऊपर उस पानी को पी जाय २२ दिन तक पीवे ॥६॥

अगर किसी को बवासीर बादी या खूनी हो तब चार पैसा भर तोरी के पत्तो को आध पाव पानी के साथ पीस कर छान कर पहले १ रत्ती भस्म को खाकर ऊपर मे इसको पीवे २१ रोज पीने मे फायदा होवेगा ॥७॥

यदि किसी को पेचिस के दस्त आते हो तब १ मासा सौंफ को पीसकर उस में १ रत्ती डालकर तीन दिन तक खायें ॥८॥

जिसको पेशाब जलन मे आता हो या बार

बार पेशाव आता हो वह पहले १ रत्ती इसकी खा कर ऊपर से ३ मासा कलौंजी फांक लिया करे, सात रोज खाए फायदा होगा ॥९॥

जिसको छीप होगई हो तव वह वांस की ३ पत्ती हरी लेकर आध पाव पानी में पीसे फिर छान कर १ रत्ती दवा को खाकर ऊपर से इसको पी जाय इक्कीस रोज़ तक वरावर ही पीवे अच्छा हो जायगा ॥१०॥

यदि किसी को पेचिस के पीछे दस्त आयें तव वह १ आंवले को भूनकर फिर पीस कर पहले १ रत्ती उसकी खाकर ऊपर से आंवला फांक कर तीन रोज सेवन करने से दस्त वन्द हो जायेंगे ॥११॥

जिसको वल की इच्छा हो वह एक रत्ती इस की खाकर ऊपर से आध पाव गौ के दूध का खोवा खाये, २१ दिनों तक रात्रि को सोते समय वरावर ही खाया करे और तव तक स्त्री का संग न करे, वड़ा फायदा होगा ॥१२॥

अगर किसी की छाती पर जलन होती हो और खट्टे डकार भी आते हों तव २ तोला पक्की इमली को लेकर आध पाव पानी में मल करके

छान ले १ रत्ती दवाई खाकर ऊपर से उसको पी जाय तीन दिन पीने से आराम होगा ॥१४॥

अगर किसी को भूख कम लगती हो तव १ मासा हालवन को लेकर कूट पीस कर चूरन बनावे १ रत्ती उस दवाई को खाकर ऊपर से हालवन को खावे और आध पाव ताज़ा पानी पी ले. ७ रोज तक खाये ॥१५॥

जिसको रीह का दरद होता हो तव वह तीन रत्ती हींग को पानी में घोलकर एक रत्ती दवा को खाकर ऊपर से इस पानी को पी जाय सात रोज करने से आराम होगा ॥१६॥

अगर किसी को तीसरे या चौथे दिन जाड़ा हो कर बुखार आता हो तव वह १ छटांक कासनी की हरी पत्ती को लेकर डेढ छटांक पानी में पीस कर छान ले फिर उस को शीर गरम कर ले जिस दिन बुखार की वारी हो वारी से १ घंटा पहले रत्ती भर दवा को खाकर ऊपर से उस पानी को पी जायें तीन वारी में ऐसा करने से बुखार छोड़ जायेगा और अच्छा भी हो जायेगा ॥१७॥

जिस स्त्री को वाद गोले का दरद हो वह गंदना दरखत की आध सेर हरी पत्ती को मगा कर कूप के

पानी में भिगो कर उसमें रखें उसमें से १ छटांक पत्ती को तीन छटांक पानी में पीस करके छान ले १ रत्ती दवाई को खाकर ऊपर से इस पानी को पी जाये सात दिन सेवन करने से आराम हो जायेगा ॥१८॥

शिंगरफ का फूकना।

१ तोला रूमी शिंगरफ को लेकर पहले उस को शोधे फिर १ दो सेर का पका हुआ जिमीकंद लेवो उस को छील कर उसके गूदे की नुगदी पीस करके बना लेवो उस नुगदी में शिंगरफ की डली को धर कर गोला कर फिर तिस का संपुट बना कर सुखा कर दस सेर जंगली कंडों की आग में फूक देवो खुराक दो चावल से १ रत्ती तक उमर के लिहाज से देनी होगी मक्खन वगैरा के साथ देनी खूनी वादी और बलगमी बीमारियां इसके खाने से दूर हो जाती हैं और चालीस रोज खाने से नामरदी भी जाती रहती है इस पर लाल मिरच और खटाई और तेल दधि का खाना मना है जब तक इसका सेवन करे स्त्री के पास भी चालीस रोज तक न जाये ॥१९॥

मरजान मूंगा का मारना।

यह कमर की दरद, दिमाग की कमजोरी,

नज़ला और ज़ुकाम को भी फायदा करता है और प्रमेह को भी फायदा करता है बनाने की रीति मरजान मूंगा उमदा एक तोला लेवे फिर आध पाव प्याज की नुगदी बनाओ उसमें मूंगा मरजान को रख कर फिर एक मट्टी के सकोरे में बंद करके संपुट बनाकर १० सेर जंगली कंडों मे फूक देवो जबकि ठडा होजाय तब निकाल कर पीस करके शीशी में पा करके रख छोडो १ रत्ती से तीन रत्ती तक उमर के लिहाज से खिलाओ खटाई दधि लाल मिरच और तेल इन सब का सेवन करे किन्तु घी दूध का सेवन न करे बहुत फायदा होवेगा ॥२०॥

रांगा का मारना।

१ तोला रांगा को शोध कर फिर उसको कूट कर चौड़ा पत्र बना लेना फिर पाव भर हरी भांग की पत्ती को लेकर या पाव भर हरी मेंदी की पत्ती को लेकर पीस कर उसकी नुगदी बना लेनी फिर मट्टी का १ सकोरा लेकर उसमें रांगा के पत्रों के ऊपर नीचे उस नुगदी को दबा कर उसको सपुट बना कर सुखा कर दस सेर गोहो मे धर के फूक देना जब ठंडा होजाय तब निकाल कर किसी शीशी में रखना प्रमेह और सुजाख तथा पुराना

बुखार वगैरा बीमारियों पर वड़ा फायदा करती है इसके ऊपर खटाई वगैरा को न खाये ॥२१॥

तांबे का फूकना ।

एक छटांक वंद गोभी की नुगदी वना कर उसमें तांबे के १ तोला या ६ मासा पत्रे को धर करके फूक दें ॥२२॥

सिके का कुशता ।

एक छटांक सिके को कढ़ाई में डाल कर उसके ऊपर शोरे को पीस कर चुटकियां डाली जावो लाल रंग का कुशता वन जायेगा इसको सुजाख वाले को खिलाने से फायदा होवेगा ॥२३॥

रांग की भस्म ।

अढाई तोला शोधा हुआ रांगा और अढाई तोला पारा शुद्ध पहले रांगे को गला कर उसमें पारे को मिला देना फिर उसमें आठ तोला साफ किया हुआ कलमीशोरा मिला करके खरल करें जो तीनों मिल कर एक जान होजाये फिर तिस को मट्टी के सकोरा में भर कर ऊपर ढकना देकर चार सेर जंगली कंडों की आग दे तव सव सकोरा कुशते से भर जायेगा मगर सकोरा इतना वड़ा हो जो दवाई के

डालने पर भी आधा खाली रहे और पहले पानी से इसको धो करके साफ कर देवो जिससे उसके अंदर की मट्टी गरदा निकल जाय फिर सुखा करके उसमें ऊपर वाली दवाई को पावे जब कि तैयार होजाय तब खरल में पीस कर किसी शीशी में धर दे तपेदिक वाले को और ताकत के लिये और धातु क्षीण वाले को भी फायदा करता है हर एक रोग वाले को मक्खन या मलाई के साथ एक रत्ती भर देना चाहिये ॥२४॥

चांदी का मारना ।

१ तोला भर खालस चांदी को लेकर शुद्ध करे फिर एक कागजी निंबू मोटा लेकर उसमें चांदी को रख कर कपड़ मट्टी करके सुखा कर सात सेर जंगली कंडो की आंच देवे फिर ठंडा कर निकाल कर दूसरे निंबू में उसी तरह से करके आग को देवे इसी तरह सात निंबूओं में सात बार संपुट बनाकर सात २ सेर कंडों में फूके भस्म होजायगी ताकत के वास्ते एक चावल मक्खन या मलाई में खाने से बड़ा फायदा होगा ॥२५॥

चांदी मारने की दूसरी रीति ।

दो तोला खालस चांदी को लेकर ककरोंदा

की पत्ती के रस में अर्थात् पानी में १०१ वार बनाना फिर ककरोंदा की पत्ती की आध पाव के अंदाज की नुगदी बनाकर उसमें चांदी को धरकर गोला सा बनाकर फिर उसको एक मट्टी के सकोरे में रखकर कपड़मट्टी करके सुकाके बीस सेर जंगली कंडों में तिसको फूक देना चांदी भस्म होजायगी ताकत के वास्ते मलाई में एक चावल भर रखकर सात रोज़ तक खाये लाल मिरच तेल और खटाई न खाये घृत दूध का सेवन करे बड़ा फ़ायदा होगा और जब तक इसका सेवन करे स्त्री के पास भी न जाय जिसकी धातु जाती हो उसको तीन मासा सालब मिसरी के चूरन में दो चावल भर डालकर ११ दिन तक बराबर खाये और ऊपर से अरक गावज़ुबान पांच तोला पिया करे ॥२६॥

चांदी के मारने की तीसरी रीति ।

एक तोला चांदी के पत्र को शोध करके फिर दो तोला मों फली सूकी लेकर पीस कर उसके बीच में पत्र को धर कर दो सेर कंडों की अग्नि देवे बीस दफा इसी रीति से फूकने से चांदी भस्म हो जायेगी ताकत के वासते यह भस्म बहुत उमदा है ॥२७॥

चांदी मारने की चौथी रीति।

एक तोला खालस चांदी को लेकर एक सौ एक वार खट्टे अनार की पत्ती के रस मे बुझावे फिर खट्टे अनार की पत्ती की आध पाव नुगदी वना कर उसको सकोरा में चांदी के पत्रे के नीचे ऊपर रख कर फिर संपुट वना कर एक फुट्ट मुरव्वा गढ़े में कंडों को भर कर उससें संपुट को धर करके फूंक देवे भस्म हो जायेगी ताकत के वास्ते एक तोला शहत मे सात रोज तक खाय खटाई वगैरा का परहेज करें और धातु क्षीण वाला तीन मासा सालबमिश्री में १ रत्ती मिला करके खाय मेहदा की कमजोरी वाला तीन मासा मस्तगीरूमी मे एक रत्ती मिला करके खाय बड़ा फायदा होगा ॥२८॥

चांदी मारने की पांचवीं रीति।

नीम के दरखत के फूल १५ तोला, तिली का तेल ६ मासा १ तोला शुद्ध चांदी का गोल टुकड़ा नीम के फूलों को घोट कर उनमे तेल को मिला करके गोला सा वनाओ और उस के वीच मे चांदी को धर कर संपुट वनाकर १५ या २० सेर कंडो की अग्नि में फूक देवो भस्म हो जायेगा ताकत के वास्ते

यह बड़ा अजीब है एक रत्ती मलाई में खाओ और परहेज़ सात-रोज तक करो ॥२६॥

सोने का मारना।

शुद्ध सोना१तोला लेकर उसका बुरादा बनावो फिर उसको कुठाली में पाकर उसपर चुलाई कांटों वाली की पत्ती का रस आध पाव डाल कर कोइलों की अग्नि पर रक्खो जबकि रस सूख जायेगा तब सोना भस्म हो जायेगा एक तोला शहत में १चावल भर डाल कर हर रोज़ खाने से बल बढेगा दिमाग और जिगर तथा गुरदा में भी बल बढ़ेगा ॥३०॥

सोना मारने की दूसरी रीति।

शुद्ध सोना १ तोला बकायन के दरख्त का ताजा छिलका ३ तोला दोनों को कूट कर कुठाली में धरकर आग देनें से भस्म हो जायेगा १ तोला शहत में १ चावल भर सोने की भस्म डाल करके खावो खटाई वगैरा का परहेज करो ॥३१॥

हड़ताल का मारना।

२ तोला शोधी हुई हरताल वरकिया को लेकर आध सेर कागजी निंबू के रस में खरल करो जब कि निंबू का रस सब सूख जाये तो आध सेर घी

कुवांर के रस में खरल करो सूख जाने पर टिकिश्रा बना कर छः तोला अकरवसहूक को उस टिकिश्रा के नीचे ऊपर देकर ढाक की लकड़ी की आग उसके नीचे चार पहर तक जलावो भस्म हो जायेगी खुराक १ चावल भर है मेहदा की ताकत को बढ़ाती है भूख को बहुत लगाती है ॥३२॥

नीले थोथे का मारना ।

एक तोला नीले थोथे को लेकर फिर एक नीले कपड़े को घी में तर करके उसके ऊपर लपेटो फिर उसको संपुट बना कर आग देवो भस्म हो जायेगा या बिना संपुट ही के आग लगा दें तब भी मर जायेगा आतशक वाले को १ चावल भर मक्खन में खिलावे सात रोज तक खाये और घी वाली रोटी अर्थात् चूरी खाये ॥३३॥

तांबे का मारना ।

१ डबल पैसे को शोध कर फिर तिस का बुरादा बनवा कर फिर एक मारू बैंगन पका हुआ लेवे जो कि पक करके पीला होगया हो उसको डंडी की तरफ से सूराख करके उसमें उस पैसे के बुरादे को डाल देवे और उसी बैंगन के छिलके से फिर उसको

बन्द भी कर देवे फिर उस पर कपड़मट्टी करके उ
को १५ सेर कंडों की अग्नि देवे जबकि ठंडा होजा
तब निकाल कर फिर मदार के आध सेर सब
बीज लेकर उनमें रख कर संपुट बना कर फिर १
सेर कंडों में फूंके जबकि ठंडा होजाय फिर मद
के दूध में दो पहर तक खरल करके टिकीया ब
कर १ मट्टी के सकोरे में धर कर संपुट बना क
सुकावे और ४ सेर जंगली कंडों की आग को
जबकि ठंडा होजाय तब निकाल कर फिर मदा
के दूध में तीन पहर तक खरल करके टिकीया ब
कर मट्टी के सकोरे में धर कर संपुट बना कर ६ से
जंगली कंडों में फूंक दे जबकि ठंडा होजा
निकाल कर फिर चार पहर तक मदार के दूध
खरल करे टिकीया बना कर फिर मट्टी के सकोरे
रख कर संपुट बना कर आठ सेर जंगली कंडों
फूंक दे जबकि ठंडा होजाय तब निकाल कर
देखे और खरल करके किसी शीशी में पा कर
रख दे यह कुशता सुपेद रंग का बहुत ही अच्छ
होगा जिस को नामरदी हो १ तोला भर मक्ख
में खिलावे और ऊपर से गौ के दूध और घृत क
सेवन बहुत करे सात रोज बराबर खाने से मर

हो जायगा और गंठीया वाई वाले को पान में १ तोला भर खिलायें और सिवाय गौ के घृत के और गेहूं की रोटी की चूरी के और कुछ न खाये और रात्रि को उसके बदन पर मुरगी के अंडे के तेल की मालिश करे और मालिश करके गंठीया वाली जगह पर इरंड की पत्ती और बरगद की पत्ती को ऊपर से बांध दें और सवेरे खोल दें सात रोज तक ऐसा करने से बिलकुल आराम हो जायगा यदि कुछ कसर रह जाये तब तीन हफता तक पूर्व वाली रीति से सेवन करे बिलकुल अच्छा हो जायेगा और कमर के दरद वालों और बलगमी बीमारी वालों को भी बहुत फायदा करेगा और बूढ़ों और बलगमी मिजाज वालों को भी यह बहुत सा फायदा करती है मगर बूढ़ों के लिये इसकी १ चावल से दो चावल तक खुराक है और बच्चों के वास्ते हद एक चावल तक ही इसकी खुराक है और जो मरने के समीप जमीन पर पड़ा हो और जुबान उसकी बंद होगई हो उसकी जुबान पर १ चावल के डालने से वह दो घड़ी तक बराबर ही बातों को करेगा और सफरावी मिजाज वाले को इसका १ चावल भर ही देना काफी है मगर खशारीन के

शीरा के साथ दे और दूध तथा घृत गौ का ऊपर से खूब खाये ॥३४॥

शिंगरफ का कुशता ।

उमदा शिंगरफ की १ तोला की या दो तोला की एक साबित डली को लेकर पहले उसको पूर्व वाली रीति से शोधे फिर १ मोटे मेंडक को पकड़ कर उसका पेट चीर कर उसमें उस डली को डाल कर उसको सी दे और उसके मुख और पूंछ वगैरा अंगों को भी सीकर १ गोला सा बना कर फिर गेहूं के आटे को कड़ा सान कर उसको खमीरा बना कर उसमें उसको लपेट कर सुखा लेवे फिर उसके ऊपर १ हलकी सी तह उसी खमीरे की चढ़ावे जबकि वह भी सूख जाये फिर खमीरे गेहूं के आटे की तीसरी तैह भी उस पर चढ़ा करके उस को सुखा ले जबकि खूब सूख जाये तब फिर १ सेर गौ का घृत लेकर कड़ाई में डाल कर उसको चूल्हे पर चढ़ा दे फिर उसी मेंडक को घृत में छोड़ दे और नीचे आग वाले जिस काल में मेंडक का आटा पक कर काला होजाय तब अग्नि को ठंडा करके मेंडक को कड़ाई से निकाल करके ठंडा करे

ठंडे होजाने पर ऊपर की जली हुई तैह को उतार दे फिर उसको घी में छोड़ कर फिर आग बाले जब दूसरी भी आटे की तैह जल कर काली होजाय तब फिर आग को ठंडा करके उसको कड़ाई में से निकाल कर ठंडा करके उस दूसरी भी जली हुई तैह को उतार दे फिर उसको घी में छोड़ कर नीचे आग को जलावे जब कि तीसरी तैह भी जल कर काली होजाय तब अग्नि को ठण्डा करके बुझा दे और घृत से मेंडक को निकाल कर ठण्डा करके आटे की तीसरी तैह को भी उतार दे फिर धीरे से जली हुई मेंडक से शिगरफ को निकाल कर खरल में महीन पीस कर किसी शीशी में रख छोड़ो। नामरद को १ चावल भर मलाई में देवो बलगमी मिजाज वाले को यह अति गुणकारी है खुराक इसकी एक चावल से चार चावल तक है खून को साफ करता है और पैदा भी करता है। और जली हुई मेंडक को कूट करके महीन करो और जितने तोले वह वज़न में हो उतनी रत्ती भर उस में तूतीआ को मिलाकर फिर उस में थोड़ा सा पुराना गुड़ मिला कर कूट चने के बराबर उसकी गोलियां बना लेवो आतशक वाले को १ गोली दे खुराक

चूरी खाये या घृत के साथ रोटी खाये खटाई दधि और तेल की चीज़ को न खाये सात रोज में अच्छा हो जायेगा यदि किसी को सुजाख और आतशक दोनों हों उसको भी यह गोलीयां बड़ा फायदा करेंगी ॥३५॥

अब कुछ धातुओं की उत्पत्ति का निरूपण करते हैं एक धातु कही जाति है जैसे तांबा सोना वगैरा जो हैं यह सब धातु कही जाती हैं और संखिया वगैरा जो हैं यह सब उपधातु कहे जाते हैं। उपधातु उस धातु का नाम है जोकि आग पर रखने से धूआं होकर उड़ जाये और जो आग पर गलाने से गल जाये उसका नाम धातु है। उपधातु भी दो प्रकार की होती है एक तो खान से निकलती है जैसे कि पारा वगैरा हैं दूसरी बनाई जाती है जैसे कि शिंगरफ है. उपधातु भी अनेक हैं उन में थोड़ी सी बताई जायेंगी :—

पारे का हाल।

पारा उपधातु है और यह धातु खान से निकलती है सूरत इसकी पिगली हुई चांदी की तरह होती है खान इसकी चीन देश में है और

पश्चिम के मुलक में भी है लोहे की बोतलों में इसको भर कर लाते हैं आग पर धरने से परमाणु रूप होकर उड़ जाता है और किसी बरतन में डाल कर आग पर रखने से धूआं होकर एक ही बार उड़ जाता है और हर वक्त इसमे क्रिया होती रहती है और अबरक की खान में भी कहीं २ मिलता है और पारे को हिकमत से अबरक और शिगरफ से हकीम निकाल लेते हैं इसका मारना अति कठिन है मगर बूटी के रस में मारा हुआ यह अकसीर होता है इसका वज़न सोने को छोड़ कर सब धातुओ से भारी होता है अगर इसको पानी में मिलाकर दरखत की जड़ में उस पानी को छोड़ दें तब वह दरखत सूख जाता है ॥३६॥

गंधक की उत्पत्ति ।

गन्धक भी उपधातु है और खान से निकलती है इसकी खान फ़ारस और अमान मुलक में हैं आग पर रखने से नीले रंग का अलंबा निकलता है मंद अग्नि पर पिगल जाती है और अधिक से जल जाती है तासीर इसकी गरम और खुशक है घी में मिला कर बदन पर मलने से खारश दूर होजाती है

अगर किसी रेशमी कपड़ा को चिकनाई या दाग लग गया हो तब इसका बुखार अर्थात् इसकी धूनी देने से दाग छूट जाता है इसका लेप दाद और ताप तिली को हटाता है इसके धूयें से मक्खी और मच्छर वगैरा काटने वाले भाग जाते हैं। यह चार तरह की होती है (१) लाल (२) पीली (३) सुपेदी लिये हुए पीली (४) नीले रंग वाली इन चारों मे से लाल रग वाली अच्छी होती है इसकी खान से दिन को धूआं और रात्रि को आग के भबाके निकलते हैं पीले रंग वाली को छाछीआ गन्धक कहते हैं यह दूसरी दवाइयों में मिलाई जाती है और ज़ो सुपेदी को लिये हुए पीले रंग वाली होती है उसको आंवलासार गन्धक कहते है और नीले रंग वाली विलकुल खराब होती है ॥३७॥

हड़ताल की उत्पत्ति।

इसकी खान पश्चिम के पहाड़ों में है यह भी उपधातु है आग पर रखने से धूआं होकर उड़ जाती है यह पांच तरह की होती है (१) सुपेद (२) ज़रद (पीली) (३) लाल (४) सवज़ (५) काली इन में से सुरखी लिये हुए पीले रंग की अच्छी होती है उसी

का नाम वरकीया हड़ताल है इसमें गन्धक की तरह गन्धि आती हैं सुपेद हड़ताल को गोदन्ती कहते हैं इसका मिलना ही कठिन है यह दो ही दवाइयों के काम में आती हैं वाकी की तीनों दूसरे २ कामों में आती हैं आग पर धरने से धूआं होकर उड़ जाती है तासीर इसकी गरम और खुशक है इसकी गंधि से मक्खी और मच्छर सव भाग जाते हैं इसमें चूना और मुरदासंग को मिलाकर वालों पर लगाने से वाल सव उखड़ जाते हैं उखाड़ने की जरूरत नहीं रहती है माणक रस भी इसका वनता है हरताल को पीस कर अवरक के दो टुकड़ों में भर कर उनको मिला कर फिर कोइला पर रखने से थोड़ी देर में गल करके लाल होजाती है इसी का नाम माणक रस है इसके खाने से वदन में गरमी पैदा हो जाती है जिस को सरदी की वीमारी हो उसी को यह रस फायदा करता है ॥२८॥

शिंगरफ की उत्पत्ति।

यह उपधातु है जो दो तरह की होती है एक तो खान से निकलती है दूसरी गन्धक और पारे के मेल से वनाई जाती है रग इसका लाल होता है

आग पर धरने से धूआं देकर उड़ जाती है बाजे समय यह धातु पारा चांदी और सोने की खानों में भी मिलती है उसी का नाम खानी है तासीर इसकी गरम व खुशक है और कम खाने से खून को साफ करती है अधिक खाने से बदन में फोड़े फुन्सी निकल आते हैं और बदन भी बिगड़ जाता है अच्छा वही होता है जो कि वजन में भारा हो जिस की सुपेद लीकें बड़ी २ हों ॥३६॥

संखिया की उत्पत्ति ।

यह भी उपधातु है पहाड़ों में मिलती है यह बड़ी भारी जहर है अग्नि पर धरने से धूआं हो कर उड़ जाती है इसका धूआं नेत्रों को नुकसान करता है बहुत ही कम खाया हुआ फ़ायदा करता है अधिक खाया हुआ मार डालता है तासीर इसकी भी गरम और खुशक है कुशता इसका पुष्टि कारक है इसका तेल गंठीया को दूर करता है यह धातु भी अनेक तरह की होती है [१] सुपेद [२] ज़रद [पीली] [३] लाल [४] स्याह [काली] [५] सुपेदी पर माइल [६] सबजी पर माइल । सुपेद से ज़रद तेज़ और ज़रद से लाल और लाल से काला बहुत ही

तेज़ होता है यह भी सुना है अगर काले संखिये को गौ के सींग पर लेप कर दिया जाये तब उसकी गरमी से दूध की जगह थनों से खून बहने लगता है। इस तरह से भी लोग कहते हैं कि गरम पहाड़ों में एक काले रंग का बड़ा बिच्छू होता है वह जिस काल क्रोध में आकर जिस रंग के पत्थर पर डंग मारता है वह पत्थर खिल कर उसी रंग का संखिया बन जाता है ॥९०॥

अबरक की उत्पत्ति।

यह उपधातु है इसकी खान नजीमाबाद में है अग्नि पर धरने से यह जलता नहीं, मगर फूल जाता है यह तीन तरह का होता है [१] सुपेद [२] लाल [३] काला। सुपेद सब से अच्छा होता है इसमें से निकाला हुआ पारा बहुत ही अच्छा होता है इसकी तासीर सरद और खुशक है इसका कुशता बहुत से रोगों पर चलता है और रंगसाज़ इसको कूट कर गोंद में मिलाकर इससे काम लेते हैं यह धातु साफ और चमकदार होती है कारीगर इसमें और दवाइयों को मिलाकर इसके खरल बनाते हैं वह खरल संगमरमर से भी उमदा होते

हैं और अधिक दाम पर बिकते हैं, इसके जौहर तांवे और शीशे और लोहे को भी चांदी की तरह वना देते हैं ॥४१॥

नौशादर की उत्पत्ति।

यह भी उपधातु है तीन तरह का होता है पहला खान से निकलता है इसकी खान खुरासान में है वह नमक की तरह होता है, इस देश में कम मिलता है। दूसरा गन्धक के बुखारों से बनता है तीसरा झीलों की झग्ग के पकाने से बनताहै तासीर इसकी गरम और खुशक है मगर हाज़मा होता है इससे धातुओं को भी साफ करते हैं चूरन में भी पड़ता है वदहज़मी को भी फायदा करता है इसका तेल तांवे को साफ़ करता है और दूसरी खुशक धातुओं को तेल कर देता है, और कई कामों में भी आता है ॥४२॥

सुहागा की उत्पत्ति।

यह भी उपधातु है और दो तरह का होता है एक तो खान से निकलता है इसकी खान बंगाल में और भडायच के पहाड़ों में है और दूसरा नमक और सज्जी वगैरा से बनता है यह धातु सोने

और तांबे और लोहे को भी गला देती है और दवाइयों में खाने से हाज़मा भी करती है और मल्हम में पड़कर ज़ख़्म को पकाकर मुवाद को भी निकालती है दांतों के कीड़ों को भी मारती है इसको ज़रा सा मुख में रखकर चूसने से बंद आवाज़ भी खुल जाती है। यह दो तरह का होता है एक चौकीया सुहागा और दूसरा तेलीआ सुहागा बोला जाता है ॥४३॥

शोरा की उत्पत्ति ।

यह उपधातु सरद और खुशक है यह धातु खारी ज़मीन से निकलती है, खारी ज़मीन की मट्टी को पानी में मिलाकर साफ़ करके निकालते हैं अर्थात् पहले उस मट्टी को मिला करके पानी को चुआते हैं फिर अग्नि पर पानी को सुखाने से शोरा नीचे जम जाता है यह शोरा आग पर रखने से आवाज देकर जलता है अगर किसी बरतन में डालकर आग पर रखो तो गन्धक की तरह पिगल जाता है तब इसकी कई चीज़ें बना लेते हैं, गरमी के दिनों में इस मे पानी को ठंडा करते हैं, इसका तेज़ाब भी निकलता है, गन्धक में

मिलाने से बारूद बन जाता है, इसका तेल भी निकलता है ॥४४॥

फटकरी की उत्पत्ति।

यह भी उपधातु है तासीर इसकी गरम और खुशक है आग पर धरने से खिलकर पतासा की तरह बन जाती है स्वाद इसका खटाई लिए हुए खारी है दूसरी धातुओं के साफ़ करने का भी काम देती है पीसकर दांतों पर मलने से दांत के दरद को आराम करती है, फुल की हुई जड़ई या बुखार को आराम करती है इसकी चाशनी में पहले कपड़े को डुबो कर सुखा कर फिर उसको जिस रंग में रंगो पक्का और उमदा होगा। इसकी उत्पत्ति इस तरह से कहते हैं कि पहाड़ों से पानी सा टपकता है और नीचे जम जाता है यह भी [१] सुपेद [२] गुलाबी [३] पीले रंग की होती है ॥४५॥

नमक की उत्पत्ति।

यह भी उपधातु है तासीर इसकी गरम और खुशक है। कई तरह से इसकी उत्पत्ति होती है एक तो खान से निकलता है, इसकी एक खान लाहौर से परे पिंडदादनखां से ३ कोस परे पहाड़ ही नमक

का खड़ा है वह लाहौरी कहा जाता है, दूसरा इसका पहाड़ सिंधु नदी के किनारे पर काले बाग़ों के पास है, तीसरा पहाड़ इसका कोहाट से कुछ दूर है यह खानी कहा जाता है और जो जयपुर से परे झील में से निकलता है वह सांवर कहा जाता है समुद्र के किनारे पर भी कहीं २ समुद्र का पानी जमकर नमक बन जाता है। यह बहुत तरह का होता है [१] शीशा लून [२] लाहौरी [३] सांवर [४] अंदरानी [५] काला [६] सेंधिया [७] सोंचा [८] लाल [६] नुतफी। इन में शीशा लून सुपेद अच्छा होता है और नुतफी खराब होता है। बिना नमक कोई भी भोजन अच्छा नहीं बनता, और भी बहुत से कामों में यह आता है ॥४६॥

सज्जी की उत्पत्ति।

यह भी उपधातु है असल में तो यह एक घास का अर्क है इसको इस तरह से बनाते हैं—एक गढ़ा खोद कर तिस पर उस घास को रखते हैं जिसका नाम इसनान या लानी है इस घास के ऊपर लकड़ियों को रखकर आग लगा देते हैं, आग की गरमी से अर्क निकल कर गढ़े में जम जाता है

और ठण्डा होकर पत्थर की तरह कड़ा होजाता है यह धातु मुलतान, रूम और करयान में बहुत बनती है तासीर इसकी गर्म और खुशक है यह भी कई तरह की होती है (१) सुपेद (२) स्याह (३) गुलाबी (४) ज़रदी माइल (५) सुपेदी माइल। इनमें गुलाबी सब से अच्छी होती है काली सज्जी को धोबी लोग अपने काम में लाते हैं तेल इसका गंठिया को फायदा करता है। और भी बहुत सी दवाइयों मे काम देती है ॥४७॥

बोरक की उत्पत्ति।

यह भी उपधातु है यह शोर ज़मीन में नमक की तरह पैदा होती है मगर नमक से यह धातु बहुत तेज होती है और कई जगह लाल और सुपेद पत्थर से भी पैदा होती है तासीर इसकी गर्म और खुशक है जिसके गले में जोंक महीन लपट जाय वह इसको सिरका में मिलाकर गरारे करे ज्यों निकल जायगी। यह और भी बहुत से कामों मे आती है ॥४८॥

ज़ंगार की उत्पत्ति।

यह उपधातु भी गर्म और खुशक है और

मुरदासंग की उत्पत्ति।

यह धातु भी दो तरह की होती है कली, सीसा और गन्धक से बनती है तासीर इसकी भी गर्म और खुशक है ज़हर का असर रखता है बदन पर लगाने से बदन को काला कर देता है और भी बहुत से कामों में आता है। ५१॥

कसीस की उत्पत्ति।

यह उपधातु भी दो प्रकार की होती है एक तो खानी होती है जो कि खानि में निकलती है इसकी खानें पहाड़ों में होती है खानी का रंग सुपेद होता है उसी को काही भी कहते हैं और जो बनाई जाती है तिस का रंग पीला और भूरा सा होता है अर्थात् लोहे के रंग की तरह का होता है। आग पर धरने से यह धातु मोम की तरह नरम होकर जल जाती है और बहुत सी दवाइयों के काम में आती है ॥५२॥

हीराकसीस की उत्पत्ति।

यह उपधातु खान से निकलती है इसका रंग लाल होता है तासीर इसकी गर्म व खुशक होती है नाक के जखम को फायदा करती है कान के

ड़ों को दूर करती है अग्नि पर जला कर इसका
ंत का मंजन भी बनता है इसका तेल दांतों को
ड़ा करता है ॥५३॥

रसकपूर और दालचिकना।

यह दोनों उपधातु हैं और बनाई जाती हैं ब्रान से यह नहीं निकलतीं । पारा और संखिया को मिला कर बनाते हैं सूरत और वजन दोनों का बराबर होता है और रंग भी दोनों का सुपेद ही होता है मगर रसकपूर अधिक सुपेद होता है तासीर इसकी गर्म व खुशक होती है और जहर का असर रखती है इसको पीतल या तांबे के बरतन पर मलने से सुपेद कलई की तरह होजाती है और आग पर रखने से धूआं बन कर उड़ जाती है॥

मैनसल की उत्पत्ति।

यह भी उपधातु है इसका रंग पीला होता है तासीर इसकी गर्म व खुशक है और जहर का असर भी इसमें थोड़ा सा है प्रायः करके यह दूसरी दवाइयों में काम देती है ॥५५॥

सिंधूर की उत्पत्ति।

यह उपधातु दो तरह की होती है एक तो

खान से निकलती है दूसरी बनाई जाती है, शीशा और गन्धक वगैरा उपधातुओं के मेल से बनता है तासीर इसकी गर्मो खुशक है यह सोने को भी जला देता है अगर सिंधूर के साथ सोना रक्खा जाये तब खुशरंग रहेगा मुलम्मे में भी पड़ता है कपड़े के रंगने में भी काम आता है इसको अलसी के तेल में पका कर बरसाती रोगन बनाते है, देवी के उपासक इसका तिलक भी लगाते हैं ॥५६॥

लाजवरद की उत्पत्ति ।

यह धातु भी दो तरह की होती है एक तो खान से निकलती है जो पत्थर की तरह होती है दूसरी अण्डे की छाल की बनती है तासीर इसकी गर्म है और नकाशी के काम में भी आती है इसको पानी में धो कर सुरमा में डालते है तो नज़र को बढ़ाती है ॥५७॥

अब हम फिर उपधातुओं के मारने की थोड़ी सी रीतियों को लिखते हैं क्योंकि मरी हुई असली धातु में भारी गुण होता है:—

पारा मारने की विधि ।

यह धातु मरने में बड़ी कड़ी है क्योंकि आग

में यह ठहरती नहीं है किन्तु तुरन्त ही उड़ जाती है तब भी इसके मारने की रीति को यहां पर लिखते हैं, सुपेद मूली को लो जोकि तोल में १ सेर हो उसको बीच में से काट कर फिर चाकू से उसको खोद कर एक तोला पारा को शोध कर उसमें भर कर ऊपर उसके उसी खोदे हुए मूली के गूदे को भर दो फिर टाट को उस पर मज़बूत लपेट कर संपुट बना कर सुखा दो और संध्या को तेज़ गर्म भटसाई के रेता में इस मूली को दबा दो सवेरे ठंडा होजाने पर निकालोगे तो पारा मर कर खिल जायेगा मगर बन्द अच्छी तरह से किया जाये ॥५८॥

सुपेद हड़ताल का मारना।

सुपेद हड़ताल का नाम गोदन्ती हड़ताल है तोला सुपेद हड़ताल को लेकर १ छटांक कटेली की पत्ती की नुगदी मे रखकर फिर दो बड़े २ जंगली गोहे लेकर बीच मे तिसके रखकर आग लगा दो सुपेद कुशता हो जायगा खुराक इसकी चावल से १ रत्ती तक है पान या मलाई में सात रोज़ तक देने से खांसी को आराम होजाता है

और २१ दिनों तक खाने से दमा दूर होजाता है तीन दिन खाने से बुखार दूर होजाता है चाहे नया हो या पुराना। दूसरी रीति इसके मारने की यह है कि चीचड़ दरख्त की राख को एक हांडी में भर दो और तिसके बीच में १ तोला सुपेद हड़ताल की डली को रखकर दवा दो ऊपर उसके खूब राख दे कर हांडी का मुंह बन्द कर दो और हांडी को चूल्हे पर रखकर नीचे तिसके एक घण्टा बेरी की लकड़ी की आग जलाओ फिर ठण्डा करके निकाल लो मर जायगी। तीसरी आसान रीति को लिखते हैं १ छटांक नीम की पत्ती को कूटकर नुगदी बनाकर उस में १ तोला सुपेद हड़ताल को रखकर एक सेर कंडों में फूंक दो राख हो जायगी ॥५६॥

पीली हड़ताल का मारना।

१ तोला हड़ताल वरकिया या तबाकिया को लेकर १ छटांक चोपत्तीया बूटी की नुगदी बना कर आधी नुगदी का रस निकाल कर उसमें ४ मासा हड़ताल को डाल कर रात भर भीगा रहिने दो आधी नुगदी मे हड़ताल को पीस कर मिला दो और फिर गोली बनालो और कोइलों की आग पर

तिस को रखो जिस तरफ से आग को खाकर गोली सुपेद होती जाय उस तरफ से फिराते जाओ जब सब तरफ से गोली सुपेद होजाय तो उतार कर ठण्डा कर लो मगर इस बात का ख्याल रखना कि गोली का जलकर बुखार न निकले बुखार निकलने पर खराब हो जायगी। यह चौपत्तिया बूटी प्रायः नालों और पानी के किनारे पर होती है इस की बेल जाल की तरह फैली रहती है और चारों पत्ते इसके मिले हुए होते हैं। दो चावल भर हर रोज मलाई में खाने से बल को बहुत बढ़ाती है।

दूसरी रीति—एक तोला हड़ताल को एक मट्टी के सकोरा में डालकर संपुट बनाओ मगर उस में एक बारीक छिद्र रख लेना संपुट को सुखा कर आग पर रक्खो जब तक छिद्र से काला धूआं निकलता रहे तब तक आग पर रहने दो जब सुपेद धूआं निकलने लगे तो उतार कर ठण्डा करके रख लो॥

शिंगरफ का मारना।

चार सेर लाल मिरच की लकड़ियों को लेकर जला कर उन की राख बना लो फिर तिसको एक हांडी में भर कर बीच में तिसके ४ तोला शिगरफ की डली को दवाकर रक्खो उस हांडी

को चूल्हे पर रखकर नीचे तिसके ५ सेर बेरी की
लकड़ी को जलाओ मगर अग्नि मंद २ रहे ज
सब लकड़ियां जल जायें तब ठण्डा करके निका
लो सुपेद रंग का कुश्ता बन जायगा। २१ दि
तक १ चावल भर पान में खाने से बल को बढ़ा
है। दूसरी रीति—१ तोला शिंगरफ को मदार
दूध में खरल करके गोली बनाकर फिर आध पा
घी कुआर के गूदे को मट्टी के सकोरे में डालक
उस में शिंगरफ को रखकर संपुट बनाकर ६ से
बन कंडों की आग में फूंक डालो कुश्ता ब
जायगा ॥६१॥

संखिया का मारना।

१ तोला संखिया सुपेद को लेकर ५ से
हरमल की लुगदी बनाकर उस में संखिये क
डली रखकर फिर तिसको कपड़ मट्टी करके फि
६ सेर जंगली कंडों की आग में फूंक दो ज
आग ठण्डी होजाय तो निकाल कर देखो कुशत
बन जायगा। आतशक और गंठिया वाले क
एक चावल भर हर रोज खाने से आराम ह
जाता है ॥६२॥

दूसरी रीति—सुपेद प्याज़ का एक बड़ा मोटा गंठा लेकर उसके भीतर से गूदे को निकाल कर उस में तीन माशे संखिये की डली को रखकर फिर २ रत्ती कलमीशोरे को उस में भरकर फिर उसी निकाले हुए गूदे को उसमें भरकर बंद करके संपुट बनाकर दो सेर जंगली कंडों की आग देवे से भस्म हो जायगा ॥६३॥

तीसरी रीति—२ या ६ माशे की संखिये की डली को लेकर एक मोटे मारू बैंगन को एक तरफ से काटकर उस में डली को रखकर फिर उसी काटे हुए टुकड़े से बन्द करके बैंगन को आग पर भूनो जब भुन जाय ठण्डा करके डली को निकाल कर दूसरे बैंगन में उसी तरह से करो इसी तरह सात बैंगनों में करने से संखिया मर जायगा ॥६४

चौथी रीति—पहले पाव भर कलमीशोरा को किसी लोहे के बरतन में छोड़ कर आग पर रख दो और एक आग का कोइला भखता हुआ शोरा में डाल दो कोइला के पड़ने से सब शोरा गल कर जम जायेगा अब उस शोरा को ठंडा करके निकाल कर उसी के बराबर नौशादर को पीस कर उसमें मिला दो और रख छोड़ो फिर लोहे की कड़ाई में

एक तोला संखिआ को धर कर उसके ऊपर उस पीसे हुए शोरा को इतना डालो जितने में डली ढक जाये फिर कड़ाई के नीचे बराबर मेल की आग को जलाओ जोकि न अति तेज़ हो और न अति मंद ही हो थोड़ी देर में संखिआ फूलेगा और ऊपर वाली दवा फटेगी तब उसकी जिस दरार से धूआं निकले उसी मसाले से उस दरार को बंद करते जाओ जब डली का फूलना बंद होजाये तब ठंडा करके निकाल लो सब संखिआ खिल जायगा फिर खरल में पीस कर रख छोड़ो आतशक वाले को और जज़ाम वाले को ऊपर वाली रीति से दो ॥८५॥

सुपेद अबरक का मारना ।

आध पाव अबरक को कैंची से काट कर छोटे २ टुकड़े कर लो फिर एक पाव भर कलमी शोरा को लेकर पीस कर उसमें पाव भर काले गुड़ की राब को लेकर उसमें शोरे को मिला कर फिर एक छोटी सी हंडिया में थोड़ा सा शोरा डाल कर उस पर अबरक के टुकड़ों को जोड़ कर फिर उनके ऊपर शोरा फिर अबरक इसी तरह से भर कर

कपड़ मट्टी करके ६ सेर कंडों में फूंको फिर ठंडा करके इसी रीति से तीन वार बरावर ही फूंको फिर निकाल कर पीस कर रख दो। यह कुशता सुज़ाक और जिगर की कमजोरी तथा सिर दरद और पुराना बुखार इन सबको फ़ायदा करता है। दूसरी रीति यह भी है जो राव की जगह मूली के पत्तो का अरक़ शोरा में मिलाया जाता है। तीसरी रीति यह है वाथू के साग का अरक एक बरतन में डाल कर फिर अबरक के टुकड़ों को उसमें डाल दो फिर बरतन के मुख को ढांप कर १ सेर कंडों में फूंकों, चालीस दफा इस तरह फूंकने से यह कुशता बहुत उमदा बनेगा यह कुशता आतशक वाले को सुज़ाक वाले को पुराने बुखार और खांसी तथा खूनी बवासीर को भी फ़ायदा करता है दो रत्ती पतासा मे डाल कर शरबत बनफ़शा के साथ इसको खाये खटाई दधि न खाये ॥६६॥

तांबा मारने की विधि।

१ तोला हरताल १ तोला तांबा ५ तोला असगंध एक सकोरा में, नीचे तांबा ऊपर हरताल उसके ऊपर असगन्ध को धर के संपुट बना कर

गजपुट की अग्नि देने से भस्म हो जायेगा। १ चावल भर पान में खाने से पुष्टि करता है ॥६७॥

वसंत मालनी ।

हरताल असगंध और सोना तीनों को ऊपर वाली विधि के साथ मारने से वसंत मालनी बन जाती है ॥६८॥

रूपरस का बनाना ।

हरताल असगंध और चांदी इन तीनों को ऊपर वाली विधि के साथ मारने से रूपरस बन जाता है ॥६९॥

गोदन्ती की विधि ।

५ तोला गोदन्ती हड़ताल को लेकर मदार के दूध में आठ पहर तक भिगो दें फिर संपुट बना कर गजपुट में फूंक दें अथवा भांग और हलदी को नीचे ऊपर धरके फूंक दें खुराक इसकी १ चावल भर पान के साथ ॥७०॥

नाग केसर की विधि ।

५ तोला शीशा को भांग में धर कर फिर पीपल की छाल में लपेट कर संपुट बना कर गजपुट में फूंक दें ॥७१॥

रूपरस की विधि।

२ तोला चांदी ४ मासा सोना मक्खी कुकरोंधा के रस के साथ खरल करके चांदी पर लेप करो सूख जाने पर घमिरा के रस का तिसपर लेप करो फिर संपुट वना कर गजपुट की अग्नि एक पहर तक वरावर दो तब रूपरस सिद्ध हो जायेगा १ चावल भर इसको खाये बहुत सा फायदा होगा ॥७२॥

उपधातुओं के हाल को पीछे लिख आये हैं अब धातुओं के हाल को लिखते हैं हकीमों ने असली खानों से निकलने वाली सात ही धातु मानी है [१] सोना [२] चांदी [३] तांवा [४] लोहा [५] जस्त [६] सीसा [७] कलई यह ही सात हैं और पीतल फूल जरमनी चांदी वगैरा असली नहीं हैं क्योंकि यह मिलावट से वनती हैं अब इनमें से पहले सोने के हाल को लिखते है ॥७३॥

सोने का हाल।

यह धातु सब धातुओं से वजन में भारी होती है और पवित्र तथा उत्तम भी मानी जाती है तासीर इसकी गर्म है दिल को ताकत देती है और इसको मुख में रखने से खफ़गान और वहम दूर होजाता

है यदि एक तोला सोना को एक बड़ी हरड़ की तरह बनवाके मुख में रख कर फिर धीरे २ मूंह के लुआब को चूसने से मुख की दुर्गन्धि दूर होजाती है और विसवास को भी फायदा पहुंचता है और सोने का पत्र सुरमा में डालने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है इसके उत्तम २ ज़ेवर बनते हैं फिर इसका वज़न भी दूसरी धातुओं से भारी है आग पर धरने से कमती भी नहीं होता । इसको न तो ज़ंग ही लगता है और न इसको मट्टी ही खाती है इसमें और भी बहुत से गुण हैं ॥७४॥

चांदी का हाल ।

चांदी सोने से दूसरे दरजा की है इसके भी ज़ेवर वगैरा बनते हैं अमीर लोग इसके बरतन भी बनवाते हैं और उनमें खाते पीते हैं जल के धोने से ही उनको पवित्र मानते हैं, यह वज़न में सोने से हलकी होती है और सोने से मुलायम भी होती है और यह आग में रखने से सोने से शीघ्र पिगल जाती है मगर बहुत गलने से घट भी जाती है इसके पत्र भी मुरब्बों के साथ खाये जाते हैं सुरमा में भी पड़ते हैं और भी इसमें बहुत से गुण हैं ॥७५॥

तांबे का हाल।

यदि इस में खटाई डाली जाय तो ज़िंगार पैदा होजाता है अगर दाधि और कुचला को इस में मिलाओ तो नीलाथोथा पैदा होजाता है तांबा का ज़ंग इस तरह से दूर होता है नमक, अकरकरा, फटकरी सब को बराबर लेकर पीसकर सिरका में खूब मिलाकर उसी सिरका में तांबे को पुनः २ तपा कर डोबने से जंग उतर जाता है और गेरू को तांबा पर मलने से तांबे का रंग उमदा होजाता है और इस में संखिआ और जस्त के डालने से यह खराब होजाता है ॥७६॥

लोहे का हाल।

लोहे को खारी जमीन में या नमक में रखने से इसको जंग लग जाता है और ज़ंग इसको खा कर मट्टी कर देता है और इसका ज़ंग एक तरह का तेज़ाब और कपड़ों पर एक तरह का उमदा रंग होता है। इसका ज़ंग इस तरह दूर होता है कि तेल को लगाकर लोहे की छुरी से खुरच डालो ॥

कलई का हाल।

यदि इसे में पारा अधिक मिलाओ तो चूरन

सा बन जायगी अगर थोड़ा मिलाओ तो सखत हो जायगी फिर आग पर गर्म करने से पारा उड़ जायगा और कलई रह जायगी ॥७८॥

अब थोड़ा सा भारी २ दाम वाले पत्थरों का हाल लिखते हैं :—

जवाहरात का पत्थर ।

यह खान से निकलता है और सुपेद रंग का होता है और बड़ा चमकदार भी होता है और पत्थरों से भारी भी बहुत होता है सखत भी बहुत होता है और दाम में भी बहुत मँहगा होता है यह लोहे के किसी भी हथ्यार से नहीं टूटता, मगर शीशा से टूट जाता है कहते हैं कि हीरे को हीरा ही काटता है तासीर इसकी गर्म और तर है ताकत वर भी है और जहरीला भी है इसको चूसने से आदमी मर जाता है सोने पर यह आशक है अर्थात् उसके साथ चपट जाता है इसी की कनी से शीशे काटे जाते हैं अगर इसको पहले धूप में रख कर फिर अंधेरे में ले जाओ तो आग के अंगारा की तरह चमकता है यह कई तरह का होता है सुपेद ज़रद और आबी मगर सुपेद सब से उमदा और

बढ़िया होती है ज़रद दूसरे दरजा का होता है श्रावी नरम होती है इसकी खान भनापना में है इसमें और भी बहुत से गुण हैं ॥७६॥

ज़मुरद का हाल ।

यह पत्थर भी सबज़ रंग का चमकीला और बहुत साफ़ होता है और हीरा से दूसरे दरजा पर होता है इसके प्याला में जोकि शराब को पीते हैं उनको बहुत सा नशा चढ़ता है इसके तरह २ के सब्जे और ज़ेवर वगैरा बनते हैं जिन को अमीर और राजा लोग पहनते हैं इसकी तासीर गर्म है और यह पत्थर भी ज़हर है मगर जिस ने ज़हर खा ली हो उसको इसका पानी में धोकर देना फ़ायदा करता है इसकी अंगूठी पहनने से मिरगी और बवासीर वाले को फ़ायदा पहुंचता है इसका कुशता दस्तों को रोकता है उमदा ज़मुरद वह होता है जोकि सांप के सामने रखने से सांप की आंखें पानी होकर बह जायें यह बड़े दाम का होता है चांदी की खान से निकलता है ॥८०॥

याकूत का हाल ।

यह पत्थर भी बहुत कीमत वाला होता है

इसका रंग लाल होता है तासीर इसकी गर्म और खुशक होती है और बड़ा सखत भी होता है लोहा इस पर असर नही कर सकता आग पर रखने से तड़पता नहीं बल्कि इसका रंग बढ़ जाता है इसके नगीने बनते हैं इसमें भी बहुत से गुण हैं ॥८१॥

फिरोज़ा का हाल।

यह पत्थर भी बड़े दाम पर बिकता है इसका रंग आसमानी होता है तासीर इसकी गर्म व तर है इसकी खान खुरासान में है। जब हवा साफ चलती है तब इसका रंग भी साफ होजाता है जब हवा खराब चलती है तो इसका रंग भी खराब होजाता है। इसका सुरमा नेत्रों को ताकत देता है। इसका नगीना बनवाकर और अंगूठी में लगवा कर जो गर्भवति स्त्री पहरती है तिसका गर्भ नही गिरता है ॥८२॥

नीलम का हाल।

यह पत्थर भी बहुत कीमत वाला होता है रंग इसका नीला और साफ होता है खानें इसकी बहुत सी जगह कशमीर, शिमला और दक्षिण वगैरा में हैं। इसके नगीने ज़ेवरों में लगाये जाते

हैं। यह सुपेद भी होता है मगर वह सस्ता विकता है इस काल में इसके तीन रंग प्रायः दीखते हैं (१) नीला (२) सबज़ी लिये हुए नीला (३) स्याही लिये हुए नीला ॥८३॥

पुखराज।

पुखराज ज़रदी लिए आबी की तरह होता है और सब गुण इसके नीलम की तरह ही होते हैं ॥८४॥

लहसनीया पत्थर।

यह पत्थर लहसन के रंग का होता है और इस पर पतली २ जिनों की तरह लकीरें भी होती हैं हिंदू लोग इसको पवित्र जानते हैं और इसके नगीने के पहनने का फल भी कुछ मानते हैं ॥८५

चिशमा पत्थर।

यह पत्थर कई रंगों का होता है और हर एक पर आंख की तरह गोल सा चिन्ह होता है किसी २ पर दो चिन्ह भी होते हैं और ऐसा भी लोग कहते हैं कि यह नगीना जिसके पास होता है लोग उसकी इज्ज़त करते हैं ॥८६॥

अकीक पत्थर।

यह पत्थर थोड़ी कीमत वाला होता है और अच्छा वह होता है जोकि यमन से आता है यह सुपेद, ज़रद, लाल और चित्र रंगों वाला होता है अर्थात् वहुत तरह का होता है तासीर इसकी गर्म है यदि इसके नग की अंगूठी को पहन कर कोई दुशमन के पास जाय तो दुशमन का क्रोध जाता रहता है। इसकी राख फोले को दूर करती है इस को पास रखने से आदमी का दिल प्रसन्न रहता है अगर किसी अव्यव से खून जारी हो तो वन्द होजाता है ॥८७॥

विलोर के पत्थर का हाल।

यह पत्थर सुपेद और चमकीला तथा सखत भी होता है इसकी खानें इसी देश में वहुत सी जगह में हैं और दिल्ली के पास भी एक पहाड़ी से निकलता है इसके भी नगीने वनाये जाते हैं और ऐनकों के काम में भी आता है इसकी ऐनक ठंडी होती है और नेत्रों की नज़ीर की रक्षा भी करती है। उमदा विलोर को धूप में रक्खो और रुई को पास रख दो तो वह रुई को अपनी तरफ खेंचेगा ॥८८॥

मोती का हाल।

मोती सुच्चा गोल और सुपेद होता है तासीर इसकी गर्म है मगर ताकतवर है इसकी खान समुद्र है अधिकतर यह लंका के समुद्र में ही होता है और मानसरोवर की झील से भी निकलता है। सीप नाम वाला एक जीव समुद्र में रहता है स्वाति नक्षत्र के वर्षा की बूंद उसके पेट में जाकर मोती बन जाती है उमदा मोती वही होता है जो बड़ा और गोल हो चमक जिस की ऐसी हो कि आंखों की पुतली उसमें दिखाई पड़े वही अधिक दाम पर विकता है और छोटे २ सुच्चे मोती माजूनों में और आंख के सुरमा में पड़ते हैं और जेवरों के भी काम में आते हैं एक तरह का काला मोती भी होता है उसका नाम काग मोती है साफ करने से वह भी सुपेद होजाता है और वह भी बड़ी कीमत वाला होता है और एक मोती हाथी के मस्तक से भी निकलता है उसका नाम गजमुक्ता है वह बहुत बड़ा होता है और जरदी को लिये हुए होता है यह सब से भारी कीमत वाला होता है और सूअर की दाढ़ में से भी एक मोती निकलता है उसका नाम बराह मोती है ॥८६॥

मूंगा का हाल ।

यह भी एक किसम का पत्थर है जो लाल रंग का और सखत होता है समुद्र में घास की तरह पैदा होता है इसकी शाखों को काट कर मूंगा बनाते हैं तिस की माला बनती हैं इसकी तासीर गर्म और खुशक है वीर्य को गाढ़ा करता है इसकी भस्म सुपेदी को लिये हुए लाल रंग की होती है बल को पैदा करता है दिमाग़ को ताकत देता है इस का सुरमा नेत्रों को फ़ायदा करता है । यह दो तरह का होता है एक तो असली होता है दूसरा बनावटी होता है असली में ही सब गुण होते हैं ॥

यशात का पत्थर ।

यह पत्थर सुपेद आबी रंग का चमकदार होता है इसकी खान काबल के देश में है और हिंदुस्तान में कहीं २ पैदा होता है तासीर इसकी ठण्डी है इसका खाना खफ़गान को और हौल दिल को फ़ायदा करता है जिसको हौल दिल की बीमारी होती है वह इसको दिल पर लटकाता है उसको बहुत फायदा करता है विश्वास को भी फ़ायदा करता है ॥६१॥

सोनामखी ।

(६) यह उपधातु कई एक तरह की होती है सोनामखी, रूपामखी, तांबामखी, लोहामखी, माघनमखी । इनमें से सोनामखी एक लाजवरदी रंग का पत्थर होता है जिसमें सोने की तरह धारियां होती हैं इसमें गन्ध मिली हुई होती है आग पर रखने से जल कर आटा सा होजाती है तासीर इसकी ठंडी है सुरमा इसका आंख की सब बीमारियों को फायदा करता है ॥६२॥

रूपामखी ।

यह पत्थर सुपेद होता है मगर ज़रदी को लिये हुए होता है इसकी तासीर सोनामखी के ही बराबर है अगर इसके कुशता को ज़रा सा तांबे या सीसा को पिगला कर उसमें छोड़ दें तो उनको चांदी की तरह बना देता है इसको बच्चों के गले में लटकाने से उनका डर दूर होजाता है बालों पर लगाने से बालों को नरम और मुलायम करता है इसका खाना गुरदा की दरद, बवासीर और धातु क्षीण को भी फायदा करता है॥६३॥

मिकनातीस का हाल ।

मिकनातीस का नाम चुंबिक पत्थर भी है

यह पत्थर उत्तर के पहाड़ों में पैदा होता है और
तीन तरह का होता है (१) लाल (२) भूसला (३)
लाजवरदी तीनों में लाजवरदी बहुत अच्छा होता
है और लाल बिलकुल खराब होता है इसमें लोहे
को खैंचने की शक्ति रहती है यह दूरसे लोहेको अपनी
तरफ खैंच लेता है यदि लोहे का वजन इसके वज़न
से भारी हो तो नहीं खींच सक्ता और बहुत दूर से
भी यह लोहे को नहीं खींच सक्ता। हिंद के हकीम
इसकी तासीर को गर्म बताते है यूनान के हकीम
इसकी तासीर को गर्म और मोतदिल बताते है
इसके कुतुबनुमा और किबलानुमा भी बनते है
और बहुत से तमाशों और कलों में भी काम आत
है। समुद्र के पानी में डूबे हुए इसके पहाड़ कई
एक जगह में हैं इसी वास्ते जहाज़ों के नीचे तांबे
और पीतल की चदरों को लगाते है और पीतल
के कांटों से उनको जड़ देते हैं। यह पत्थर बहुत
सी दवाइयों में भी काम देता है ज़हर लगे हु
लोहे से अगर किसी को ज़खम होजाय तो इसक
पीस कर उस पर लगाने से अच्छा होजाता
अगर कोई सूई को खा गया हो तो इसको उस
पेट पर फेरने से अच्छा होजाता है। इसका पीन

फालज वगैरा रोगों को भी दूर करता है ॥ ६॥

करंड पत्थर का हाल

यह पत्थर भूरे रंग का लाली लिये हुए होता है और बड़ा कड़ा होता है और इसको पीस कर लाख में मिला कर पत्थरी और सान चाकू वगैरा के तेज करने के लिये बनाते हैं पतंग उड़ाने वाले इसका मांझा बनाते हैं इस पत्थर की एक ही टुकड़े की लाठ दिल्ली में कोटला फीरोज़शाह में बनी हुई है तिस पर प्रायः करके लोग चाकू छुरी को तेज करते हैं। तासीर इसकी गर्म और खुश्क है इसका सुरमा नेत्रों को फ़ायदा करता है चूचीयों और खुसीयों पर इसको महीन पीस कर मलने से वह बढ़ने नहीं पाते । इसको जला कर दाद पर लगाने से दाद अच्छा होजाता है और जली हुई जगह पर मलने से वह तुरंत अच्छी होजाती है ॥

सिप्पी के हाल का निरूपण ।

इसके दो परत होते हैं समुद्र में एक किसम का कीड़ा पैदा होता है जिस को कुत्ते ने काटा हो वह इसके मांस को खाने से अच्छा होजाता है इसके दोनों परत इस जानवर की हड्डियां हैं यह अंदर से

चांदी की तरह चमकदार होता है इसके जेवर भी बनते हैं यह समुद्र में रहता है परन्तु जब स्वाति नक्षत्र का पानी बरसने लगता है तब पानी के ऊपर आकर मुख को खोल देता है ज्यों ही स्वाति की बूंद इसके मुख में जाती है त्यों ही मुख को बंद करके नीचे बैठ जाता है वह मोती बड़े दाम वाला बन जाता है इसके बुरादे को नेत्रों में डालने से ढलका जाता रहता है इसको पीस कर सिरका में मिला कर नाक में टपकाने से नकसीर बंद होजाती है इसको जला कर खाने से बवासीर को फायदा पहुंचता है मगर कब्ज है। जहां पर बालों को उखाड़ कर इसकी राख लगाई जाये फिर वहां पर बाल पैदा नहीं होते। यदि इसके टुकड़े को कपड़े में बांध कर बच्चा के गले में लटका दिया जाये तो दांतों के निकलने से बच्चे को दुख नहीं होता ॥६६॥

सिप्पी का चूना

इसकी तासीर गर्म है मगर कबज़ी को खोलता है और मामूली चूना से इसमें अधिक ताकत है नाक में इसको डालने से नकसीर बन्द होजाती है ॥६७॥

हड्डियों के चूने के गुण।

इसकी तासीर गर्म और खुश्क है नासूर पर मलने से फायदा होता है और गले सड़े ज़ख़्मों पर भी इसका लगाना फ़ायदा करता है इसके चूने में आग भी होती है और आतशीशीशे में रखकर इसको खचो तो एक औषधि अग्नि रूपक नाम वाली निकल आती है अंग्रेज़ी में इसका नाम फास्फोरस है अगर इसको पानी में रखो तो आग नहीं निकलेगी नहीं इसमें से आपसे आप आग निकल आती है ॥६८॥

मामूली पत्थर का चूना।

इसकी तासीर गर्म है और नेत्रों को नुकसान करता है जीते चूना में अग्नि रहती है पानी डालने से वह निकल जाती है पानी में घोलने से थोड़ी देर पीछे यह नीचे बैठ जाता है इस में जिस उप-धातु को रक्खो वह कुशता और क़ायम हो जाती है खाना इसका नुक़सान करता है अगर किसी को ज़हरीला जानवर काटे तो उस जगह पर इसका मलना फ़ायदा देता है अगर कपड़े या काग़ज़ पर चिकनाई का दाग लग जाय तो इसको लगाकर

उसको थोड़ी देर धूप में रखकर फिर धोने से दाग छूट जाता है। इसमें खार बहुत होती है चाहे कैसी मैली चीज़ हो उसको साफ़ कर देता है ॥९९॥

खड़िया मट्टी का हाल।

यह चिकनी और चमकीली होती है तासीर इसकी सरद और खुशक है हेजा, के, मतली वगैरा को फायदा करती है। इसको लोग सुपेद रंग भी बनाते हैं और लड़के इस से तख़्तियों पर भी लिखते हैं सुनार इसकी कुठाली बनाकर उस में सोना वगैरा को गालते हैं ॥१००॥

गेरू का हाल।

यह मट्टी बंगाल वगैरा देशों में पैदा होती है तासीर इसकी गर्म है यह कई तरह की होती है दरजा पहला, दरजा दूसरा और दरजा तीसरा। पहले दरजा की वह होती है जो कि पानी में डालने से फूल जाती है अगर इसको हाथ पर लगाकर ऊपर इसके मेंहदी लगाओ तो रंग बहुत ही उमदा होजाता है और २० दिनों तक पका भी रहता है इसका पीना बुखार को फायदा करता है मिलहम में इसको मिलाकर लगाना ज़खम को पकाता है

और ववासीर के मसों को दवाता है खारश को भी फायदा करता है ॥१०१॥

मुलतानी मट्टी ।

यह मट्टी मुलतान से बहुत निकलती है रंग इसका ज़रद और सुपेदी को लिए हुए होता है तासीर इसकी सर्द और खुशक है मलना इसका वुखार को फायदा करता है पीना इसका खून जारी को बन्द करता है इसको तेल मे मिलाकर वदन पर मलकर नहाते हैं और इस से सिर भी धोते हैं ॥१०२॥

मरी हुई धातु की परीक्षा ।

जो धातु आग पर रखने से धूआं होकर उड़ जाती है जैसे शिंगरफ, हड़ताल, संखिया वगैरा उपधातु है इनको जब भस्म कर चुको तो इस तरह से इनकी परीक्षा करो:—भखते हुए कोइला पर एक चावल भर डालकर देखो यदि उसका धूआं निकले तो वह कच्ची है जिसको मत खाओ यदि धूआं न निकले तो जान लो कि यह मर गई है और तांबा वगैरा जो धातु हैं वह कोइला पर डालने से धूआं नहीं देती इस लिए उनकी

परीक्षा इस तरह से होती है कि पानी का ग्लास भर कर तिसके ऊपर तांबा वगैरा की ज़रा सी राख को डालो और तिसके ऊपर गेहुं के दाने छः सात रख दो यदि वह दाने तरने लग जायें तो समझ लो कि मर गई है अगर दाने नीचे बैठ जायें तो जान लो कि कच्ची है। कच्ची धातु के खाने से शरीर रोग-ग्रस्त होजाता है इस लिए परीक्षा करके ही खाना अच्छा होता है। मारी हुई धातु जितनी पुरानी हो उतनी ही गुणकारी होती जाती है ताज़ी मारी हुई गर्म होती है। सब धातु [कुशते] सरदी के दिनों में ही खाई जाती हैं क्योंकि गर्म होती हैं मगर कलई और सीसा ठण्डा होता है यह दोनों गर्मी में भी खाई जाती हैं ॥१०३॥

मृगांक का बनाना।

पारा, रांगा, गन्धक, नौशादर सब को बराबर लेकर पहले रांगा को गाल कर इसमें पारा को मिलायं और खूब खरल करे जब एक हो जायें तो गंधक और नौशादर भी उस में डालकर खरल करो फिर सब को एक चीनी की दवात में डालकर आग पर रखो मगर उसका धूआं शरीर को न

लगने पावे इस में से सुपेद धूआं निकलेगा जब सुपेद धूआं निकलना बन्द हो जाये तो अग्नि को भी बन्द कर दो और ठण्डा करके दवात से निकाल कर तिसको रख छोड़ो जिस बीमारी पर रोगी को खिलाओगे वह बीमारी जाती रहेगी ॥२०४॥

इति स्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधिरेण
विरचिते 'गुणों का खजाना' नामक
ग्रन्थे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

तीसरा अध्याय।

इस तीसरे अध्याय में उन चीज़ों के बनाने की
रीतियों को लिखते हैं जिनको बनाकर पुरुष
जीविका के लिए रुपये कमा सकता है
और कई प्रकार की वस्तुओं का बनाना
भी जान सकता है यदि चाहे तो
दूसरों को सिखाकर उपकार भी
कर सकता है ॥

बाल उड़ाने का साबुन।

दो तोला बीरमसैलफाइड को २० तोला पानी में रात्रि को भिगो कर सवेरे नितार लें फिर उस में १ तोला काष्ठ सोडा मिलाकर अग्नि पर गर्म करें जब खूब मिल जाय तो उतार कर सांचे में ढाल दें साबुन बन जायगा ॥ १ ॥

साबुन का बनाना।

सोडा काष्ठा १ तोला पानी ४ तोला गरी का तेल ४ तोला मिलाकर उस को आग पर रखो जब खूब मिलकर हलवा की तरह होजाय तो उता

कर सांचे में भर दो यदि सुगन्धि वाला बनाना हो तो जिस सुगन्धि वाले अतर को गरी के तेल में मेलावेंगे वैसा ही साबुन बन जायगा ॥२॥

देसी साबुन ।

१ सेर सज्जी १ सेर चूना कली अर्थात् पत्थर का जीता चूना दोनो को किसी बरतन में डालकर ४ सेर पानी उस में डाल दो एक दिन और दो रात भीगा रहने दो फिर उसका पानी लेकर उस को आग पर चढ़ा कर १ सेर सरसों का तेल उस में मिलाकर पकावें मगर हिलाते रहें जब गाढ़ा हो जाय तो उतार कर किसी थाल में जमाकर कतलियें काट कर सुखा लें ॥ ३ ॥

साबुन की दूसरी रीति ।

१ सेर सोडा काष्टा को कड़ाई में डालकर उस में ५ सेर पानी डाल दें जब वह गल जाय तो उस में ५ सेर तिलों का तेल मिलाकर पकावें जब गाढ़ा होजाय तो सांचों में डालकर जमा लें ॥४॥

मोमवत्ती का बनाना ।

भेड़ की चर्बी १०० तोला मुशककाफूर अढ़ाई तोला मोम का तेल १० तोला फटकरी २ तोला इन

सब चीज़ों को लोहे की कढ़ाई में गर्म करें जब सब मिलकर एक हो जायें तो सांचों में डालकर मोम-बत्ती बना लें ॥५॥

बाग़ के फूलों को कीड़ों से बचाना।

जीता चूना १० तोला लेकर सेर भर पानी में औटा कर इसी पानी को ठण्डा करके फूलों के पौदों पर छिड़क दें सब कीड़े भाग जायेंगे ॥६॥

पवित्र साबुन बनाना।

बिना आग के कपड़ा धोने का साबुन बनाने की रीति।

गेहुं का मैदा पाव भर सोडा काष्टा पाव भर तिली का तेल तीन पाव पानी सवा सेर। पहले एक बरतन में पानी को गर्म करके उस में सोडा काष्टा को डाल दें मगर उस को मत छूना जब वह पानी में गल जाय उस पानी को भी हाथ से मत छूना फिर तेल को एक साफ़ बरतन में डाल कर उसी में मैदा डालकर हाथ से तिसको खूब मिलाना जब तेल और मैदा दोनों एक हो जायें तब सोडे वाले पानी को थोड़ा २ डालते जाना और किसी लकड़ी के सोटे से या गसद्द से हिलाते जाना

जब सब पानी को उस में डाल चुको तो फिर खूब घोटना जब गाढ़ा हो जाय तो लकड़ी के सांचे में या किसी थाली में डालकर जमाकर धूप में सुखा लेना फिर चाकू से तिसकी मोटी २ कतलियें काट कर अपने काम में लाना ॥७॥

रंगदार साबुन।

यदि रंगदार साबुन बनाना हो तो जिस रंग का बनाना चाहो उस रंग को पानी में डालकर खूब औंट कर फिर उस में सोडा काष्टा को डालें वह रंगदार साबुन बन जायगा। यदि सुगन्धि वाला बनाना चाहो तो जिस काल में सोडा मैदा और तेल तीनों घुटकर एकजान होजायें उस काल में उस में सुगन्धि को डालकर थोड़ा सा और घोट कर जमा दो मगर बदन पर लगाने वाले साबुन में सोडा डेढ़ पाव मैदा एक पाव और तिली का तेल तीन पाव पानी सवा सेर रहे बनाने की रीति वही है जिस रंग का साबुन बनाना हो उस रंग में पहले थोड़ा सा सोडा सलीकट का तेज़ाब डाल देना इस के डालने से साबुन का रंग ज्यों का त्यों बना रहता है बिना इस के डालने से थोड़े दिनों के पीछे रंग उड़ जाता है ॥ ८॥

सुगन्धि वाला साबुन

सुगन्धि वाला बनाना हो तो इलायची का तेल या सौंफ का तेल, पुदीने का सत, निम्बू का सत, नौरंगी का सत, दालचीनी का तेल, संदल का तेल, मेंहदी का अतर, गुलाब का अर्क, केवड़ा का अर्क, चम्बेली का तेल या अतर वगैरा सुगन्धियां डाली जाती हैं और रंग केसर, हलदी, शिंगरफ, नील वगैरा डाले जाते हैं ॥९॥

कपड़े धोने का सस्ता साबुन।

पाव भर सोडा काष्टा डेढ़ पाव गेहुं का पीसान या चने का बेसन तीन पाव सरसों का तेल या इस से भी कोई सस्ता तेल। बनाने की और सब रीति ऊपर वाली ही है यह साबुन बेचने के लिए सस्ता पड़ता है ॥१०॥

कपड़े पर से दाग को दूर करने वाला साबुन।

नारियल का तेल १ छटांक पुटास का तेज़ाब आध पाव गन्धक का तेज़ाब आधी छटांक पहले पुटास के तेज़ाब को एक बरतन में डालकर फिर गन्धक के तेज़ाब को उस में मिला दो फिर उन

दोनों को नारयल के तेल में मिलाकर खूब घोटो जब तीनों मिलकर सख्त हो जायें तो जमाकर सुखा लो जिस कपड़ा पर दाग़ हो उसपर इसको लगाकर फिर गर्म पानी से कपड़ा को धो डालना चाहे पशमीने का कपड़ा हो चाहे सूती तथा ऊनी हो सब का दाग़ इसी साबुन से दूर हो जायगा ॥

बाल उड़ाने का साबुन बनाना ।

अंग्रेज़ी या देसी साबुन का चूरा या साबित टिकिया लेकर उस को पानी में टुकड़े २ करके घोटो जब लेई सी बन जाय तो उस में एक औंस यरीमसल्फाइड डालकर घोटो और छोटे २ सूत के तागे भी चार पांच उस में डाल दो अगर नरम रह जाय तो उस में सुपेदा काशगरी डाल दो फिर तिसको किसी सांचे में जमा दो । जिस जगह के बाल उड़ाने हों टिकिया को पानी में घिसकर लेप कर दो पांच मिनट में बाल साफ़ हो जायेंगे ॥१२॥

पशमीने के कपड़े धोने का मसाला ॥

सोडा काष्ट पीसा हुआ २५ तोला साल अमूनीयाक १० तोला साबुन १० तोला तीनों को पीस कर मिला दो जिस पशमीने के कपड़े को धोना

दो-गर्म पानी में थोड़े से मसाले को छोड़कर उस में कपड़े को भिगो दें और तीन घण्टा तक भीगा रहे मगर किसी पत्थर के बरतन में या पक्के चौबच्चा में। फिर खड़े होकर पांव से कपड़े को मलते जाओ और थोड़ा २ गर्म पानी उस पर डालते जाओ ऐसा साफ होजायगा जैसे नया ॥१३॥

सुनहरी स्याही का बनाना।

चार तोला बबूर का गोंद और दानादार खांड २ तोला सुनहरी पौडर पांच तोला पहले बबूर के गोंद को खरल में डालकर खूब महीन करो फिर उस दानादार खांड को जुदा पीसो जब यह दोनों सुरमें की तरह महीन होजायें तब दोनों को मिलाकर उसमें सुनहरी पौडर को भी मिला दो परन्तु पानी को इनके पीसते समय पास नहीं रखना चाहिये क्योंकि पानी के पास होने से इसके बिगड़ने का भी डर होता है फिर किसी साफ शीशी में डालकर रख छोड़ो जब काम पड़े तब किसी चीनी की प्याली में जितनी जरूरत हो घोल कर गाढ़ी करके फिर जो चाहो सो इस से लिखो ॥१४॥

अगर किसी अलमारी या कुरसी वगैरा लकड़ी की बनी हुई चीज सुनहरी करना हो तो इसी स्याही से सुनहरी कर लो बड़ा सुन्दर और चमकीला रंग होगा ॥१५॥

फिर इसी तरकीब से अनेक प्रकार की स्याहियां बन जाती है, अगर लाल रंग की स्याही बनानी चाहो तो सुनहरी पौडर की जगह लाल रंग को कीकर के गोंद में और खांड में मिला दो लाल स्याही बन जायेगी। यदि बैंगनीया (नीले रंग) की स्याही बनानी चाहो तो उसी रंग को गोंद और खांड में मिला कर तैयार कर लो मगर गोंद जितनी अधिक साफ की जायगी उतनी ही स्याही चमकीली बनेगी इस रीति से अनेक तरह की स्याही को बना कर नफा भी उठा सके हो अर्थात् दुकान पर बेचने से बहुत सा नफा होगा ॥१६॥

बिल्युबलैक स्याही का बनाना।

चार तोला कसीस को सेर भर पानी में खूब पकाओ फिर उसको छान कर उसमें तीन तोला अंग्रेजी नील डाल कर खरल करो स्याही बन जायगी। दूसरी रीति—तृफला ६ तोला कसीस

डेढ़ तोला दोनों को आध सेर पानी में डाल कर पकाओ फिर छान कर उसमें डेढ़ तोला अंग्रेजी नील मिला दो स्याही तैय्यार हो जायगी ॥१७॥

छापे या टाइप की स्याही ।

आध सेर अलसी के तेल को लेकर पकाओ जब वह लुआबदार बन जावे तो उसमें पाव भर राल को महीन पीस कर डाल दो फिर उसमें पांच तोला साबुन को मिलाओ फिर अंदाज का काजल उसमें मिलाओ स्याही बन जायगी ॥१८॥

अंग्रेज़ी साबुन का बनाना ।

जीता चूना पत्थर का पाव भर सोडा सूखा पाव भर दोनों को एक बरतन में डाल कर उन पर इतना पानी डालो कि जितने में डूब जायें एक रात दिन दोनों को भीगा रहने दो फिर उनके पानी को टपका लें जितना पानी उन से निकले जुदा रख दें फिर पाव भर अलसी की मैल उस पानी में डाल कर मंद २ अग्नि पर पकाओ जब गाढ़ा होजाय जमा कर टिकिया बना लो ॥१९

लुबान का सत निकालना ।

आध पाव कौड़ियाला लुबान लेकर उसको

दरड़ पीस कर जौकोब करो फिर एक बड़ी हांडी कोरी लेकर उसमें उस लुबान को बिछा दो और बीच में उसके नारयल के झाड़ू की सीखों को लेकर एक बिता भर से कम की तोड़ कर हांडी में बराबर उनको चुन दो और एक कोरी चीनी की प्याली को हांडी के ऊपर ऊंधी रख कर फिर उस हांडी को कपड़मिट्टी करके सुखा लो जब आधी सूख जाये तब चूल्हे के ऊपर उसको रख दो और एक बड़ा दीया लेकर उसमें आध सेर सरसों का तेल डाल कर एक मोटी बत्ती बना कर उस दीये में रख कर जला कर हांडी के नीचे रख दो मगर दीये से तीन अंगुली हांडी ऊंची रहे ताकि ताव उसको अच्छी तरह से लगे जब दीये का सब तेल जल जाये और हांडी भी ठंडी होजाये तब धीरे से हांडी को उतार कर ऊपर वाली चीनी की प्याली को धीरे से उतारो और उस प्याली में जितना जौहर लगा हो उसको चाक़ू से किसी काग़ज़ पर खुरच कर निकाल लो और शीशी में डाल दो बलग़मी बीमारियों के वास्ते और मरदानगी की कमज़ोरी के वास्ते बड़ा फायदा करता है ॥२०॥

पिपरमिन्ट का बनाना

एक छटांक पिपर मिंट का तेल लेकर एक ग्लास रैकट फायड अंसपरेट में मिला कर फिर बोतल में तिसको भर कर हिलावो फिर ज़रा सा सांवर उस बोतल में डालदो बहुत अच्छा पिपरमिंट तैय्यार हो जायेगा यदि पिपरमिंट का अरक बनाना हो तो पहले पिपरमिंट के तेल को पक्का लो फिर ऊपर वाली रीति से तैय्यार कर लो बहुत अच्छा बनेगा ॥२१॥

बालों को बढ़ाने का लटका।

नारयल का तेल तोला भर अंडे का तेल तोला भर मक्खन तोला भर इन सब को खूब मिला कर लगाना प्रारंभ करो और तीन घंटे के पीछे आंवला के पानी से या बरवी के पानी से धो दिया करें यदि बरवी का पानी न मिले तो बेर की पत्ती को पानी में उबाल कर उस पानी से धो दिया करो पुरुष या स्त्री दोनों के बालों को फ़ायदा पहुंचेगा ॥२२॥

लोहे पर से ज़ंग को दूर करना।

जिस लोहे के चाकू वगैरा को ज़ंग लग गया हो उस को इस तरह से उतारो पहले उस पर तिलो के तेल को मलो और २ घंटा तक उस पर तेल को

ज़ंगा रहने दो फिर चिकनी मट्टी को उस पर मलो जंग दूर हो जायेगा। यदि जंग पुराना हो तो उस पर तेल को मलो और धूप में तिस को रख दो फिर दो घंटा के पीछे सूखे चूने को छान कर उस पर मलो फिर ज़रा सा तेल लगा कर उस को रख दो॥२३॥

मुलम्मा करना।

अगर सुनहरी मुलम्मा करना चाहो तो ५ वरक सुनहरी बड़े लेकर असली शहत में उनको मिलाओ जब दोनों एक जान होजायें फिर उन पर अलकोहल का पानी मिला दो और थोड़ी देर तक उस को रख छोड़ो जब माल नीचे बैठ जाये तो ऊपर के पानी को नितार कर फैंक दो इसी तरह दूसरी और तीसरी बार भी उस पर पानी को डाल कर तिनार कर फेंक दो जब खूब साफ माल नज़र आने लगे फिर तिस को सुखा लो जब किसी चीज पर मुलम्मा करना चाहो तब १ मासा नमक और ३ मासा क्रीमटाटर और तिहाई सुखाया हुआ माल इन तीनों को इकट्ठा करके अंदाज़ का साफ पानी उसमें मिला लो और जिस पर मुलम्मा करना चाहो उसको पहले खूब मांज कर साफ करके उसके

ऊपर उसका लेप कर दो जब सूख जाय फिर उस को धो डालो बहुत अच्छा हो जायगा ॥२४॥

सुनहरी रोगन का बनाना ।

१ छटांक लैवंडर को लेकर आग पर गर्म करो फिर आधी छटांक ढाक का गोंद लेकर उसमें मिला दो फिर तीन छटांक अलसी का तेल उस में डालकर थोड़ी देर तक तिसको पकाओ फिर उतार कर ठण्डा कर लो फिर जिस को रोगनी बनाना हो उस पर उस तेल को लगा कर धूप में रख दो बहुत उमदा रोगन हो जायेगा ॥२५॥

लाजवरद रंग बनाना ।

१ तोला गोंद ४ माशा सुपेदा ३ माशा नील एक हिस्सा लाजवरद इन सब को खूब मिलाकर रखो बहुत ही उमदा लाजवरद बन जायगा ॥२६

सुपेद रंग बनाना ।

चार तोला सुपेदा छः माशा गोंद, उमदा खड़िया मट्टी दो तोला इन सब को इकट्ठा करके महीन पीस कर फिर पानी डालकर पीसो सुपेद रंग बन जायगा ॥२७॥

सबज़ रंग बनाना

१ तोला गोंद सुपेदा, ६ माशा असारा रेवंद, २ तोला वलाइती नील, हार सिंहार का पानी आध पाव सब को हार सिंहार के पानी में खूब मिलाओ सबज़ रंग बन जायगा ॥२८॥

लाल रंग बनाना

१ तोला गोंद, पांच तोला सुपेदा, मजीठ का रंग ६ माशा, किरमज़ का रंग दो तोला इन सब को मिलाकर खूब कूट लो लाल रंग तैय्यार हो जायगा ॥२९॥

पीला रंग बनाना

५ तोला सुपेदा, हरताल दो तोला, असारा रेवंद दो तोला इन सब को मिलाकर महीन कूटो लाल रंग बन जायगा ॥३०॥

नीलगून रंग

८ माशा गोंद, ६ माशा सुपेदा, वलाइती नील दो तोला इन सब को महीन पीस लो नील-गून रंग बन जायगा ॥३१॥

तसवीरों का वारनश

दो तोला पीसा हुआ सुहागा १ तोला चपड़ा

लाख दोनों को पानी में मिलाकर किसी चौड़े मुख वाली बोतल में भर दो और दो२ घण्टा पीछे बोतल को हिलाया करो तीन रोज तक बराबर हिलाते रहो जबा चपड़ा लाख गल जाये तब पानी को नितार कर फेंक दो जिस तसवीर या नकशे पर लगाना हो पहले तिस को गर्म करो और गर्म २ पर तिस को मल दो ॥३१॥

चिमनी फटने न पावे।

प्रायः करके लैम्प की गर्मी से चिमनियां फट जाती हैं यदि चाहो जो न फटे तो पहले चिमनी को साफ़ करके दूध में औटा लो फिर तिसको सुखा कर गर्म पानी से धो डालो फिर कपड़ा से पोंछ कर सुखा दो फिर नहीं टूटेगी ॥३२॥

लैम्प में धूआं न हो।

पहले लैम्प की बत्ती को पुराने सिरका में भिगो कर सुखा लो फिर उस को लैम्प में जलाओ लैम्प में कभी धूआं नहीं होगा और न ही चिमनी काली होगी ॥३४॥

कांच के बनाने की रीति ।

१ सेर रेता सुपेद को लो १ सज्जी आध सेर

जीता पत्थर का चूना तीन पाव कच्चा सिंधूर आध सेर इन सब को एक मट्टी के बरतन में रख कर इतना पकाओ कि सब चीजें गल कर आपस में एकजान हो जायें अग्नि खूब तेज़ रहे जो पानी की तरह पिगल जायें फिर उसको सांचों में डाल कर जो चीज़ उसकी बनानी चाहो सो बना लो ॥३५॥

सोने की चीज पर जिला करना।

दो पैसा भर नौशादर और लाल तथा हलका गेरू दो पैसा भर इन दोनों को साफ पत्थर पर पानी डाल कर खूब महीन पीस लो फिर जिस सोने की चीज़ को जिला देना हो उस पर इसको खूब लगा दो और आग पर सुखा लो जब खूब धूआं निकल चुके तो आग से निकाल कर ठंडे पानी में इसको बुझाओ फिर उस पर गेरू को पीस कर लगा दो और आग पर सुखा कर बुरश से खूब साफ करो फिर महीन कपड़ा से साफ़ कर दो बहुत उमदा हो जायगा ॥३६॥

चांदी की चीज़ पर जिला करना।

पहले पानी गर्म करो फिर उसमें साबुन को मलो फिर उसमें चांदी की चीज को डाल कर खूब

मलो फिर खटाई में तिसको मलो मगर खटाई को भिगो कर पहले रख लेना फिर पानी से धो कर कपड़ा से पोंछ दो नया बन जायेगा ॥३७॥

ऊनी या रेशमी कपड़े से चिकनाई दूर करना।

१ माशा इमूनीआ लेकर उसको एक सेर पानी में डाल दो जब वह पानी में मिल जाये तो उसी पानी से जिस जगह में कपड़ा पर दाग लगा हो उतनी जगह को धोना फिर नीचे उस दाग वाली जगह के कागज का टुकड़ा रख कर ऊपर कपड़ा के स्त्री करने वाले अग्नि करके युक्त को फेरना. दाग वाला तेल वगैरा उस कागज़ पर जा रहेगा कपड़ा साफ हो जायेगा ॥३८॥

गरी के तेल का साबुन।

पचीस तोला गरी का तेल और पचीस तोला सोड़ा काष्टा का तेजाब पहले गरी के तेल को कढ़ाई में डाल कर गर्म करो जब गर्म हो कर पतला हो जाय तो सोडा काष्टा के तेजाब को थोड़ा २ कर के उसमें डालते जाओ और घोटते जाओ जब सब सोडा मिल जाय तब धीरे २ पकाते जाओ जब

सुपेद और सख्त होने पर आवे तब इसमें रंग और सुगंधी को डाल कर घोटो जब गाढ़ा होजाय तो सांचों में भर लो ॥३९॥

तांबे वगैरा पर नकली मुलम्मा करना।

जो आदमी तांबा वगैरा के किसी वर्तन में मुलम्मा करना चाहे वह पहले उस वर्तन को खूब मांज कर साफ करे जो उस पर किसी तरह का धव्वा न रहे फिर गंधक का तेज़ाव और शोरे का तेजाव और नमक का तेज़ाव फिर चांदी के छोटे २ टुकड़े करके इन तेज़ावों को मिला कर इनमें डाल दो और हलकी सी आग पर उस तेज़ाव वाले वर्तन को रख दो जब धूआं उठने लगे और खूब तेज होने लगे तब उतार कर तिसको ठंडा कर लो फिर उसमें पानी को डाल दो जो पानी के ऊपर स्याही सी आ जाये उसको नितार दो इसी तरह तीन या चार वार उसमें पानी डाल कर स्याही को नितार दो जब स्याही विलकुल बाकी न रहे तब उसमें खड़िया मट्टी थोड़ी सी डाल कर फिर उसको साफ की हुई चीजों पर खूब मलो इस रीति से वह चीजें मुलम्मा हो जायेंगी ॥४०॥

चीनी के खिलौने।

१ सेर सुपेद चीनी लेकर उसमें थोड़ा सा गुलाब या केवड़े का अर्क डाल दो फिर उसमें १ पैसा भर गोंद को महीन पीस कर उसमें मिला दो फिर उसमें एक सेर पानी डाल कर कवाम करो अर्थात् उसकी चाशनी पकाओ जब चाशनी तैय्यार होजाय तब खिलौने सांचों में भर दो. इसी रीति से बनते हैं ॥४१॥

बर्फ का जमाना।

किसी बोतल में या सुराही में या टीन के नलिका में पानी को भर दो मगर थोड़ा सा खाली रहे फिर उस में दो पैसा भर शोरा डालकर उसको काक वगैरा किसी चीज से ऐसा बन्द करो कि उस में पानी न जाने पावे फिर उसको रात्रि को किसी जल के भीतर रख दो सवेरे तक वह बर्फ जम जायगी ॥४३॥

कच्चे पक्के लोहे की पहचान।

जिस लोहे की पहचान करनी हो उस के ऊपर शोरे का तेजाब ज़रा सा डालकर आधे घंटा के पीछे उसको ठण्डे पानी में डालकर धो डालो

अगर तेज़ाब वाली जगह पर काला दाग़ पड़ जाय तो पक्का लोहा जानना अगर सुपेद हो जाय तो कच्चा जान लेना ॥४३॥

पारे का कटोरा बनाना ।

आध सेर पारे को लेकर जुदा रक्खो और पाव भर तूतिया नीलगून को लो और पाव भर नौशादर को लेना इन दोनों को जुदा २ पीस डालो फिर कढ़ाई में तूतिया की तेह जमा दो और पारे को उस के ऊपर बिछा दो फिर पारे के ऊपर नौशादर की तेह जमा दो और एक मट्टी का तबाख रोगनी लेकर उसको ऊपर से ढांप दो और कुकरछिदी बूटी का अर्क अढ़ाई सेर लेकर उस कढ़ाई में डाल दो फिर नीचे आग जलाओ जब सब पानी जलकर थोड़ा सा बाकी रह जाय तो कढ़ाई को उतार कर ढकने को उठा कर पारे को सांचे में डाल दो जब सांचा खूब ठण्डा हो जाय तो सांचे से कटोरे को निकाल कर सात रोज़ तक उसको सिरके में रक्खो फिर सात रोज़ तक निम्बू के रस में रक्खो निम्बू न मिलें तो नौरंगी के रस में रक्खो फिर तिसको एक दफ़ता मट्टी में

रखो फिर चरख पर चढ़ाकर साफ़ कर लें कटोरा तैय्यार हो जायगा। इस पारे के कटोरे की हकीमों ने वहुत सी तारीफ़ लिखी है पहले तो इस में दूध महीनों तक रखने से बिगड़ता नहीं बल्कि उसका स्वाद भी नहीं बदलता। फिर इस में दूध पीना बड़ा गुणकारी होता है अर्थात बल को बढ़ाता है और जिसको फालज की बीमारी हो वह अगर इस में दूध पीवे तो आठ दिन में अच्छा हो जाता है ॥४४॥

दधि जमाने की नई रीति।

दो सेर भैंस का दूध लेकर उसको खूब औटाओ जब गाढ़ा हो जाय उसको ठण्डा करो फिर आध सेर मीठा दधि और आध सेर मलाई पहले दूध में दधि और मलाई को मिलाकर महीन कपड़े में तिसको छान लो फिर तिसको किसी कोरी हांडी में डालकर उस हांडी को एक घंटा तक गर्म पानी में रखो दधि जम जायगा और एक महीना तक नहीं विगड़ेगा। नित्य चाकू से काटकर खाओ यदि मीठा बनाना हो तो १ सेर सुपेद चीनी को दधि के साथ छान लेना यदि साफ़ हो तो इसी तरह उस दूध में डाल देना ॥४५॥

बहुत जल्दी दधि जम जाय।

संग दाना के छिलके को छाया में सुखाकर पीस लो और १ सेर दूध को खूब औटा कर हांडी में डाल दो फिर एक तोला पीसा हुआ संग दाने का छिलका उस मे डालकर मिला दो एक घण्टा के अंदर ही दधि जम जायगा ॥२६॥

तांबे के बर्तन पर अक्षरों का बनाना।

पहले तांबे के बर्तन को खूब मांज कर धो डालो फिर सुफेद मोम को गर्म करके जहां पर लिखना हो वहां पर लेप कर दो फिर थोड़ी देर पीछे जली कलम से उसी मोम वाली जगह पर लिखो फिर उसी लिखी हुई जगह पर तूतिया, नौशादर और गन्धक इन तीनों को निम्बू कागज़ी के अर्क मे पीस कर उन अक्षरों पर लगा दो और दस मिनट के पीछे ठंडे पानी से धो डालो अक्षर साफ़ पढे जावेंगे ॥२७॥

सुगन्धि वाला कत्था बनाना।

१ छटांक उमदा कत्था को लो और इस को पानी में डाल करके भिगो दो फिर पका कर छान लो फिर दालचीनी छोटी इलायची जावित्री हर

एक तीन ३ माशा और लौंग के फूल ४ रत्ती इन सब को थोड़े से केवड़ा के अर्क में पीस कर कत्था में मिला दो जम जाने पर काम में लाओ ॥४८॥

खुशबूदार मिस्सी का बनाना।

माजू आधी छटांक सोहनमखी ६ माशा लोहे का बुरादा एक पैसा भर हीरा कसीस आधी छटांक सेलखडी आधी छटांक हुरमची दो माशा रूमी मसंतगी ६ माशा। जावित्री लौंग लाचीदाना दार चीनी हर एक छः २ माशा इन सबको लेकर खूब महीन पीसो फिर कपड़े से छान लो मिस्सी तैय्यार हो जायेगी। थोड़ा सा केवड़ा और ज़रा सा अतर उसमें मिला कर एक रोज़ तक उसको हवा न लगने दो फिर अपने काम में तिस को लाओ ॥४६॥

उमदा स्याही बनाने का तरीका।

एक छटांक भर वबूर का गोंद लेकर पानी में तिसको भिगो दो और रात्रि भर वह पानी में भीगा रहे, जब वह फूल जाये और पानी उससे जुदा न रहे फिर १ छिटांक काजल उसमें डाल कर और पानी भी उसमें मिला दो मगर लोहे की कढ़ाई में ही गोंद को भिगोना और उमी में दूस

न और पानी और काजल को डाल कर दो
हर तक तिसको खूब घोटना फिर १ छटांक आंवले
और एक छटांक बजेसार दोनों पाव या डेढ पाव
पानी मे भिगो दो एक या दो पहर के पीछे उसको
पानी थोड़ा २ डाल कर दो रोज़ तक बराबर घोटो
फिर ६ माशा सोनामखी ६ माशा माजू ३ माशा
साधा निमक इनको महीन पीस कर उसी काजल में
मिला कर फिर घोटो जबकि गाढ़ा होजाये तब
पीपल के पत्तों पर या तीलीयों पर डाल कर सुखा
कर रख छोड़ो ॥५०॥

स्याही बनाने की दूसरी रीति।

वलाइती नील ६ माशा माजू ६ माशा सोना-
मखी ३ माशा पीरया कत्था ३ माशा सेंधा नमक
दो माशा चौवजेसार एक तोला काजल १ छटांक
कीकर का गोंद चार तोला गोंद और चौवाविजे-
सार को जुदा २ काट कर जोंकोव करो फिर रात्रि
भर उसको पानी में भिगो दो सवेरे देखो अगर गोंद
फूल जाये तो काजल उसमें मिला कर फिर बाकी
की भी सब चीजों को पीस कर छान कर उस में
मिला दो और थोड़ा सा पानी उसमें डाल कर तिस

को खूब घोटो जब सूखने पर आवे तो १ छटांक आंवलों को पहले से ही पानी में भिगो कर उसका पानी थोड़ा २ डाल कर दो रोज तक खूब घोटो जब खूब गाढ़ी होजाये तब तीलियों पर डाल कर सुखा लो ॥५१॥

लैस और कलाबतू के धोने की रीति।

सिपरट आफ दायन एक अंग्रेजी चीज़ होती है उसको मैले कलाबतू या लैस पर लगा कर १५ मिंट धूप में रखो फिर उस को नीम गर्म पानी से धो डालो सब मैल उतर जायेगी ॥५२॥

पीतल की चीज़ को साफ़ करना।

दो तोला फटकरी को लेकर १ छटांक पानी में पीसो और पीतल के बर्तन को गर्म करके उस पर लगा दो अर्थात् उस से मांज़ो जब मांज चुको तो सुखा कर फिर उमदा खड़िया मट्टी को लेकर उस पर मलो सोना की तरह चमकदार बर्तन बन जायेगा ॥५३॥

मोतियों के कंडे की मैल उतारना।

गेहूं की भूसी १ छटांक लेकर पाव भर पानी में गर्म करो जब खूब गर्म होजाये तो २ माशा

सालट में ६ माशा फटकरी मिला कर पीस कर उसी भूसी में मिला दो और हाथ से धीरे २ मलो जब पानी ठंडा होजाये तो फिर उस भूसी वाले पानी में मोतियों को मल कर साफ करो जब साफ होजायें और मैल उतर जाये तो दूसरे पानी में धो कर सुपेद कपड़ा से पूंछ दो ॥५४॥

शोरे का तेज़ाब।

आध पाव नौशादर आध पाव फटकड़ी पाव भर कसीस आध सेर नमक एक छटांक सज्जी ६ माशा संखिआ सुपेद सब चीज़ों को खूब महीन कूटो और एक मट्टी के बर्तन में भर दो और सब चीज़ों के बराबर चमकीले कलमीशोरे को मिलाओ और सब चीज़ों से चौगुना पानी डाल कर भबके की तरह मंद २ अग्नि पर रख कर अर्क खींचो तेज़ाब निकल आवेगा ॥५५॥

नीले रंग का कपड़ा रंगना।

पक्का नील १ पैसा भर या दो पैसा भर ले कर तिसको अंदाज़ के पानी में घोल दो जो कपड़ा रंगना हो उसमें डुबो कर रंग लो अगर हलका रंग करना हो तो उसमें थोड़ा नील डालो तेज रंग

करना हो तो तिसमें अधिक रंग डाल दो औ
सुखाने के लिये फैला दो जब वह सूख जाये त
एक पैसा भर मेंहदी की सूखी पत्ती पानी में पी
कर उसमें बहुत सा पानी डाल कर उसमें कप
को गोता दो यदि मेंहदी न मिले तो आध पा
दूध में दो सेर पानी डाल कर उसमें कपड़े क
डुबो दो और निचोड़ कर सुखा दो ऐसा करने
नील की बदबो जाती रहती है और कपड़े का रं
भी पका होजाता है ॥५६॥

पीले रंग का कपड़ा रंगना ।

हलदी दो माशा भर सज्जी तीन माशा पीस
हुई पहले हलदी पर पानी डाल कर खूब महीन पीस
फिर हलदी में अंदाज का पानी डालकर उसमें कप
को रंग लो फिर दूसरे साफ पानी से उस कपड़े क
तीन बार धो डालो जबकि हलदी की गंधि जात
रहे तो पीसी हुइ सज्जी को पानी में डालकर कप
को गोता देकर सुखा दो फिर छः मासा फटकरी क
पीस कर पानी में घोल कर उसमें गोता दो ऐस
करने से रंग पका हो जायेगा ॥५७॥

सबज कपड़ा रंगना ।

आध पाव नसपाल को तीन पाव पानी में कू

कर रात्रि को तिसको पानी में भिगो देना सवेरे हाथ से मल कर छान लो और जुदा रख दो फिर पानी में ज़रा सा तेल डाल कर कपड़े को उसमें खूब धो डालो फिर कपड़े को नसपाल के रंग में रंग दो और सुखा कर फिर साफ़ पानी में ज़रा सी फटकरी को डाल कर कपडे को उसमें फिर गोता दो वह रंग पक्का हो जायेगा ॥५८॥

कपड़ों पर ऊदा रंग रंगना ।

आध पाव पतंग की लकड़ी को लेकर उसके ज़रा २ से टुकड़े करदो फिर उनको खूब कूटो फिर उसमें दो तोला चूना मिला कर डेढ़ सेर पानी में खूब जोश दो जबकि तिसका रंग निकल आवे तो डेढ़ पाव पानी में तिसको खूब जोश दो फिर तिसमें छः माशा फटकरी पीस कर मिला दो फिर उसमें कपड़े को रंग दो और निचोड़ कर सुखा दो यदि रंग तेज करना हो तो फ़िर उसी रंग में जोश दो दो चार बार ऐसा करने से रंग तेज़ होजायेगा॥५६॥

बादामी रंग करना ।

दो पैसा भर हारसिंहार के फूलों को डेढ़ पाव पानी में डाल कर खूब जोश दो फिर कुसुंभे का वह

रंग जो शहाब के पीछे निकलता है इस जोश किये हुए पानी में बहुत थोड़ा सा डाल कर उसमें कपड़े को रंग लो फिर उस कपड़े को दो तीन बार खारे पानी से धो डालो और कपड़े को सुखा लो फिर दो या तीन कागजी निंबू का अर्क पानी में डाल कर उसमें कपड़े को डुबो दो बहुत अच्छा बादामी रंग हो जायगा ॥६०॥

पिसतई रंग रंगना ।

पहले हलदी को पानी में पीस कर मिला कर उसमें पहले कपड़े को रंगो फिर साबुन को पानी में घोल कर उसमें कपड़े को धो डालो फिर निंबू के रस को पानी में मिला कर उसमें डुबो कर सुखा लो ॥६१॥

केसरी रंग करना ।

आधी छटांक हारसिंहार के फूल और आधी छटांक नसपाल इन दोनों को आध सेर पानी में भिगो दो रात्रि भर भीगे रहें सवेरे तिसको अग्नि पर जोश दो फिर आधी छटांक मजीठ को पाव भर पानी में जोश दो फिर फटकरी ६ माशा पीस कर पानी में मिला कर उसमें कपड़े को पहले गोता

दो फिर दोनों जोश दीये हुए रंगों को मिला कर छान कर इनमें कपड़े को रंग लो ॥६२॥

ज़मुरद रंग का कपड़ा रंगना ।

पहले कपड़ा को वलाइती नील में रंगो फिर फटकरी के पानी में डुबो कर सुखा लो फिर आधी छटांक मजीठ आधी छटांक नसपाल दोनों को कूट कर पाव भर पानी में रात्रि को भिगो दो मगर जुदा २ भिगोना सवेरे दोनों को इकट्ठा कर जोश देना फिर उसमें कपड़े को रंग लेना यदि हलका रहे तो फिर डुबो देना ॥६३॥

सवज़ काई रंगना ।

पहले कपड़े को नील में रंग कर फैला दो फिर अंदाज़ की हलदी लेकर उसको पीस कर अग्नि पर तिसको जोश देना फिर उसमे कपड़े को रंगना फिर तिसको सुखा कर आधी छटांक ककड़सिंडी को डेढ पाव पानी में जोश देकर उसमें गोता देकर फिर फटकरी के पानी में डुबो कर रंग देना ॥६४॥

सावरी रंग करना ।

पहले कपड़े को फटकरी के पानी में डुबो कर सुखा लो फिर आधी छटांक पीले रंग की चड़ी हरड़

का पोस्त लेकर उसको कूट कर पीस कर पानी में मिला कर उसमें कपड़े को गोता दो फिर १ छटांक वबूर की फली को कूट कर जोश देकर छान कर उसमें फिर कपड़े को गोता देकर सुखा लो यदि कपड़ा में गंधि आती हो तो ज़रा सा दूध पानी में डाल कर उसमें गोता दो बहुत साफ़ रंग हो जायेगा ॥६५॥

अबासी रंगना ।

पहले ६ माशा कच्चा नील लेकर उसको पानी में पीस कर उसमें कपड़े को रंगो फिर कुसुमे के रंग में रंगो फिर कागजी निंबू की तुरशीमें गोता दो॥६६

शर्बती रंगना ।

आधी छटांक हारसिंहार के फूलों को लेकर डेढ़ पाव पानी में उनको जोश दो उसमें रंग कर कपड़े को सुखा कर फिर कुसुंभे के रंग में रंगो फिर फटकरी के पानी में डुबो कर साफ़ कर लो ॥६७॥

लाल रंग करना ।

कुसुंभे के रंग में रंग कर सुखा कर फिर निंबू की खटाई में उसको डुबो कर साफ़ कर लो ॥६८॥

ऊँबोह रंगना

एक पैसा भर फटकरी को पानी में मिला कर उसमें पहले कपड़े को गोता दो फिर सुखा कर रख दो मजीठ १ छटांक नसपाल १ छटांक दोनों को जौंकोब कूट कर रात्रि को भिगो दो आध सेर पानी में सवेरे उसको अग्नि पर जोश देकर हाथ से मल कर छान लो अब उस फटकरी वाले कपड़े को उसमें रंगो और हाथों से बहुत देर तक मलते जाओ जब खूब रंग चढ़ जाये तो सुखाने के लिये उसको फैला दो ॥६९॥

अंगूरी रंगना

आध पाव ढाक के फूलों को लेकर आध सेर पानी में डाल कर अग्नि पर उनको खूब पकाओ जब रंग निकल आये तो छान लो उसमें कपड़े को रंग कर फैला दो फिर ज़रा सा नील लेकर उसको पानी में घोल कर उसमें कपड़ा को रंगो और फैला दो फिर १ कागज़ी निंबू को पानी में निचोड़ कर गोता देकर फैला दो रंग पक्का हो जायगा ॥७०॥

ताऊसी रंगना

आध पाव बबूर की छाल को लेकर छाया में

सुखा लो फिर कायफल दो पैसा भर लेकर दोनों को कूट कर आध सेर पानी में रात्रि को भिगो दो सवेरे अग्नि पर जोश दो जब रंग निकल आवे छान कर रख लो पहले कपड़े को फटकरी के पानी में डुबो कर सुखाओ फिर चार माशा कसीस को पीस कर रंग में मिला दो उस रंग में कपड़े को खूब रंगो जब रंग चढ़ जाये फैला दो फिर एक छटांक दूध आध सेर पानी में मिला कर उसमें कपड़े को डुबो कर सुखा लो ॥७१॥

उनाबी रंगना।

पीसा हुआ हरड़ का छिलका दो पैसा भर लेकर उसको पानी में घोल कर उसमें कपड़े को डुबो दो और फिर सुखा लो फिर हलदी पैसा भर पतंग पैसा भर कटकी चाश १ माशा फटकरी चार माशा सब को कूट पीस कर उसको पानी में डाल कर जोश दो फिर छान कर उसमें कपड़े को रंगो सुखा कर फिर फटकरी के पानी में तिसको गोता देकर सुखा दो ॥ ७२॥

काही रंग रंगना।

बेरी की जड़ की सूखी हुई छाल आध पाव

लेकर कूट कर सुखा कर रात्रि को आध पाव पानी में भिगो रक्खो सवेरे उसको उबाल कर खूब तिसका रंग निकालो फिर उसको छान कर थोड़ा सा उसमें कसीस पीस कर मिलाओ उसमें कपड़े को डाल कर खूब मलो अगर हलका मालूम हो तो थोड़ी और कसीस मिला कर फिर रंग दो फिर निचोड़ कर सुखा लो ॥७३॥

काकरेजी रंगना।

आध पाव पतंग को कूट कर महीन करके अढ़ाई पाव पानी में भिगो दो और रात्रि भर भीगा रहने दो सवेरे उसको जोश देकर छान लो फिर दो तीन माजू कूट कर पाव भर पानी में खूब उबालो फिर उस को भी छान कर दोनो रंगों को मिला कर उसमें कपड़े को रंगो अगर रंग हलका रहे तो दुवारा डुबो कर खूब मलो फिर निचोड़ कर सुखा लो ॥७४॥

मुंगिया रंग रंगना।

पहले दो या अढाई तोला भर फटकरी को पीस कर पानी में मिला दो और उसमें कपड़े को भिगो कर निचोड़ कर अलग रक्खो फिर उसी पानी

में आधी छटांक पीसी हुई पीली हरड़ को मिला कर कपड़े को डुबो दो फिर सुखा लो फिर थोड़ी सी हलदी को पीस कर उसमें कपड़े को रंग कर सुखा लो फिर थोड़ी सी कसीस पीस कर उसी में मिला कर फिर उसमें रंग कर सुखा लो फिर आध पाव नसपाल को कूट कर उसमें डेढ़ पाव पानी मिला कर उबाल कर छान लो फिर इस रंग में कपड़े को खूब मलो जब अच्छा रंग चढ़ जाये तो सुखा लो ॥७५॥

किशमिशी रंग रंगना ।

पहले दो तोला बड़ी हरड़ को पीस कर उसमें पानी मिला कर छान कर उस कपड़े को रंगो और इस पानी को रख छोड़ो फिर थोड़ा कट उसमें मिला कर उसमें कपड़े को रंग कर सुखा लो फिर दो तोला हलदी को पीस कर जुदा पानी में मिला कर उसमें रखो फिर उमदा कुसुंभे के रंग में कपड़े को डुबो दो फिर नसपाल के जोश किये हुए पानी में रंगो फिर फटकरी के पानी में रंग कर सुखा लो ॥ ७६ ॥

अति काले रंग का रंगना ।

पनवार के पाव भर बीज लेकर उनको भून

लो फिर पाव भर कच्चे नील को लेकर जौकोब कूटो फिर दोनों को एक हांडी में डाल कर आध सेर पानी में भिगो दो और सात दिन तक भीगा रहने दो मगर रोज़ सवेरे और संध्या को एक लकड़ी से हिला दिया करो जब उसमें दुर्गंधि उठे फिर उसमें थोड़ा सा पानी डाल कर उसमें कपड़े को रंगो और सुखा लो इसी तरह दो तीन बार रंग कर फिर मेंहदी के पानी में रंगो और फैला कर सुखा दो ॥ ७७ ॥

फूलदार अनार का मसाला।

कलमीशोरा आध सेर मगर आबदार हो गंधक डेढ़ छटांक लोहेचून आध पाव मदार की जड़ का कोइला आध पाव लोहेचून को छोड़ कर और सब चीज़ों को लेकर खूब बारीक पीसो मगर जुदा २ पीसो फिर उन सब को मिला कर उनमें लोहेचून को भी मिला दो और मट्टी के पके हुए अनारों को लेकर उनका मुंह चाकू से ज़रा बड़ा करके उनमें खुब ठोस २ कर भर दो अनार के दो मुंह होते हैं जिस मुंह को चौड़ा करके उसमें मसाला भरोगे दो हिस्सा अनार का मसाला से भरो और तीसरे हिस्से में पीली मट्टी को ज़रा सा गीला

करके भर दो और दूसरे छोटे मुंह के ऊपर रंगीन कागज़ को लेटी वगैरा से लगा देना ॥७८॥

महतावी का मसाला ।

अव्वल दरजे का साफ़ किया हुआ कलमी शोरा पाव भर तवकीआ हरताल एक छटांक गंधक छटांक भर शिंगरफ छटांक भर काफ़ूर आधी छटांक नील वलायती एक तोला भर इन सब चीज़ों को जुदा २ पीसो फिर इकट्ठा कर लो फिर मट्टी की महतावी लाकर उसमें आधी छटांक डाल कर हथेली से दबा दो फिर उस पर लाल या पीला कागज़ चपटा दो ॥७९॥

अंदेरीया अनार ।

कलमीशोरा उमदा आध सेर बांस की लकड़ी का कोइला तीन छटांक शराब एक छटांक पहले कोइले को सुरमें की तरह महीन पीसो फिर उसमे शोरे को पीस कर मिलाओ फिर उसको शराब का छींटा देकर खूब मलो और अनारों में ठोंस २ कर भरो यह बहुत तेज़ और जलद उड़ने वाला होगा॥८०

हजारा अनार ।

शोरा उमदा एक सेर गंधक १ छटांक और

मदार की जड़ का कोइला पाव भर इन सब को चौथा हिस्सा लोहेचून कूटा हुआ लो पहले गंधक को कोइला के साथ मिला कर महीन पीसो फिर शोरे को पीस कर उसमें मिला दो फिर उसमें लोहेचून को मिलाओ फिर उसको अनारों में डाल कर कूट २ कर भरो फिर कागज चपटा दो ॥८१॥

हारसिंहार का अनार।

आध सेर उमदा शोरा १ छटांक गंधक कपास की लकड़ी का कोइला तीन छटांक इन सब का चौथा हिस्सा लोहेचून लो पहले गंधक और कोइले को मिला कर महीन पीसो फिर शोरे को महीन पीस कर उसमें मिला दो फिर उसमें लोहेचून को मिला कर हाथों से खूब मलो फिर उसको अनारों में भर दो ॥ ८२॥

जुई का वज़न।

शोरा उमदा सेर भर अरहर की लकड़ी का कोइला सेर भर गंधक तीन छटांक इन सब का चौथा हिस्सा लोहेचून पहले कोइला को सुरमे की तरह महीन पीसो फिर गंधक को महीन पीस कर उसमें मिला दो फिर शोरे को पीस कर उनमें मिला दो

फिर सबको एक या दो घंटा पीसो और लोहेचून थोड़ा २ डाल कर खूब मिलाओ फिर उसको अनारों में भर दो ॥८३॥

तेज चकचूंदर वगैरा का मसाला।

शोरा उमदा एक सेर गन्धक तीन छटांक बांस का कोइला तीन पाव सबको जुदा २ खूब महीन पीसो फिर आध पाव लहसन को कूट कर पाव भर पानी में डाल कर खूब मलो जब अर्क निकल आवे तो गाढे कपड़े में छान कर थोड़ा २ छींटा देकर हाथों से मलो जब लहसन का सब पानी उसमें समा जाये तो छछूंदर बना कर उसमें भर दो ॥८४॥

खटमलों के दूर करने का इलाज।

एक तोला भर पारे को लेकर मुरगी के दो अंडों की सुपेदी में उसको मिलाओ जब खूब मिल जाये तो उसको चार पाई की चूथों में लगा दो खटमल सब भाग जायेंगे ॥८५॥

मुरदासंग का बनाना।

आध सेर चूने को लेकर एक कोरी हांडी में उसकी एक तैह जमाओ फिर आध पाव शीशे को लेकर उसके पत्तरे बना कर चूने की तैह के ऊपर

उनको जोड़ दो फिर चूना फिर शीशे के पत्तरों की तैह इसी तरह जब सब तैह जम जायें फिर तिस हांडी के नीचे आग जलाओ दो या तीन पहर तक आग के जलाने से मुरदासंग बन जायेगा॥८६॥

शीशे पर कलई करना।

जितना बड़ा शीशा हो उतना बड़ा ही कलई का ताव लेकर उसको एक थाली में बिछा देना तिसके ऊपर पारे को डाल कर कपड़े की पोटली से तिसको बराबर मल देना जब सब एकसा बराबर होजाये तो इसके ऊपर शीशे को बराबर रख देना वह ताव शीशे के साथ चपट जायेगा फिर शीशे को उठा लेना वह पत्री शीशे पर जम जायेगी तब उसमें मुख दीखने लगेगा ॥८७॥

बर्तनों पर चांदी का पानी चढ़ाना।

चांदी के वर्क ५ भुनी हुई फटकरी १५ रत्ती नौशादर १५ रत्ती सैंधा नमक १५ रत्ती तीनों को खरल करके किसी शीशी में भर दो जिस बर्तन पर चांदी चढानी हो उसको पहले खूब मांज कर चमका लो फिर इसी शीशी के चूर्ण को उस पर मल दो चांदी चढ जायेगी और चांदी का ही बर्तन मालूम होगा ॥८८॥

फूलों का गुच्छा बहुत दिनों तक रहे।

जिस बर्तन में फूलों को रखना चाहो पहले उसमें लकड़ी के कोइलों को भर दो ऊपर उनके पानी भर दो फूलों के दस्ता को उसमें रखो मगर डंडियां उनकी कोइला के चूर में दबी रहे इस तरह रखने से आठ दिनों तक फूल नहीं कुमलावेंगे नहीं तो एक ही दिन में कुमला जायेंगे ॥८६॥

काँच और चीनी के टूटे बर्तनों का जोड़ना।

काले रंग का गन्दाबरोज़ा दो भाग इण्डिया रबर १ भाग दोनों को मंद अग्नि पर पिगला कर खूब मिला लो फिर गर्म टूटे २ बर्तनो के किनारों पर लगा कर दोनों सिरों को आपस में जोड़ दो फिर ठंडा करके जो मसाला किनारों से इधर उधर लग गया हो चाकू से तिसको खुरच डालो ॥६०॥

टूटे हुए पत्थरों के बर्तनों को जोड़ना।

१ छटांक भर इमली के बीजों को लेकर रात्रि को पानी में भिगो दो सवेरे मल कर उनका छिलका उतार कर फिर उनके अंदर से उनका मगज़ निकाल लो और तिसको फिर सिल पर

पीस लो मगर ऐसा पीसो कि वह लसदार बन जाये फिर उससे आधा सीप का चूना लेकर तिसको पीस कर उसमें मिला दो फिर तिसको लगा कर टूटे हुए को जोड़ कर सुखा दो मज़बूत हो जायेगा ॥६१॥

पानी की दुर्गन्धि को दूर करना।

जिस कूप के पानी में दुर्गन्धि आती हो उस कूप के अंदर १ सेर या डेढ सेर कसीस को कूट कर चारों तर्फ़ डाल दो इसके डालने से एक ही महीना में उस कूएं के पानी की सब दुर्गन्धि जाती रहेगी ॥६२॥

सुनहरी लकड़ी या फूलों का बनाना।

एक चने के बरावर तबकीया हरताल को लेकर सोने के वर्क में पीसी हुई मैंहदी के पानी में खूब खरल करो जब हरताल और वर्क मिल कर एक जान होजायें और सूखने पर आयें तो उसकी गोलियां बना लो और सुखा कर शीशी में रख छोड़ो जिस समय किसी लकड़ी को सुनहरी करना हो या सुनहरी लिखना हो तो एक गोली को तीन या चार रत्ती सुरेश में आग से पानी में पका कर

उस गोली को उसमें डाल कर मिला दो फिर उससे
रंगो या लिखो ॥६३॥

आमों को बेमौसम तक रखना ।

पके हुए आमों को या सेवों को अगर बहुत
काल तक रखना चाहो तो बड़े मुंह वाले शीशे
को लेकर उसमें असली शहत को भर कर उसमें
आमों को या सेवों को डुबो दो जब तक चाहो
ताजा ही रहेंगे ॥६४॥

मक्खियों से बचने की दवा ।

एक पैसा भर अकरकरा और एक पैसा भर
गन्धक दोनों को महीन पीस लो किसी कागज में
बांध कर रखो जब काम पड़े नरगस की जड़ को
मंगा कर ज़रा से पानी में पीस कर थोड़ा सा ऊपर
वाला चूर्ण इसमें मिला कर पीसो जहां पर मक्खियां
बहुत बैठती हों वहां पर छिड़क दो कोई भी मक्खी
नहीं रहेगी ॥६५॥

अफीम का नशा उतारना ।

जिस को अफ़ीम के नशे ने तंग किया हो या
बेहोश किया हो उसको शरीफ़ा की ६ या सात हरी
पत्तियों को लेकर धो कर झटपट पानी में पीस

कर छान कर पिला दो तुरंत ही नशा उतर जायेगा ॥६६॥

दीमक का दूर करना।

१ तोला भर हींग ५ तोला कड़वा तेल हींग को महीन पीस कर तेल में मिला दो जहां पर दीमक हो छिड़क दो दीमक सब भाग जायेगी॥६७॥

दूध को बढ़ाने वाली दवा।

जिस गाय या भैंस या बकरी का दूध बढ़ाना चाहो तो थोड़े गर्म पानी में १ तोला खाने वाला निमक डाल कर फिर उस पानी को थोड़े से चोकर (छान) में या भूसी में मिला कर पशु को खिला दो पंद्रह रोज तक खिलाने से दूध बहुत बढ जायेगा॥६८

भूकंप आने को मालूम करना।

चुंबक पत्थर का एक टुकड़ा लेकर किसी जगह पर रखो और उसके ऊपर एक लोहे की सूई को रख दो भूकंप आने से पहले देखो और उस टुकड़े को सूई के समेत उठा कर हिला जुला कर देखो यदि सूई उस पर से नीचे गिर पड़े तो जान लो कि भूकंप आने वाला है क्योंकि भूकंप आने के समय चुंबक पत्थर में लोहे के पकड़ने की ताकत

नहीं रहती, भूकंप होजाने के पीछे फिर उसमें वह ताकत आजाती है जहां पर बहुत से भूकंप आते हैं वहां पर ऐसा करना चाहिये ॥९९॥

सूती कपड़ों के रंगने के तरीके को पीछे लिख आये हैं अब रेशमी कपड़े रंगने के तरीके को लिखते हैं :—

सबज़ रेशमी-कपड़ा रंगना।

अगर सुपेद रेशमी कपड़े पर सबज़ रंग करना चाहो तो पहले नील का हलका रंग देकर सुखा लो फिर अकलबीर में पीसी हुई हलदी ६ माशा फटकरी ३ माशा पहले पीसी हुई हलदी को पानी में जोश दो फिर ठंडा करके फटकरी को पीस कर उसमें मिला दो और हलदी के साथ अकलबीर को भी जोश देना फिर रेशम को इस रंग में मलो और दो तीन बार उसको सुखा कर रंगो जब पसंद का रंग होजाये तो काम में लावो यही तरीका ऊनी कपड़े के रंगने का भी है ॥१००॥

गुलानार रंगना।

यदि ऊनी या रेशमी कपड़े को गुलानार रंगना चाहो तो १ तोला भर किरमज १ तोला भर हलदी

और १ छटांक नसपाल जोकि जोश देने के लायक हो उसको कूट कर पानी में जोश दो फिर और चीज़ें पीस कर जोश किये हुए पानी में मिला दो फिर तिस रंग में ऊनी या रेशमी वग़ैरा कपड़े को रंगो ॥ १०१ ॥

किरमज़ी रंग रंगना ।

आधी छटांक किरमज का लेकर आध सेर पानी में उसको आग पर खूब उबालो जबकि रंग निकल आवे उतार कर फिर कपड़े को उसमें गोता दो फिर थोड़ी देर कपड़े के सहित पकाओ जब रंग मरज़ी के मुआफ़िक कपड़ा पर चढ जाये उतार कर फिर शोरे का तेज़ाब उस गर्म रंग में डाल कर फिर उसको खूब मलो और थोड़ी देर तक फिर पकाओ जो रंग पक्का होजाये फिर उतार कर ठंडा करो और निचोड़ कर सुखा दो पक्का रंग हो जायेगा ॥१०२॥

वसंती रंगना ।

आधी छटांक पीसी हुई हलदी आधी छटांक अकलबीर इन दोनो को आध सेर पानी में जोश देकर फिर उसमें ऊनी या रेशमी कपड़े को डाल दो जब रंग उस पर अच्छी तरह से चढ़ जाये उतार

तरह नरम हो जायगा फिर सुपेद बोतल में ठंडा पानी डाल कर उसमें तिस अण्डे को डाल दो वह ज्यों का त्यों स्वरूप वाला बन जायेगा जो देखेगा करामात मानेगा। बोतल से अगर साबत ही उस अंडे को निकालना चाहो तो धीरे से पानी को निकाल कर उसमें दधि और सिरके को मिला कर डाल दो. अण्डा नरम होकर निकल आवेगा॥१११॥

बिना खूंटी की खड़ावों पर चलना।

सुपेद घूंगची को पानी में पीस कर दोनों पांव की तलीयों पर लेप करो जबकि पांव सूख जायें तो पांव को पानी में भिगो कर बिना खूंटी की खड़ांव को पहर कर चलो खड़ांव पांव के साथ चिपट जायगी और लोग करामात मानेंगे॥११२॥

मुख में चिनगारियों (आग) का रख लेना।

नौशादर और अकरकरा दोनों को बराबर लेकर मुख में चबाओ और उसी के पानी से कुर्लो को भी करो फिर अग्नि की भखती हुई चिनगारियों को लेकर मुख में रख लो जलेगा नहीं॥११३॥

तागे में आग का परोना।

फटकरी को महीन पीस कर उसमें ज़रा सा

नी मिला कर फिर उसका सूत के तागे पर लेप करो जबकि तागा सूख जाये तो उसके साथ अग्नि की भखती हुई चिनगारियों को बांध कर लटका दो ॥११४॥

अग्नि से हाथ न जले।

समुद्र फग्ग और अण्डों के छिलके और पारा तीनों बराबर लेकर महीन पीस कर फिर अग्नि पर जोश देकर फिर उसमें थोड़ा सा सिरका मिला कर उसका हाथ पर लेप कर दो जब हाथ सूख जाये तो आग को रख लो हाथ नहीं जलेगा ॥११५॥

कपड़ा जलने न पाए।

एक रुमाल को सात बार घीकुवार के पट्ठे की रस में भिगो कर सुखाते रहो फिर उसको आग में डालने से वह नहीं जलेगा ॥११६॥

कबूतर का बच्चा रंगीन पैदा करना।

नौशादर और सिरका तथा भुलावा इन तीनों को पीस कर पानी में फिर सुपेद कबूतर के जोड़े के अण्डों पर लेप करके छाया में सुखा कर कबूतरों के नीचे रख दो उनसे जो बच्चे पैदा होंगे बड़े सुंदर होंगे ॥११७॥

मेथी का तुरंत जमाना।

मेथी के दानों को लेकर तीन रोज़ तक उनको अंगूरी सिरका में भिगो दो फिर सुखा कर रख दो जब किसी को तमाशा दिखाना हो तब ज़मीन पर थोड़ी सी मट्टी को खोद कर गोट करो फिर उस पर थोड़े से दानों को डाल कर ऊपर ज़रासी मट्टी को डालो फिर ज़रासा पानी छींटो तुरंत दाने जम आयेंगे ॥११८॥

बुझे हुए दीये का जलाना।

गन्धक हरताल और काफ़ूर इन तीनों को बराबर लेकर पीस कर अपने पास रक्खो दीये को बुझा कर ज़रा से उस चूर्ण को दीये पर डालने से फिर आप से आप दीया जल पड़ेगा ॥११६॥

पीपरमिंट का बनाना।

एक छटांक पीपरमिंट का तेल लाकर रखो फिर उसको एक ग्लास रेकटफाईड सिमिट में मिला कर बहुत देर तक बोतल में भर कर हिलाओ फिर ज़रासा उसमें सांबर डाल दो पीपरमिंट बन जायगा ॥१२०॥

सुपेद वालों को काला करने का खिज़ाब।

एक ताज़ा कद्दू लेकर उसकी एक तर्फ से ढकी उतार कर उसके बीजों को और गूदे को निकाल कर फेंक दो फिर उसके अंदर एक छटांक सांबर नमक को और एक छटांक लोहे की मैल को डाल कर उसी उतारे हुए छिलके से उसका मुंह बन्द कर दो उस पर कपड़ मट्टी करके सात रोज़ तक तिसको धूप में रक्खो उसके अंदर की चीज़ सब काले रंग का पानी बन जायेगा उस पानी को निकाल कर किसी शीशी में रक्खो और उसको बालों पर लगाओ बाल काले हो जायेंगे ॥१२१॥

दूसरा खिज़ाब।

एक छटांक मेंहदी एक छटांक वसमा दोनों को खट्टे अनार के पानी में या दधि के पानी में गूंध कर बालों पर लगाओ बाल अच्छे काले हो जायेंगे ॥१२२॥

तीसरा खिज़ाब।

आंवले, गुलाब के फूल सनोबर की जड़ का छिलका हर एक आध २ पाव लो फिर उन तीनों को तीन सेर पानी में डाल कर अग्नि पर इतना

पकाओ कि तीनों चीजें गल जायें फिर उनको ठंडा करके मल कर कपड़े से छान लो और बोतल में भर कर रख दो जब काम पड़े तो आध पाव उसमें से लेकर आध पाव मीठे तेल में मिला कर अग्नि पर उसको इतना पकाओ जो पानी सब जल जाये और तेल ही बाकी रह जाये इस तेल को शीशी में डाल लो और एक हफ़्ता तक इस तेल को बराबर बालों पर लगाया करो बाल काले हो जायेंगे और गिरने से भी बचेंगे यह बड़ा गुणकारी खिज़ाब है ॥१२३।

हर एक चीज़ का वारनश ।

१ सेर अलसी के तेल को लेकर अग्नि पर धर खूब पकाओ जबकि गाढ़ा हो जाये तो आध पाव राल को पीस कर उसमें डाल कर अच्छी तरह से मिला दो फिर इसमें दो तोला तारपीन का तेल डाल दो फिर उतार कर किसी मट्टी के रोग़नी बर्तन में या कांच के बर्तन में डाल कर रखो॥१२४

घड़ी पर लगाने का वारनाश ।

एक बोतल में सिप्रिट डाल कर ऊपर उसके छटांक उमदा लाख को डाल दो फिर उसी बोतल

६ तोला रूमीमस्तगी डाल कर बोतल के मुंह को काक से बन्द कर दो फिर बोतल को धूप में रख दो चार पांच दिनों में सब गल जायगा वही वारनश होगा उसको घड़ी पर लगाने से और बक्स पर लगाने से वह नये बन जायेंगे ॥१२५॥

तसवीर का वारनाश ।

आईसन गलास में पानी डाल कर तिसको गर्म करो जबकि वह गाढ़ा हो जाये तो उसमें रूई का फाहा भिगो कर उसको तसवीर पर मलो जब तसवीर सूख जाये तो केतीडपोललभ का एक हिस्सा तारपीन के तेल के दो हिस्से दोनों को मिला कर तसवीर पर मलो दो दफ़ा मलने से तसवीर पर वारनश हो जायेगा ॥१२६॥

जिल्द के चमड़े का वारनश ।

खाकी रंग का गमलीडर ३ औंस रैकटीफाई सिप्रिट १ पौंड दोनों को १ बोतल में भर दो और रख छोड़ो जब वह गल कर वारनश बन जाये तो काम में लाओ परंतु जब तक सब गल न जाये तब तक रोज़ हिलाया करो ॥१२७॥

नक्शे और तसवीर का वारनश ।

आइसन ग्लास २ डराम को लेकर एक औंस

पानी में मिला दो फिर उसको रूई के फाहे के साथ कागज़ पर चढ़ा कर कागज़ को सुखा लो जब कागज़ सूख जाये तो कैंडाबालसम १ औंस और ३ औंस तारपीन का तेल उसमें मिला दो वारनश बन जायेगा ॥१२८॥

चमड़े पर वलायती वारनश करना।

पहले चमड़े को सज्जी मट्टी में भिगो कर इसकी चिकनाई को दूर करो फिर चमड़े को झावां से रगड़ो फिर लकड़ी के काजल को लेकर उसके बराबर अलसी का तेल लेकर तेल को खूब गर्म करके उसमें काजल को मिला कर चमड़े पर मलो फिर झावें के साथ उसको खुरच कर फिर वारनश मलो फिर दूसरी बार उस पर लकड़ी का काजल मलो इसी तरह चार पांच बार करके फिर उस पर ४ छटांक काला वारनश और दो छटांक काजल इनको बोतल में डालकर मिला कर मलो परंतु हर बार मल कर सुखा लिया करो ॥१२९॥

सुपेद वारनश का बनाना।

१ सेर वारनश में १ छटांक सुपेद जिसत को मिलाने से सुपेद वारनश बन जयगा ॥१३०॥

रंगदार वारनश।

वारनश में नील या हरताल मिलाने से सवज़ वारनश वन जाती है शिंगरफ के मिलाने से लाल वारनश वन जाती है और एक सेर वारनश में आध पाव काजल मिलाने से काली वारनश वन जावेगी ॥१३१॥

लकड़ी का वारनश।

१०० तोला चपड़ा लाख और ६ तोला रूमीमस्तगी १२ तोला तेज़ शराव पहले लाख और रूमीमस्तगी को आग पर रक्खो जब दोनों पिघल कर मिल जायें तो उतार कर उसमें शराव मिला कर रख छोड़ो और थोड़े से दिनों के पीछे तिसको काम में लाओ ॥१३२॥

जर्मनी चांदी का वनाना।

कली ६२ तोला शीशा १८ तोला रांगा दो तोला सव को मिला कर गाल कर जो चीज चाहो वना लो ॥१३३॥

सख़्त जर्मनी चांदी का वनाना।

३२ तोला पीतल, शीशा २ तोला रांगा दो तोला जिस्त १ तोला सव को मिला कर गला कर

जो चीज़ चाहो सो बना लो ॥१३४॥

नकली सोने का बनाना।

दो तोला जिस्त को कुठाली में डाल कर पिघलाओ जब चक्र खाने लगे तो इसमें दो तोला पारा मिला कर उतार लो फिर इसमें दो तोला संखिया मिला कर खरल में डाल कर बुरादा बना लो और रख छोड़ो फिर १० तोले तांबे को गला कर इसमें ६ माशा बुरादे को डाल कर कुठाली का मुंह बंद करके तिसको आग में रक्खो जब पिगल कर एक होजाये तो जो चीज चाहो उसकी बना लो वह सोने की मालूम होगी ॥१३५॥

पीतल का बनाना।

तांबा ४॥ छटांक जिस्त १॥ छटांक पहले तांबे को कुठाली में डाल दो और ऊपर से बंद करके पिघलाओ जबकि तांबा गल जाये तो फिर उसमें जिस्त को मिलाओ पीतल बन जायेगा। दूसरी रीति—तांबा पाव भर जिस्त आध पाव दोनों को इकट्ठा पिघलाने से पीतल बन जायेगा॥

फूल धातु का बनाना।

तांबा ७ हिस्से रांगा दो हिस्से दोनों को

इकट्ठा करके कुठाली में गलाने से फूल धातु बन जायगा ॥१३७॥

धातु को जलदी पिघलाने का मसाला ।

चंद्रस पीला रंग, सुहागा, माजू फल, साबन इन सबको बराबर लेकर मिला कर इनका बुरादा बनाओ जब धातु कुठाली में अग्नि पर रखने से लाल होजाये तो इस मसाले को उसमें डाल देने से जलदी गल जायगी ॥१३८॥

पारे का पानी बनाना ।

४॥ माशा पारा ४॥ मासा नमक १॥ तोला पुटास डेढ़ पाव पानी में सबको मिलाने से पारे का पानी बन जायेगा पारे के पानी को चांदी के पानी की जगह बर्तते हैं ॥१३९॥

चांदी का पानी ।

चांदी १ तोला और नमक १ तोला सानीआड आफ पोटासीम २ तोले पानी एक सेर जब तीनों गल जायें पानी को शीशी मे भर रखो ॥१४०॥

सोने का पानी ।

६ माशा नमक ६ माशा सोना सानीआड-पोटामीम ८ माशे एक सेर पानी में सबको डाल दो

जबकि गल कर एक होजायें तो पानी को साफ़ करके बोतल में डाल रखो ॥१४१॥

तांबे का पानी।

तांबा और नमक १ तोला पोटास ४ तोले नीला थोथा एक तोला गंधक का तेजाब ४ माशा १ सेर पानी में सबको डाल कर बना लो ॥१४२॥

नीलम का बनाना।

असट्रास १०० हिस्सा नीला शीशा १२ हिस्सा जसत मगनेस १ हिस्सा इन सब को दो घंटा अग्नि देकर गालो और नीलम बना लो ॥१४३॥

मोती को चमकदार बनाना।

यदि सुच्चे मोती बदरंग हो जायें तो उनको एक थैली में ईसबगोल के साथ भर कर थैली को धीरे २ बाहर से मलो जो ईसबगोल की रगड़ से वह चमकदार बन जायें ॥१४४॥

काफ़ूर का प्याला बनाना।

आध पाव काफ़ूर आध पाव नारयल दोनों को महीन करके पीतल की कढ़ाई में डाल कर फिर कच्ची मट्टी के कटोरे का सांचा बना कर काफ़ूर के ऊपर ऊंधा रख दो और नीचे तिसके मट्टी के दीये

में तेल डाल कर मोटी बत्ती जलाओ काफ़ूर सब उड़ कर मट्टी के सांचे में जम जायेगा फिर उसको ठंडा करके पानी मे रख दो मट्टी गल जायेगी काफ़ूर का कटोरा निकल आवेगा इसको धोकर रख दो इसमें पानी पीने से जिगर और दिमाग़ को ठंडक पहुंचती है और सरसाम आदि रोगों को भी फायदा पहुंचता है ॥१४५॥

नमक का प्याला बनाना ।

पाव भर सांवर नमक और पाव भर गाजर के बीज इन दोनों को खूब महीन पीस कर मिला कर फिर उसमें थोड़ा सा पानी डाल कर छान कर किसी मट्टी के कच्चे प्याले पर उसका लेप करके सुखा लो फिर उसको गर्म पानी में डाल कर जोश दो फिर ठंडे पानी मे डाल दो मट्टी गल जायेगी नमक के प्याले को धोकर साफ़ करके रख दो ॥१४६॥

आतशी शीशे का बनाना ।

मामूली शीशे के किनारों को पत्थर के साथ घिसा कर पतला करने से शीशा बीच में से मोटा बन जायेगा यही आतशी शीशा हो जायेगा ॥

ज़मुरद का बनाना ।

हड़ताल ४॥ माशा चांदी का बुरादा २२॥

माशा पारा २२॥ माशा फटकरी २२॥ माशा सज्जी ८० माशा तांबा १६ माशा छोटे मोती २२॥ माशा मोतियों को छोड़ कर और सब चीज़ों को जुदा २ कूट कर फिर इकट्ठा कर लो फिर दो प्यालों में उस मसाले को डाल कर संपुट बना कर पांच सेर कंडों की अग्नि में रख कर फूंक दो जबकि आग ठंडी होजाये तो निकाल लो यदि रंग इसका काला हो तो पानी में धोकर फिर उसमें मोतियों को मिला दो जमुरद बन जायेगा ॥१४८॥

शिंगरफ़ का बनाना ।

पारा १५ तोला गंधक एक तोला इन दोनों को एक पक्की शीशी में डाल कर फिर शीशी को काक के साथ बंद करके फिर गर्म तंदूर में एक पक्की ईंट को रख कर उस पर शीशी को रख दो जबकि शिंगरफ बन जाये तो निकाल लो ॥१४९॥

खाने का शिंगरफ़ बनाना ।

उमदा शिंगरफ़ १ तोला परनाक १ तोला इन दोनो को नकछिकनी बूटी के अर्क में १ पहर खरल करो फिर सुखा कर दो २ चावल की गोलियां बना कर वर्तो बड़ी ताकत देगा ॥१५०॥

सुपेद मोम का बनाना ।

पीले मोम को पानी में डाल कर आग पर खूब जोश दो फिर इस की पतली २ तैह जमाओ और इसको चांदने में रखो एक या दो रोज़ इसको इसी तरह पानी में जोश देकर पतली २ तैह जमा कर चांदना में रखने से मोम सुपेद हो जायेगा ॥

जादू का सांप ।

२॥ तोला गंधक २॥ तोला काफ़ूर ५ तोला सुपेदा इनको जुदा २ महीन पीस कर फिर तीनों को मिला कर उसमें पतली सुरेश डाल कर पीसो फिर उसमें तीन ग्रेन फटकरी डाल कर मिला कर वत्तियां बना कर सुखा लो एक वत्ती के टुकड़े को आग लगाने से सांप दिखाई देगा ॥१५२॥

बे मालूम लेख ।

नौशादर के पानी के साथ कागज़ पर लिख कर सुखा लो इस तरह के लिखे हुए हरफ मालूम नही होंगे जब आग के साम्हने कागज़ गर्म किया जायेगा तो लाल अच्चर मालूम होंगे और पढ़े भी जावेंगे ॥१५३॥

फूलों का रंग बदलना।

जिस फूल के रंग को बदलना चाहो उसको गंधक की धूनी देने से उसका रंग बदल जायेगा फिर पानी में डालने से असली रंग आ जायेगा॥

कपड़ा आग में न जले।

पहले फटकरी और अंडे की सुपेदी में कपड़े को भिगो दो फिर सुखा कर नमक के पानी से उसको धोकर सुखा लो फिर वह आग पर रखने से कदाचित् भी नहीं जलेगा ॥१५५॥

अंगूठी का नाचना।

एक पोली अंगूठी बनवाओ उसमें पारा भर कर उस सूराख को बंद कर दो फिर उसको गर्म करके मेज़ पर छोड़ दो वह देर तक नाचा करेगी॥

पानी में आग का लगाना।

एक ग्लास में थोड़ा सा पानी डाल कर फिर उसमें फासफोरस आफ लाइम के टुकड़े दो छोड़ कर रख दो थोड़ी देर के पीछे पानी की तैह से आग के भबाके उठने लगेंगे ॥१५७॥

हाथ आग से न जले।

पीले मेंडक की चरबी और एमुनिआं और

(प्य)ाज की अर्क तीनों को बराबर लेकर हाथों पर
(म)लो फिर भखते (जलते) कोइलों को हाथ पर रख
(तो) कदाचित् भी हाथ नहीं जलेगा ॥१५८॥

अंगुली न जले ।

ऐसटक दो ऑस पारा एक ऑस काफूर आधा ऑस इन तीनो को जुदा २ पीस कर पहले एक को अंगुली पर लेप करो फिर उस पर दूसरे का लेप करो उस पर तीसरे का लेप करो फिर अंगुली आग पर रखने से भी नहीं जलेगी ॥१५९॥

एक घंटे में वृक्ष लग जाये ।

करस के बीजों के तेल में तुलसी वगैरा छोटे छोटे वृक्षों के बीजों को मिला कर किसी मट्टी के बर्तन में डाल कर फिर मट्टी के बर्तन को मट्टी में आठ दिनों तक गाड़ दो फिर निकाल कर बहुत से मनुष्यों के साम्हने उन बीजों को मट्टी मे डाल कर थोड़ा पानी दो एक घंटा मे वृक्ष लग जायेगा ॥

अंडा तोप की आवाज़ दे ।

एक अंडे को लेकर उसके दोनो तर्फ़ छिद्र करके उसके अंदर की जरदी और सुपेदी को निकाल दो फिर गंधक और चूने को पीस कर

मिला कर उसमें भर दो और छिद्रों के मुखों को मोम के साथ बन्द कर दो फिर अंडे को नदी में फैंको तोप की आवाज देगा ॥१६१॥

पानी में आग।

एक बोतल लेकर उसमें १२ हिस्से फासफोरस और १ छटांक साफ पानी डाल दो फिर उसको दीये पर गर्म करने से उसमें आग बलती हुई मालूम होगी ॥१६२॥

पैसे का रुपया बनाना।

दो रुपयों को लेकर उनके ऊपर दो अधनी पैसों को चमोड़ दो पहले लोगों को पैसे वाला पासा दिखा कर फिर फुरती से छू मंत्र करके उलट दो लोग जान जायेंगे कि पैसों के रुपये बन गये हैं॥

रुपहरी और सुनहरी स्याही।

सुपेद सुरेश को लेकर आग पर किसी वर्तन में पिघलाओ जब वह गल जाये तो उसमें रांगे के सफूफ को मिला कर कूटो और पीसो जबकि दोनों मिल कर एक हो जायें तो उसकी टिकिआं बना कर सुखा लो जब काम पड़े तो उन टिकिओं को गर्म पानी में घोल कर लिखो यह रुपहरी स्याही होगी।

नाते समय इसी में जरासी हरताल मिलाने से सुनहरी बन जायेगी ॥१६४॥

अद्भुत स्याही।

१ छटांक स्याही में दो तोला मिसरी मिला कर घोल कर लिखने से नीचे के कागज़ की सब तैहों पर लिखा जायगा ॥१६५॥

पत्थर पर छापने की स्याही।

अलसी के तेल को किसी तांबे या लोहे के बर्तन में डाल कर आग लगा दो जब जल कर ठंडा होजाये तो उसमे काजल को डाल कर घोटो फिर उसको बेलन पर चढा कर बेलन को प्रेस पर मलो फिर छापो ॥१६६॥

शिंगरफ की लाल स्याही।

पहले शिंगरफ को पानी के साथ खरल करो और रख दो जब इसके ऊपर पीला २ जाला हो जाये उसको नितार कर फेंक दो फिर उसमें पानी डाल कर खरल करो फिर उसी तरह पीले पानी को फेंक दो पांच या ६ बार ऐसा करके फिर इसमें गोंद का लुआब डाल कर खरल करके सुखा लो जब चाहो पानी में घोल कर लिखो ॥१६७॥

सिंधूरी स्याही बनाना।

सिंधूर को खरल करके फिर उसमें मिसरी को मिला कर काम में लाओ ॥१६८॥

लाजवरदी स्याही।

लाजवरद को महीन पीस कर फिर इसमें गोंद को मिला कर लिखो उमदा स्याही बनेगी ॥१६९॥

पोथी लिखने की पक्की स्याही।

कच्ची पीपल लाख ५ तोले लेकर इसको पाव भर पानी में डाल कर अग्नि पर औटाओ जब रंग निकल आवे तो इसमें एक तोला पठानीलोध एक तोला विजैसार ६ माशा सुपेद सज्जी ६ माशा सुहागा ६ माशा फटकरी इन सबको पीस कर उसमें डाल कर फिर थोड़ा औटा कर छान कर फिर उसमें दो तोला काजल मिला कर खरल करो गाढ़ा हो जाने पर टिकिया बना कर सुखा लो जब काम पड़े तब एक टिकिया को दवात में डाल कर थोड़ा सा गर्म पानी उसमें डाल दो और फिर लिखो ॥१७०॥

लाल स्याही बनाना।

५ तोला कच्ची लाख को लेकर आध सेर पानी में उसको इतना औटाओ जो तीसरा हिस्सा

बाकी रह जाये फिर उसको छान करे लिखो यह पक्की लाल स्याही होगी ॥१७१॥

अंग्रेजी काली स्याही ।

२ तोला बड़ी हरड़ २ तोला वहेड़ा एक तोला कसीस एक तोला माजू इन सब को कूट कर महीन कर फिर लोहे के बर्तन में इनको आध सेर पानी में भिगो दो और तीन दिन तक भीगा रहने दो फिर तिसको आग पर इतना औंटाओ कि आधा पानी उसका सूख जाये फिर इसमें १ तोला तेज़ सिरका डाल कर काम मे लाओ ॥

बल्युबलैक स्याही ।

१ तोला कसीस को पाव भर पानी में जोश देकर फिर इसमें ६ माशा अंग्रेजी नील मिला कर तैय्यार कर लो ॥१७३॥

टाईप की स्याही ।

एक सेर अलसी के पकाये हुऐ तेल को गर्म करके इसमें आध सेर राल को पीस कर मिला दो फिर इसी में दस तोले साबुन और जरूरत के मुआफिक काजल मिला कर स्याई को तैयार कर लो ॥ १७४ ॥

नीली स्याही का बनाना।

हरड़ बहेड़ा और आंवला हर एक दो २ तोला कसीस १ तोला इन सबको कूट कर एक सेर पानी में खूब जोश दो जब आधा पानी रह जाये तो उतार कर छान लो फिर एक तोला अंग्रेजी नील को उसमें खूब मिलाओ स्याही बन जायेगी फिर अपने काम में लाओ ॥१७५॥

कच्ची लिखने की स्याही।

कड़वे तेल को जला कर उसका १० तोला काजल उतार लो फिर ४० तोला बबूर की गोंद को लेकर १ सेर पानी में भिगो दो जब गोंद गल कर पानी होजाये तो किसी महीन कपड़ा में छान लो और उसको कड़ाई में डाल कर उसमें उस काजल को डाल कर खूब घोटो जब अच्छी तरह से मिल जाये तो कानों पर चढ़ा कर या पीपल के पत्तों पर डाल कर सुखा लो जब काम पड़े दवात में डाल कर लिखो इसी स्याही से बही खाता लिखा जाता है ॥१७६॥

कपड़ा पर लिखने की स्याही।

भुलावे को लेकर उसकी टोपी को उतार दो

उसमें से तेल निकलेगा उस तेल से कलम को भिगो करके कपड़ा के किसी जगह पर लिख कर उसको सुखा लो वह लिखा हुआ ऐसा पक्का होगा कि कई वार भट्टी पर रखने से भी वह नही मिटेगा और धोबी उसको बदल भी नहीं सकेगा। दूसरी रीति—काष्टक को लेकर पानी में भिगो कर उसके साथ लिखने से भी उसका रंग धोने से नहीं छूटता। तीसरी रीति—एक किसम की काई मट्टी होती है पंसारी से मिल जाती है उसको पानी में भिगो कर उसके साथ लिखने से कभी भी उसका रंग नहीं छूटता ॥ १७७ ॥

अतर निकालने का आसान तरीका।

एक कटोरा में पानी भर कर उसके ऊपर गुलाब के फूलों को या मोतिया के फूलो को तराओ फिर उनके ऊपर एक अग्नि का भपता हुआ अंगारा रख दो तो फूल मे से अतर की बूंदे निकल कर पानी मे जा रहेंगी फिर रूई के फाहे के साथ उनको इकट्ठा करके निकाल लो ॥१७८॥

चंबेली का तेल।

पाव भर चंबेली के फूलों में पाव भर धुले

हुए खुपंद तिलों को लेकर फूलों की तेहों में तिलों को रख दो और कई एक दफा उलट पुलट करते रहो जबकि फूलों में गंधि न रहे तो फूलों को फेंक दो फिर और ताजे फूलों को लेकर इसी तरह से करो इसी तरह चार पांच बार करके फिर तिलों का कोहलू में तेल निकलवा लो मगर तिलों से फूल दुगने होने चाहिये इसी हिसाब से जितना चाहे बना लो ॥१७६॥

बटने का बनाना।

पाव भर जौं का आटा २ तोला हलदी एक तोला नागरमोथा छलेरा १ तोला बालछड़ एक तोला कपूर कचरी १ तोला खीरे का मगज ५ तोला कद्दू का मगज ५ तोला सब को जुदा २ पीस कर फिर मिला कर शरीर पर मलो फिर गर्म पानी से स्नान कर डालो शरीर हलका और साफ़ हो जायेगा ॥१८०॥

पागल कुत्ता काटे का इलाज।

जखम के ऊपर कुचले को घिसा कर लगाओ और १ तिल भर कुचले के सत को मोहनभोग में मिला कर तिसको खिला दो ॥१८१॥

सांप के भागने का उपाय।

जिस मकान में बिल्ली या नेवला और जंगली चूहा तथा मोर या मोर की पूंछ का चवर यह रहते हैं उस मकान से सांप भाग जाता है और प्याज़ की गंधि से तथा तमाकू की गंधि से भी सांप भाग जाता है॥१८२॥

खटमलों का दूर करना।

एक थैली में काफ़ूर को बांध कर खाट के नीचे लटकाने से सब खटमल भाग जायेंगे॥१८३॥

दीये पर से परवानों का हटाना।

१ तोला नौशादर को महीन कूट कर उसमें दो तोला प्याज को कूट कर मिला कर दीये के पास रखने से परवाने फिर दीवे के पास नहीं आवेंगे॥१८४॥

बिसकुट का बनाना।

ताज़ा मैदा पाव भर आधी छटांक मक्खन ताज़ा दूध आध पाव मैदे में मक्खन को मिला कर फिर दूध को मिला कर खमीर उठाओ फिर आधी इंची उसकी मोटी पटड़ी बना कर उसके सांचे द्वारा बिसकुट बना कर फिर उनको चकला पर बेल कर

फिर इनको धीमी आग वाले तंदूर में पका लो यदि उसका रंग लाल करना हो तो उस पर दधि या घृत को मल दो ॥१८५॥

मीठा बिसकुट।

अच्छा मैदा २ पौंड मक्खन ३ औंस बूरा चीनी ४ औंस दूध ३ औंस दूध को गर्म करके तिसमें मैदे को मिला कर फिर मक्खन को मिलाओ और सख्त सान के खमीर उठाओ और ऊपर वाली रीति से पका लो ॥१८६॥

नमकीन बिसकुट।

आधी छटांक मैदा आधी छटांक मक्खन दो माशा नमक इन सबको मिला कर आध पाव पानी में या दूध में इतना पकाओ जो रेवड़ी की तरह बन जाये फिर मंद अग्नि वाले तंदूर में बिसकुट बना कर पका लो या तवे पर पका लो ॥१८७॥

डबल रोटी के तंदूर का बनाना।

एक लंबी कबर की तरह गोल बुरज की तरह, ईटों का पक्का इस रीति से बनाओ जोकि ३ फुट ऊंचा हो ३ फुट चौड़ाई हो लंबाई भी इतनी हो पीछे धूआं के निकलने की एक मोरी बनाओ उसमें

आधा फुट रेता बिछा कर उस पर ईंटों का पक्का फरश कर दो और तंदूर के मुंह पर एक लोहे का छोटा सा दरवाज़ा बना कर लोहे के तखता से उस का मुंह बंद कर दिया करो इस तरह का पहले तंदूर बनाओ ॥१८८॥

डबलरोटी का खमीर।

४ कुआर्टर पानी में दो औंस हापल डाल कर आधे घंटे तक पकाओ फिर तिसको छान कर ठंडा करो जब वह शीर गर्म होजाये तो इसमें थोड़ा सा नमक और, थोड़ी सी चीनी मिला कर खूब फांटो पश्चात् एक पौंड मैदे को लेकर इस अर्क से थोड़ा सा उसमे डाल कर खमीरा करो फिर उसमें सब अर्क को मिला कर रख दो फिर उसमें तीन पौंड पानी को और बाकी के मैदे को मिला कर अग्नि पर चढ़ा कर हिलाओ और दो रोज तक रख दो फिर उसको छान कर बोतल में रख दो इसी में से मैदे में थोड़ा डालने से मैदा खमीरा हो जायेगा उसको खूब फांटो जबकि फूल जाये तो उसके लोइये बना कर छोटे ... रख कर उसी तंदूर को खूब ... अंदर

तवों को रख कर मुंह उसका बंद कर दो पक जाने पर निकाल लो ॥१८६॥

मामूली खमीर का बनाना।

उमदा मैदा आध सेर मिसरी आध पाव नमक १ तोला आध सेर पानी में सब को मिलाकर फिर तिसको अग्नि पर उबालो जब शीर गर्म हो जाय तो किसी कलईदार बर्तन में ढांप कर चौबीस घण्टा तक रख दो खमीर बन जायगा फिर उस को मैदा में मिला कर रोटी बनाओ ॥१६०॥

करेलों का कड़वापन दूर करना।

करेलों को ऊपर से छील कर फिर फाड़ कर फिर उन को मंद अग्नि पर कडुवे तेल में पकायें मगर पानी न छूने दें ॥१६१॥

प्याज़ की गन्धि हटाना।

प्याज़ के गंठों को छील कर मोटा २ कुतर कर इन में नमक को पीस कर लगा दो और थोड़ी देर तक उनको धूप में रख दो फिर उन को साफ पानी से धो डालो और फिर उनको घी में बना लो ॥ १६२ ॥

सिरका बनाना ।

२ सेर साफ पानी में डेढ़ पाव सीरा डाल कर इस को तीन दिनों तक धूप में रख दो फिर इस में इचमिच गंधक के तेज़ाब को डालकर बारां दिनों तक धूप में रखो और रोज़ हिलाया करो फिर इस को छान कर बोतलों में डाल लो ॥१६३॥

गंधक का ग्लास बनाना ।

पाव भर गंधक को साफ करके फिर लोहे की कड़ाई में डालकर मंद अग्नि पर तिसको गला कर फिर किसी पीतल के ग्लास या कटोरे में ज़रा सा घी चारो ओर चोपड़ कर उस में पिघली हुई गंधक को डालकर हाथों से उस कटोरा को टेढा करो ज उस के अंदर चारो ओर गंधक लग कर जम जब ठण्डा हो जाय उस को ऊंधा करने से गं का कटोरा भी उस से निकल आयेगा यह कटो बहुत से रोगों में काम देता है गंधक के करने की रीति पीछे लिख आये हैं उसी रीति साफ कर लो ॥१६४॥

बूट की स्याही बनाना ।

१ छटांक बबूर का गोंद १ छटांक

गुड़ ५ तोला काजल ५ तोला सिरका १ छटांक सिप्रिट सब चीज़ों को कूट कर छान कर सिप्रिट में मिलाकर फिर काम में लाओ ॥१६५॥

मूंगे का कुश्ता ।

उमदा मूंगा १ तोला लेकर उस को आध पाव प्याज की नुगदी में रखकर फिर संपुट बना कर दस सेर कंडों में रखकर फूंक दो जब ठण्डा हो जाय तो निकाल कर खरल में पीस कर किसी शीशी में रख दो फिर १ रत्ती से २ रत्ती तक इसकी खुराक मक्खन में खाने की है धातु-क्षीण कमज़ोरी नज़ला जुकाम (रेशा) वगैरा रोगों पर दिया जाता है ॥१६६॥

दाद की दवा ।

२ तोला तारपीन का तेल एक तोला काफ़ूर दोनों को एक शीशी में डालकर मिला दो फिर दाद वाली जगह पर लगाओ बिलकुल आराम हो जायगा ॥१६७॥

गुप्त लिखना ।

कलमीशोरा या नौशादर या सुपेद फटकरी या मदार का दूध या बरगद का दूध इन

में से जिस के साथ लिखना चाहो उस में ज़रा सा पानी मिलाकर फिर उसके साथ कागज पर लिखो सूख जाने पर कोई भी अक्षर नहीं दिखाई देगा जब उसको आग के साम्हने करोगे तो साफ अक्षर पढ़े जायेंगे ॥१९८॥

हथ्यारों को साफ करना ।

जिस लोहे के हथ्यार पर या चाकू वगैरा पर ज़ंगार लग जाय तो सिरण के पत्तों का अर्क निकाल कर तिसको गर्म करके हथ्यार वगैरा पर मलो ज़ंगार छूट जायगा ॥१९९॥

सांप के काटे की दवा ।

हीरा हींग १ माशा इरिंड की कोंपल १ माशा दोनों को मिलाकर पीस कर इसकी दस गोलियां बनाओ और जिसको सांप ने काटा हो पहले दो गोली तिसको खिला दो अगर उसके दांत बंद हो गए हों तो एक गोली उसके दांतों पर मलो और दूसरी को किसी तरह से उसके गले के अंदर लंघा दो फिर थोड़ी देर पीछे एक और गोली उसको खिला दो ॥२००॥

बिच्छू काटे की दवा।

फटकरी को पिघला कर उस जगह पर लगा दो जहां पर बिच्छू ने काटा हो ॥२०१॥

मिर्गी की दवा।

१ छटांक काली मिर्च को लेकर डंडा थोर में छिद्र करके उसमें से गूदे को निकाल कर उस में मिर्चों को भर कर उसी गूदे को उसी में भर दो फिर चाली दिनों के पीछे जाकर उन मिर्चों को निकाल कर छाया में सुखा कर पीस कर उसकी नसवार बना कर मिर्गी वाले को सुंघाओ अच्छा हो जायेगा ॥२०२॥

हवा से आग का उत्पन्न करना।

ऊंठ की मेंगन को जला कर उनको शहत में बुझा कर रख छोड़ो जिस काल में उसको तोड़ कर हवा में रखोगे तो उसमें आग उत्पन्न हो जायेगी ॥२०३॥

हथ्यारों का साफ करना।

केतकी फूल के गूदे को पुराने सिरका में पीस कर हथ्यारों पर लगा कर सुखा कर फिर पानी से धोने से साफ़ हो जायेंगे ॥२०४॥

अफ़ीम का नशा उतारना ।

रोगने गुंजद के चार या पांच कत्तरे कान में टपकाने से अफ़ीम का नशा उतर जाता है ॥२०५॥

चाक़ू वगैरा हथ्यारों पर नाम लिखना ।

१ तोला सज्जी १ तोला नीलाथोथा १ तोला नौशादर १ तोला फटकरी पीली इनको पीस कर निंबू के अर्क में मिला कर धूप में रख दो फिर लोहे पर मोम को लगा कर फिर लोहे की कलम के साथ जोर के साथ लिखो और उन अक्षरों में निंबू वाली दवाई को भर दो तीन घंटों के पीछे साफ कर दो अक्षर साफ निकल आवेंगे ॥२०६॥

मुरदा मच्छी का पानी में तैरना ।

मरी हुई एक मछली को लेकर भुलावों के तेल में तिसको डुबो कर पानी में छोड़ दो वह तैरने लग जायेगी ॥२०७॥

बिना खूंटी वाली खड़ांव पर चलना ।

सुपेद घुंगची को पीस कर खड़ांव के ऊपर लगा दो और छाया में खड़ांव को सुखा कर रख छोड़ो जब चलना हो पांव को धो कर खड़ांव को पहर कर चलो ॥२०८॥

लोहे को तांबा बनाने की रीति।

एक शीशे के बर्तन में नीलेथोथे को डाल कर फिर उसमें थोड़ा सा पानी भर दो फिर उसको ६ या सात घंटा तक रख दो फिर उसमें कोई लोहे की चीज़ डाल दो वह तांबे की बन जायेगी. फिर तिसको खटाई के साथ धो डालो तांबे की तरह चमकेगी ॥२०६॥

रेशमी कपड़ा पर से तेल का दाग हटाना।

एक कागज़ी निंबू को लेकर उसका अर्क निकाल लो फिर उसमें थोड़ा सा नमक पीस कर मिलाओ फिर साबुन की झाग निकाल कर उसमें एक रत्ती चूना, मिला कर उसी में मिला दो फिर उसको दाग़ पर लगा कर धूप में सुखा कर गर्म पानी से धो डालो दाग दूर हो जायेगा ॥१२०॥

पानी का जमाना।

लसूड़ों की गुठलियों को पीस कर घड़े के पानी में डाल देने से पानी जम जायेगा ॥२११॥

लकड़ी पर लिखने की तरकीब।

राल को महीन पीस कर लकड़ी पर मलो उसके मलने से लकड़ी पर स्याही नहीं बैठेगी फिर

ज़ली कलम को लेकर उमदा स्याही से लकड़ी पर लिखो सूख जाने पर फिर गन्धक के तेज़ाब को लिखे हुए अक्षरों पर लगाओ मगर इधर उधर न लगने पावे फिर थोड़ी देर पीछे तेज़ाब उस लकड़ी को गला देगा और लिखा हुआ खोदा हुआ मालूम होगा ॥२१२॥

पत्थर पर लिखना।

मोम को गला कर पत्थर पर लिखो फिर तेज़ सिरका में फटकरी और नौशादर को पीस कर मिला दो फिर उस पत्थर के बर्तन को सिरका में डाल दो फिर तीन रोज़ के पीछे निकाल कर ठंडे पानी से उसको धो डालो अक्षर उस पर प्रकट हो जायंगे ॥२१३॥

लोहे के चाकू वग़ैरा पर लिखना।

नीलाथोथा और नौशादर दोनो को बराबर लेकर सिरका में मिला दो फिर तिस से लोहे पर लिख कर तिसको धूप में रख दो सूख जाने पर धो डालो अक्षर निकल आवेंगे ॥२१४॥

रगड़ से आवाज़ निकले।

एक हिस्सा नील एक हिस्सा गन्धक दो

हिस्सा क्लोरेट आफ पुटास तीनों को जुदा २पीस कर फिर मिला दो उसमें से एक चुटकी किसी पत्थर पर रख कर ऊपर से दूसरा पत्थर मारो बड़ा आवाज़ निकलेगा और धूआं भी निकलेगा फिर इसी मसाला को किसी कागज़ के टुकड़ा में बन्द करके ऊपर उसके मट्टी को लगा कर गोली सी बना लो फिर उसको सुखा कर रखो फिर उस गोली को गुलेल पर चढ़ा कर निशाने पर मारो निशाने पर लगते ही बूंदक की तरह आवाज होगा और धूआं भी निकलेगा ॥२१५॥

बनावटी हाथी दांत।

दो तोला सुपेद चावल तीन तोला अण्डे का छिलका एक तोला हाथी दांत का बुरादा तीनों को तेज़ शराब की बरांडी में डाल दो तीन रोज़ के पीछे वह मोम की तरह बन जायेगा फिर जो चीज़ उसकी बनानी हो बना डालो सूख जाने पर वह हाथी दांत की मालूम होगी ॥२१६॥

हाथी दांत की चीज़ पर रंग चढ़ाना।

हाथी दांत की किसी चीज़ को १ घंटा निंबू के अर्क में डुबो दो फिर निकाल कर सुखा कर

जो रंग चाहो उस पर मल दो वह रंग उस चीज़ का हो जायेगा ॥२१७॥

रोग़न का बनाना।

५ सेर राल को लेकर आग पर बर्तन में डाल कर रखो जब पिघल जाये तो उसमें ४ सेर तारपीन का तेल मिला कर खूब पकाओ फिर ठंडा करके काम में लाओ। दूसरी रीति—४ सेर अलसी का तेल और आध सेर गन्दाबरोज़ा दोनों को मिला कर आग पर इतना पकाओ कि तार निकलने लगे फिर उतार कर ठंडा करके काम में लाओ ॥२१८॥

लकड़ी पर रोग़न चढ़ाना।

१ छटांक गेरू को बारीक पीस कर रखो एक छटांक सरसों का तेल दो तोला अरिंड का तेल दो तोला गन्दाबरोज़ा १ तोला तारपीन का तेल गेरू के समेत सब दवाईयों को मिला कर खूब जोश दो जबकि सब मिल कर एक हो जायें तो उनको ठंडा करके फिर जिस चीज़ पर चाहो चढ़ाओ जब सूख जायेगी तो कुछ चमक तो नहीं आवेगी मगर लकड़ी का रंग पक्का हो जायेगा बिगड़ेगा नहीं ॥

हिस्सा क्लोरेट आफ पुटास तीनों को जुदा २पीस कर फिर मिला दो उसमें से एक चुटकी किसी पत्थर पर रख कर ऊपर से दूसरा पत्थर मारो बड़ा आवाज़ निकलेगा और धूआं भी निकलेगा फिर इसी मसाला को किसी कागज़ के टुकड़ा में बन्द करके ऊपर उसके मट्टी को लगा कर गोली सी बना लो फिर उसको सुखा कर रखो फिर उस गोली को गुलेल पर चढ़ा कर निशाने पर मारो निशाने पर लगते ही बूंदक की तरह आवाज होगा और धूआं भी निकलेगा ॥२१५॥

बनावटी हाथी दांत।

दो तोला सुपेद चावल तीन तोला अण्डे का छिलका एक तोला हाथी दांत का बुरादा तीनों को तेज़ शराब की बरांडी में डाल दो तीन रोज़ के पीछे वह मोम की तरह बन जायेगा फिर जो चीज़ उसकी बनानी हो बना डालो सूख जाने पर वह हाथी दांत की मालूम होगी ॥२१६॥

हाथी दांत की चीज़ पर रंग चढ़ाना।

हाथी दांत की किसी चीज़ को १ घंटा निंबू के अर्क में डुबो दो फिर निकाल कर सुखा कर

चाहो उस पर मल दो वह रंग उस चीज़ जायेगा ॥२१७॥

रोग़न का बनाना।

५ सेर राल को लेकर आग पर बर्तन में कर रखो जब पिघल जाये तो उसमें ४ सेर ीन का तेल मिला कर खूब पकाओ फिर करके काम में लाओ। दूसरी रीति—४ सेर सी का तेल और आध सेर गन्दाबरोज़ा दोनों मिला कर आग पर इतना पकाओ कि तार ळने लगे फिर उतार कर ठंडा करके काम लाओ ॥२१८॥

लकड़ी पर रोग़न चढ़ाना।

१ छटांक गेरू को बारीक पीस कर रखो एक टांक सरसों का तेल दो तोला अरिंड का तेल दो ोला गन्दाबरोज़ा १ तोला तारपीन का तेल गेरू समेत सब दवाईयों को मिला कर खूब जोश दो बकि सब मिल कर एक हो जायें तो उनको ठंडा रके फिर जिस चीज़ पर चाहो चढ़ाओ जब सूख नायेगी तो कुछ चमक तो नहीं आवेगी मगर लकड़ी का रंग पक्का हो जायेगा विगड़ेगा नहीं ॥

हिस्सा कलोरेट आफ़ [illegible] का पानी। कर फिर मि[illegible] की बोतल लेकर उसमें इमली पर रख[illegible] कर उससे आधी बोतल आव[illegible] केसर को पानी में पीस कर उसी इस[illegible] दो दोनों पानी आपस में मिलेंगे नहीं किन्तु जुदा २ ही रहेंगे ॥२२०॥

चिमनी वगैरा शीशा को धुंदला करना।

अंडे की सुपेदी को चिमनी पर लगा कर सुखा दो चिमनी धुंदली हो जायेगी शीशे पर लगाने से शीशा धुंधला हो जायेगा इससे चिमनी की रोशनी आंख को नुकसान नहीं करती ॥२२१॥

उपधातुओं के जौहर निकालने।

दो मट्टी के पके हुए मोटे प्याले लो और दोनों के मुंह को मिला कर पहले देख लेना जो बराबर के हों और दोनों के मुंह मिल भी जायें फिर उन दोनों प्यालों के मुंहों को पत्थर पर खूब घिस कर साफ और बराबर करके फिर जिस पर धातु का जौहर निकालना हो उसको एक प्याला में भर कर [illegible] के मुंह को उसके साथ मिला दो मगर [illegible] तरह की मोरी न रहे फिर उस [illegible]

मट्टी या रूमीमस्तगी या खड़िया मट्टी को लगा दो जो उनके भीतर हवा किसी तरह से भी न जाये फिर नीचे वाले प्याले को कोइला की तेज़ आग पर रखो और ऊपर वाले प्याले के ऊपर कपड़े को पानी में भिगो कर रखो जब २ ऊपर वाला कपड़ा गर्म हो जाया करे तो फिर उसको पानी से तर कर दिया करो बस आधे घंटा में या पौन घंटा में जौहर उड़ कर ऊपर वाले प्याला में जा लगेगा इसी तरह दूसरी दफा भी करो फिर उस जौहर को चाकू से उतार कर रख लो। गंधक, पारा, हरताल, शिंगरफ, संखिया, नौशादर, मुरदासंग, रसकपूर, दालचिकना वगैरा यह सब उपधातु हैं। शिंगरफ को घी कुवार के रस में या केवड़ा के रस में खरल करके सुखा कर जौहर निकालो और हरताल को खट्टे अनार के पत्तों की रस मे खरल करके सुखा कर जौहर निकालो और गन्धक को नौशादर और लोहके चूर्ण के साथ मिला कर जौहर निकालो और संखिया को प्याज के अर्क में खरल करके सुखा कर जौहर निकालो और पारा को नमक के तेज़ाव मे या खट्टे अंगूर के रस में खरल कर सुखा कर जौहर निकालो इस रीति से निकला हुआ जौहर बड़ा गुण कारी होता है॥२२२।

सांप के काटे हुए की दवा।

सांप का काटा हुआ सात रोज़ तक नहीं मरता यदि वह मुरदा की तरह हो जाता है जीते का उसमें कोई भी चिन्ह नहीं दिखाई देता तो भी भीतर उसके जान रहती है इस वास्ते उसे जलदी उठा कर इलाज करो जिसको सांप काटे कुचला को पानी में पीस कर उसके गले में टपकाओ और पारे को तिसके सिर पर और सारे शरीर पर खूब मलो तुरंत अच्छा हो जायेगा यदि होश में हो तो भी इसी दवाई को करो या जमालगोटा को खिलाओ इससे भी अच्छा हो जाता है ॥२२३॥

कै बंद करने की दवा।

जिस आदमी को पुनः २ कै आती हो और खाया पीया पेट में न ठहर सके उसको १ माशा जायफल १ माशा लौंग आध माशा छोटी इलायची का दाना इनको महीन पीस कर तीन माशा शहत में मिला कर कई वार थोड़ी २ देर में खिलाओ कै जरूर बन्द हो जायेगी ॥२२४॥

खांसी की दवा।

१ तोला छोटी पीपल १ तोला मैदा सोंठ ६

माशा छोटी इलायची का दाना इन तीनों को महीन पीस कर फिर काले धतूरे की पत्ती के रस में खरल करके मोटे चने के बरावर गोलियां बना कर रख छोड़ो खांसी खुशक हो या तर हो दो गोली सवेरे और दो गोली संध्या को खाकर ऊपर से एक घूंट पानी का पी ले तीन दिन में अच्छा हो जायेगा॥२२५॥

सांप को भगाने की दवा।

जिस कोठड़ी में सांप हो वहां पर राई को नौशादर के साथ पीस कर डाल देने से सांप भाग जायेगा ॥२२६॥

मक्खियां भाग जायें।

अकरकरा गंधक और नरगस की जड़ तीनों को बरावर लेकर महीन पीस कर फिर पानी में खूब मिला कर जहां पर छींटोगे मक्खी कोई भी न रहेगी ॥२२७॥

आग से हाथ न जले।

नौशादर और काफूर दोनों को बरावर लेकर घीकुवार के रस में महीन पीस कर हाथ पर मलो जबकि हाथ सूख जायें तब हाथ पर अग्नि के चिनगारे को रख लो हाथ नहीं जलेगा ॥२२८॥

हवा में दीया न बुझे।

समुद्रफेन और गंधक दोनों को बराबर लेकर पीस कर रूई में लपेट कर काले तिलों के तेल में उस बत्ती को तर कर दीये में रख करके जलाओ हवा में और वरसते पानी में नहीं बुझेगा। दूसरी रीति—तिलों के तेल को दीये में डाल कर जलाओ मगर दीये की बत्ती पर एक माशा नमक पीस कर डाल दो फिर हवा में रखने पर भी वह नहीं बुझेगा ॥२२९॥

कपड़ा आग से न जले।

एक तोला फटकरी को लेकर पीस कर फिर बारां अंडों की सुपेदी को निकाल कर उसमें फटकरी को मिला कर कपड़े पर मल कर सुखा दो फिर आग लगाने से कपड़ा नहीं जलेगा ॥२३०॥

नकली हींग का बनाना।

एक सेर भेड़ का दूध लेकर इसमें दस तोला असली हींग को मिला कर किसी मट्टी के बर्तन में डाल कर उसका मुंह बन्द करके बीस दिन धूप में रखने से खमीर उठ आवेगा जब सूख जाये तो हींग तैय्यार हो जायेगी ॥२३१॥

कीड़ियों के भगाने की दवा।

जहां पर कीड़ियां हों वहां पर नागदौं की पत्ती को रख दें कीड़ियां भाग जायेंगीं, लाल कीड़ियां हों तो सुहागा नमक लौंग इन सब को पीस कर उनकी बिल पर छींट दें भाग जायंगी फिर नहीं आवेंगी ॥२३२॥

कपड़े से दाग छुड़ाने की विधि।

यदि कपड़े पर किसी तरह से लहू का दाग लग जाये तो नमक के पानी में धो डालो दाग छूट जायेगा ॥२३३॥

यदि कपड़े पर फलों के रस का दाग अथवा मेंहदी के रंग का दाग लग जाये तो कबूतर की बिष्ठ को पानी में औटा कर तिसी पानी के साथ कपड़े को धो डालने से छूट जाता है ॥२३४॥

नील का दाग ताजे दूध को गर्म करके तिसके साथ कपड़े को धोने से छूट जाता है ॥२३५॥

स्याही का दाग पुराने सिरका को पानी में गर्म करके उस पानी के साथ धोने से छूट जाता है ॥२३६॥

चिकनाई का दाग जिस कपड़ा पर लगा हो

उस पर पहले नमक और चूना पीस कर मलो फिर नमक और चूना को पानी में घोल कर उसी से कपड़े को धो डालो ॥२३७॥

जिस कपड़ा पर घी की चिकनाई लगी हो उस पर तेल को लगा कर रख दो और जिस पर तेल की चिकनाई लगी हो उस पर घी को लगा कर रख दो फिर इस कपड़े को पानी डाल कर औंटाओ दाग छूट जायेगा ॥२३८॥

पशमीना पर की चिकनाई इस तरह से छूटती है पहले जौं की भूसी को पानी में औंटा कर उस पानी से धोकर फिर गन्धक का धूआं देनें से दूर हो जायेगी ॥२३९॥

रेशमी कपड़ा की चिकनाई—सूखा चूना और नमक पीस कर उस पर डालो फिर अलसी को पीस कर तिस पर डालो और इतनी देर तक रखा रहनें दो कि वह सब चिकनाई को पी जाये फिर साफ कर दें दाग छूट जायेगा ॥२४०॥

सब तरह के दागों के छुड़ाने की रीति—ऊंठ की मेंगनों को पीस कर पानी में घोल दें फिर तिसमें कपड़े को भिगो दो उसी में कपड़े को दिन

रात (आठ पहर) पड़ा रहने दो दूसरे दिन फिर साफ़ पानी से धो डालो फिर हींग और साबुन के पानी से धोने से सब तरह के दाग़ छूट जायेंगे ॥२४१॥

इति स्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधिरेण
विरचिता 'गुणों का खजाना' नामक ग्रन्थे
तृतीयो ऽध्यायः ॥३॥

चौथा अध्याय ।

अब चौथे अध्याय में अनेक प्रकार की तजरबा की हुई औषधियां और अनेक तरह के और अनेक वस्तुओं के गुण लिखे जाते हैं ।

संखिआ मारने की विधि ।

पुठकंडा को सुखा कर जला कर तिसकी दो सेर पकी राख बना लो और एक मन बेरी की लकड़ी को सुखा कर रख लेना, एक लोहे की कड़ाई में तीन पाव राख पुठकंडा की खूब दबा कर उसके ऊपर चार या पांच तोला भर संखिये की डली को रख कर उसके ऊपर एक डेढ़ बिता भर के खर को सीधा खड़ा करके फिर तीन पाव राख को उसके ऊपर दबा दो राख से एक बिता भर बाहर वह खर रखो, आध सेर राख को जुदा रखो और कड़ाई के नीचे बराबर की आग उसी बेर की लकड़ी की चार पहर तक जलाओ आग

न तो अति तेज़ हो और न अति मंद ही हो किंतु बराबर की हो और एक कड़छी को लकड़ी के साथ बांध कर दो हाथ के फ़ासला पर खड़े हो कर जहां से उस राख में से धूत्रां निकले उस कड़छी में थोड़ी सी राख से दबाते जाओ जब वह खर जल जाये तो जान लेना जो अब आग ऊपर को आगई है फिर जब धूत्रां निकलना बंद होजाये और चार पहर बीत जायें तो आग का जलाना बंद कर देना दूसरे दिन सवेरे जब राख ठंडी होजाये तो उसमें से उस संखिये की डली को निकाल लेना वह खिल जायेगी परंतु रंग तिसका कुछ काला ही रहेगा तिसको पीस कर किसी शीशी में रख दो जिसको गंठिया या वाई किसी तरह की भी हो उसको एक चावल भर मुनका में देना जिसको दमे की बीमारी हो उसको भी चावल भर मुनका में देना और बवासीर वाले को १ चावल भर मक्खन में देना ॥१॥

रस का बनाना ।

संखिआ सुपेद कच्चा शोधा हुआ १ तोला गोल मिर्च १ तोला कत्था १ तोला तीनों को अदरक के रस में खरल करके मूंग के दानों के बरा-

बर गोलियां बनाओ। आतशक की बीमारी वाला १ गोली को घृत के साथ खाये। जिसको सुन्न हो जाये वह गर्म पानी के साथ १ गोली को खाये। गंठिया या बाई वाला भी गर्म पानी के साथ १ गोली को नित्य खाये। नामरदी वाला घृत के साथ १ गोली को खाये परंतु सवेरे निरने मुंह ११ दिनों तक खाये ॥२॥

पारा मारने की विधि।

लाल या पीले फूल वाली ककड़छिटी बूटी का रस निकाल कर एक कटोरा में रखो फिर एक चीनी के प्याला में एक तोला पारा को डाल कर तिसको अग्नि पर रख कर मंद २ अग्नि तिसके नीचे जलाओ और थोड़ा थोड़ा रस तिसमें डालते जाओ सब रस के सूख जाने पर पारा फूल जायेगा या प्याले के किनारों पर लग जायेगा तिसको खुरच कर निकाल कर रखलो। दूसरी रीति—एक चीनी की दवात में एक तोला पारा को डाल कर उसमें चार तोला गन्धक के तेजाब को डाल कर नीचे तिसके मंद २ आंच को जलाओ सब तेज़ाब के जल जाने पर पारा मर जायेगा मगर तिसके धूएँ से बचना चाहिये ॥३॥

गर्मी व सुज़ाक की औषधि।

दो तोला नीले थोथे को भूनो जब सुपेद हो जाये रख दो फिर चौकिया सुहागा दो तोला लेकर भूनो फिर दो तोला छोटी हरड़ दो तोला तवाशीर दो तोला काली मिर्च इन सब को १४ दिनों तक निंबू के रस में खरल करो फिर एक माशा से लेकर तीन माशा तक गोलियां बनाओ सवेरे दधि की फुट्टी में १ गोली को खाओ या निंबू के रस में खाओ गर्मी और सुज़ाक दोनो को फायदा करेगा। दूसरी औषधि केवल गर्मी के वास्ते—रसौंत ६ माशा कत्था ६ माशा नीला थोथा २ माशा मोटी इलायची ३ माशा मुरदा संग २ माशा सब को कूट छानकर छोटे बेर के बराबर गोलियां बना लो, १ गोली सवेरे और एक शाम को मक्खन के साथ खाओ फायदा होगा ॥४॥

दमे की औषधि।

आध पाव बारां सिंगा को लेकर तिसके टुकडे करके आध सेर या पाव भर मदार की पत्ती की लुगदी बना कर उसमें उन टुकड़ों को रख कर संपुट बना कर २० सेर कंडों में उसको फूंक दो भस्म हो जायेगा

फिर तिसको खरल में पीस कर एक शीशी में डाल दो फिर एक माशा पीपल को महीन पीस कर उसमें १ रत्ती भस्म को मिला कर फिर उसमें दो माशा शहत खालस को मिला कर रोगी को चटा दो दस दिनों तक बराबर ही सवेरे चाटे खटाई और बादी चीज को नहीं खावे दमे को बहुत फ़ायदा होगा। दमे की दूसरी औषधि एक माशा तांबा की भस्म को लेकर जुदा रखो फिर दो माशा मेदा सोंठ को और दो शामा पिप्पली इन दोनों को खूब महीन पीसकर फिर उसको मिला कर फिर उसमें इतनी शहत मिलाओ जितने में गोली बनने लायक हो जाये फिर काली मिर्च से भी कुछ छोटी २ गोलियां बना कर उनको सुखा कर रख दो। रात्रि को सोते समय एक गोली को मुख में रख कर सो रहे पीले रंग का पानी गिरेगा दस दिनों तक बराबर रोज एक गोली को मुख में सोती दफा रखा करे रोगी अच्छा हो जायगा ॥५॥

संखिया मारने की सहज विधि।

आध सेर पुठ कंडा की राख को लेकर एक छोटी सी हांडी में या किसी बड़े सकोरा में उस राख को आधी नीचे दबा कर उस पर एक तोला भर संखिया की डली को रख कर फिर आधी राख को

उसके ऊपर दवा दो फिर ऊपर ढकने को रख कर कपड़मट्टी करके सुखा कर १० सेर कंडों में गढ़ा खोद कर फूक दो भस्म हो जायेगा निकाल कर पीस कर किसी शीशी में डाल दो एक चावल भर गंठिया वाले को मुनका में दो दमे वाले को भी मुनका में दो ताकत वास्ते मक्खन या मलाई में दो ॥६॥

संखिया का तेल ।

आध पाव पुठ कंडा की राख को एक कड़ाही में डाल कर उसमें एक सेर पानी को डाल दो फिर १ तोला सुपेद संखिया की डली को लेकर एक महीन कपड़ा में बांध कर उस पर लटका दो मगर नीचे न लगे पानी में डूबा रहे कड़ाई के नीचे आग जला दो जबकि सब संखिया पिघल कर पानी में चला जाये तो उसके तेल की बूंदे पानी पर फैल जायेगी उनको अतर की तरह निकाल कर छोटी सी शीशी में डाल दो एक बतासा में तिसकी एक बूद को डाल करके खाये मगर ऊपर से घी दूध या मलाई खूब खाये गंठिया जाता रहेगा सात रोज तक खाये खटाई बादी का परहेज रखे ॥७॥

खांसी की दवा ।

मदार के फूलों का भाग अर्थात् जो कि फूल के

अंदर की मंजरी होती है एक तोला भर तिसको लो फिर एक तोला गोल मिर्च १ तोला काला नमक १ तोला लौंग चारों को जुदा २ महीन पीस कर फिर मिला कर मटर के दाने के बराबर गोलियां बनाओ एक सवेरे एक शाम को खाकर ऊपर से एक या दो घूंट पानी के पी लो खटाई और बादी को न खाये बलग़मी खांसी दूर हो जायगी ॥८॥

दिमाग़ को ताकत देने वाली दवाई।

आध पाव बादाम की गिरी को लेकर उसको रात्रि भर पानी में भिगो दो सवेरे छिलका उतार कर फिर तिसको पत्थर की लंगरी में खूब घोटो फिर आध पाव उमदा शहत तिसमें मिलाओ फिर आध पाव मिश्री को कूट कर तिसमें मिला कर फिर घोटो फिर आध पाव गौ का ताजा घृत उसमें मिला कर खूब घोटकर तिसको किसी चीनी या शीशे के बर्तन में रख छोड़ो एक तोला भर नित्य ही सवेरे उसमे से चालीस दिनों तक बराबर हीं खाया करो इसके खाने से दिमाग़ की सारी बीमारियां जाती रहेंगी खटाई बादी का परहेज करना होगा ॥९॥

बांझ स्त्री के लक्षणों को लिखते हैं

सात प्रकार की बांझ होती हैं और सातों प्रकार

की बांझ के सन्तान उत्पन्न नहीं होती, परंतु उसकी परीक्षा करके उसकी औषधि करने से उसकी सन्तान उत्पन्न हो सक्ती है अब सात प्रकार की बांझ के सातों लक्षणों को और उनकी परीक्षा को लिखते हैं— जिस स्त्री के गर्भाशय के कमल का मुख फूटा होता है उसमें वीर्य जाकर एक पल भी नहीं ठहरता यह पहला लक्षण है।१। और किसी के कमल में वाई की गांठ होती है उसमें वीर्य जाकर ठंडा हो जाता है इसी से सन्तान नहीं होती।२। और किसी स्त्री के गर्भाशय का मांस बढ़ जाता है तो उसके कमल का मुख बंद ही होजाता है उसमें वीर्य ठहरता ही नही।३। और किसी २ स्त्री के गर्भाशय में बहुत महीन कीड़े पड़ जाते हैं वह कीड़े सब वीर्य्य को खाजाते हैं इसी से संतान नहीं होती।४। और किसी स्त्री के कमल का मुख उलटा होजाता है उसमें वीर्य्य नही ठहरता।५। और किसी के गर्भाशय में अग्नि अति तेज़ हो जाती है उसमें वीर्य्य जाकर जल ही जाता है।६। और जिस स्त्री को देवपरी का साया होता है उसमें भी वीर्य्य गया हुआ व्यर्थ ही होजाता है।७।

पीछे जोकि सात प्रकार की बांझ कही हैं अब उसकी पहचान के चिन्हों को कहते हैं—जब स्त्री

ऋतु स्नान करके पवित्र होजाये और भर्ता के पास जबकि भोग की कामना करके जाये अर्थात् सेज पर जिस काल में शहन करने लगे तो भर्ता उसके मुख की तर्फ देखे यदि उसका मुख लाल हो तो जान लो कि इसका कमल टूटा है उसकी यह औषधि करनी चाहिये—खालस शहत और तिल का तेल बराबर लेकर दोनों को खूब मिलाओ फिर एक बत्ती कपड़े की बना कर उस पर उसको लपेट कर तीन रोज तक बराबर ही योनी में रक्खो और रोज बत्ती को शहत में भिगोवो चौथे दिन मरद का संग करने से वह स्त्री गर्भवती हो जायेगी, अथवा बिनोले के बीज का मगज और मुरगाबी का पित्ता दोनों को मिला कर उसको बत्ती पर लपेट कर स्त्री उस बत्ती को अपनी योनी में चढ़ावे चौथे दिन पुरुष के पास जाने से गर्भ ठहर जायगा ॥१॥

जिसके कमल में बाई की गांठ से वीर्य्य ठंडा पड़ जाता है उसके लक्षण को लिखते हैं—उस स्त्री को कभी २ माथे में दरद होता है उसकी यह औषधि है—चिड़े की चरबी और शहत दोनों को मिला कर उसकी भी बत्ती को स्त्री तीन दिनों

तक योनी में रखे फिर चौथे रोज स्त्री मरद के पास जावे तो गर्भ ठहर जायेगा अथवा एक तोला वंच और एक तोला काले चने दोनों को कूट कर उनमें एक सेर पानी डाल कर अग्नि पर रख कर औटाओ जब आधा पानी रह जाये तो उसमें बत्ती को भिगो कर तीन दिन बराबर ही स्त्री अपनी योनी मे रखे फिर चौथे दिन मरद के पास जाये गर्भ ठहर जायेगा ॥२॥

जिस स्त्री के गर्भाशय का मांस बढ़ गया हो उसकी यह पहचान है कि उसकी छाती में दरद होता है जबकि ऋतु आने के चौथे दिन शुद्ध हो जाये तब इस औषधि को करे ६ माशा गोल मिर्च और ६ माशा सुपेद जीरा और ६ माशा पुराना गुड़ ६ माशा गौ का घृत इन चारों चीजों को एक पहर भर खरल करो फिर पूर्व वाली रीति से बत्ती बना कर योनी में तीन दिनों तक बराबर रखे फिर चौथे दिन पुरुष के पास जाये गर्भ ठहर जायेगा अथवा १ टंक सुपेद जीरा और १ टंक कत्था दोनो को कूट पीस कर फिर तीन टंक सरसों का तेल उसमें मिला कर इसके तीन भाग करके तीन रोज़ बराबर तिसको पीवे और दूध भात को खाये खटाई

और लाल मिर्च को न खाये फिर चौथे दिन पति के पास जाये गर्भ रह जायेगा ॥३॥

भोग के पीछे जिस स्त्री की कमर में दरद हो उसके भगाशय में किमी रोग को जान लेना उसकी औषधि साबुन का पानी सज्जी का पानी हरड़ बहेड़े का पानी इन चारों के पानीयों को मिला कर उसमें रूई को भिगो कर उसकी बत्ती बना कर योनी में रखे तीन दिनों तक बराबर रखे क्रिम सब मर जायेंगे अथवा सोंचल निमक को पानी में भिगो कर उसी में साबुन को कुतर कर मिला दें उसमें रूई की बत्ती को भिगो कर तीन रोज़ तक तिसको योनी में रखे और दूध भात को खाये फिर चौथे दिन पुरुष के पास जाने से गर्भ ठहर जायेगा ॥४॥

भोग के पीछे जिस स्त्री की पिन्नियों में दरद हो उस स्त्री के गर्भाशय में अधिक अग्नि की गर्मी जान लेनी। अनार के दानों का रस निकाल कर फिर गिलो का रस तिसमें मिला दो और फिर पेठे का रस और अलसी का तेल भी उसी में मिलाओ मगर चारों का बराबर ही भाग रहे

फिर उसी तरह बत्ती को भिगो कर तीन रोज तक बराबर ही योनी में रखे चौथे दिन पुरुष के पास जाने से गर्भ ठहर जायेगा।

भोग विलास के पीछे जिस स्त्री के सिर में दरद पैदा होजाये उसकी धरन पड़ी हुई जान लेनी उसकी यह दवाई है—मुरगाबी का पित्ता और हरमल के दाने दोनों को बराबर पीस कर बत्ती पर लपेट कर बत्ती को स्त्री योनी में तीन दिनों तक रखे फिर चौथे दिन पुरुष के पास जाये गर्भ ठहर जायेगा ॥६॥

भोग से पीछे जिस स्त्री के शरीर के किसी भी अंग में किसी तरह का भी दरद न हो और गर्भ भी न ठहरता हो तब तिसको देव या परी का साया जान लेना। पुराना गुड़ और मुथरा दोनों को बराबर लेकर पीस कर बत्ती बना कर योनी में तीन दिन रखे छाया दूर होगी चौथे दिन फिर पुरुष का संग करे गर्भ ठहर जायेगा ॥७॥१०॥

अब सब प्रकार की बांझ स्त्री की औषधि लिखते हैं।

पांच पैसा भर गाजर का बीज सोए का बीज

मुत्था और नगोरी सरसों तथा मेथरे वावड़िंग अमलतास का गूदा हर एक पांच २ पैसा भर लेकर फिर कपास के दो या तीन बीज लेकर सब को तीन सेर पानी में खूब औंटाओ जबकि तीन पाव बाकी रहे फिर तिसमें सात पैसा भर गुड़ को डाल कर कपड़छान करे ऋतु के चौथे दिन शुद्ध होकर इस काढ़े को निरने मुंह सेवन करे चार महीने की चारों बार ऋतु आने के समय इस काढ़े को पीवे यदि पहली में या दूसरी में गर्भ ठहर जाये तो फिर न पीवे, पीने से चौथे दिन पुरुष के पास जावे गर्भ ठहर जायेगा ॥११॥

जिगर की गर्मी की दवा।

६ माशा काहू ६ माशा कुलफा ६ माशा कासनी ६ माशा संदल सुपेद ६ माशा धनिआं की गिरी १ तोला कद्दू का मगज ६ माशा खीरे का मगज़ १ तोला छोटी इलायची दो तोला तवाशीर ६ माशा नौरंगी का छिलका ६ माशा पोस्त तंतनी दस वर्क चांदी के सब दवाईयों को कूट पीस कर बीहदाना के लुआब में चार २ माशा की एक २ टिकी बनावे फिर पांच तोला अर्क काजुबान और अढ़ाई तोला अर्क जवरी

इनके साथ एक टिकी को सवेरे नित्य ही खाया करे जिगर की गर्मी दूर होगी हाजमा बढ़ेगा और भूख भी लगेगी ॥१२॥

प्रमेह और दमा का रस।

पारा और आंवलासार गन्धक दोनों एक २ तोला लेकर दोनों को पहले शोध लो फिर दोनों की कजली बना दो फिर दो तोला धतूरे के बीजों को लेकर कूट छान कर उस कजली में मिला दो फिर उसमें धतूरे का इतना तेल डालो जितने में गोली बन जाये एक २ रत्ती के प्रमाण की सब गोलियां बना लेनी। जिसको प्रमेह की बीमारी हो या दमे की बीमारी हो वह दो तोला मक्खन के साथ १ गोली को सवेरे नित्य ही खाया करे जिस को पुष्टि की कामना हो वह १ गोली मलाई के साथ सवेरे निरने मुंह खाया करे जिसको पेशाब बहुत सा आता हो वह १ गोली मलाई के साथ खाये खटाई, दही, तेल, लाल मिर्च को न खाये अच्छा हो जायेगा ॥१३॥

तेइये और चौथे ज्वर (बुखार) की दवा।

कुकरौंधा की जड़ को अर्थात् नीचे की डंडी

के गूदे को ६ माशा लेकर पान का बीड़ा लगा कर तिस बीड़े में उसको रख कर मुख में गाल की तरफ़ तिसको करके ज्वर आने से दो घंटा पहले धीरे २ तिसकी रस को चूसे तीन वारी ऐसा करने से ज्वर दूर हो जायेगा यदि पहली या दूसरी वारी में कुछ आ भी जाये तो तीसरी में बिलकुल नहीं आवेगा ॥१४॥

जाड़िया बुखार की दवा।

जिसको जाड़ा लग कर बुखार आता हो वह आध माशा वच को लेकर उसको पान के पत्ते में रख कर बुखार आने से एक या दो घंटा पहले खिला दो दो वारी में ही बुखार दूर हो जायेगा ॥१५॥

पुष्टी की औषधि।

६ माशा संखिया को शोध कर पीस कर पांच सेर गौ के दूध में डाल कर फिर दूध को खूब औंटाओ जबकि औंट जाये तिसका दही जमा दो फिर उस दही को रिड़क कर उसका मक्खन निकाल कर तिसका घृत बना लो फिर पोष या माघ के महीना में एक रत्ती उस घृत को बताशा में रख कर

नित्य ही सवेरे खाया करे धीरे २ बढ़ा कर एक माशा तक पहुंचा दे मगर सरद मिजाज वाले को या वाई वाले को यह गुणकारी होता है गर्म मिज़ाजवाले को नहीं, तेल और खटाई तथा दही को न खाये ॥१६॥

घाव में कीड़ों की दवा।

जिस पशु अथवा मनुष्य के घाव में कीड़े पड़ जायें उसकी यह दवाई है—कुकरोंदा की पत्ती की लुगदी बना कर उसमें थोड़ा सा काफ़ूर मिला कर फिर पीस कर घाव में डाल दो सब कीड़े मर जायेंगे वह अच्छा हो जायेगा ॥१७॥

रतोंदी की दवा।

एक ही रंग की गौ का अर्थात् जिस गौ का समग्र शरीर लाल हो या समग्र ही पीला या काला या सुपेद हो उसका सवेरे दो तोला गोबर लेकर उसको एक कपड़ा में डाल कर निचोड कर उसका पानी निकाल कर रात्री को सोते समय उस पानी को नेत्रों में डाल कर सो रहे सवेरे आंखों से बहुत सी मैल निकल जायेगी और आंखें भी अच्छी हो जायेंगी ॥१८॥

गला बैठ जाने की दवा ।

जिसका गला बैठा हो वह एक तोला भर घृत को कटोरा में डाल कर फिर एक तोला आदी को छील कर टुकड़े करके उस में डाल दो और आठ दाने गोल मिर्च के पीस कर उस में डाल दो, और आधी-छटांक सुपेद चीनी को भी तिसमें डाल कर आग पर पका कर रात्रि को सोते समय खाकर सो रहे और सवेरे भी बनाकर खाये तीन दिन में अच्छा होग

हाज़मा की गोली ।

दो तोला गोल मिर्च ३ तोला पीप मैदा सोंठ दो तोला सौंचल नमक शोधी हुई आंवलासार गन्धक ५ तोला सारना सब दवाईयों को पीस कर कागज़ी निंबू के ताजे रस में आठ दिन तक खरल करो मगर एक-पाव भर निंबू के रस को उस में सुखाओ फिर एक २ रत्ती के बराबर सब गोलियां बना लो १ गोली रात्रि को सोती दफा खाकर सो जाये और एक सवेरे निरने मुंह खाये भूख लगेगी ॥२०॥

खुजली का तेल ।

एक बिता भर के सुपेद कपड़े को दो तोला

हलदी को पानी में पीस कर उस में उस कपड़ा को खूब गाढ़ा रंग करके सुखा लो फिर तिसके ऊपर मदार का दूध इतना चुआवो कि वह खूब तर हो जाय फिर सुखा कर आध पाव कड़ुवे तेल में डाल कर तीन चार दिन धूप में रखो उसी तेल की छः सात दिन मालिश करने से खुजली जाती रहेगी ॥२१॥

दांतों के दरद की दवा।

किसी २ के मसूड़ों मे जबकि खराब खून जमा हो जाता है तो दरद होता है जब वह खून निकल जाता है तो आराम हो जाना है उस के निकालने की सहज रीति यह है—अरिंड ककड़ी के कच्चे फल का दूध निकाल कर मसूड़ों पर लगाओ तुरंत ही वह खराब खून निकल जायगा और आराम हो जायगा ॥२२॥

बवासीर की दवा।

गेंदे के फूल की पत्ती की रस को निकाल कर ६ माशा सात दिन तक बराबर पीवे आराम हो जायगा ॥२३॥

तांबे का मारना।

वन गोभी की एक छटांक लुगदी बना कर उस में तांबे के पत्र को रखकर पुनः फूंक दो राख हो जायगा॥२४॥

आतशक की माजून।

गुलाव का फूल दो तोला चोवचीनी दो तोला हिंदी सनाह दो तोला मरोड़फली दो तोला इन सब को कूट छान कर चौवीस तोला असली शहत में मिला कर माजून बनावें एक तोला से दो तोले तक गर्म पानी के साथ खायें खटाई और वादी चीज़ों के खाने का परहेज़ करें इसके खाने से जखम सूख जाता है और दरद भी नहीं रहता॥२५॥

गर्मी की दवा।

सत्यानासी की पत्ती को पीस कर उसका रस निकाल कर इन्द्रि पर मले और ६ माशा से १ तोला तक पीस कर पानी में छान कर सात रोज तक बराबर ही पीवे अच्छा हो जायेगा॥२६॥

बलगमी खांसी की दवा।

धतूरे का बीज १ तोला रेवंद चीनी १ तोला सोंठ मैदा १ तोला बबूर की गोंद १ तोला इन सब

को कूट पीस और छान कर फिर इतना इसमें गर्म पानी डालें जितने में गोली बन जाये मूंग के दाना के बराबर गोलियां बना लें जवान को गर्म पानी के साथ दो गोलियां छोटे लड़के को गर्म पानी के साथ १ गोली खिलाओ ॥२७॥

दमे की औषधि ।

एक रत्ती लुवान के सत को एक मुनक्का के दाने का बीज निकाल कर उसमें उस सत को रख कर खा जायें अच्छा हो जायेगा ॥२८॥

हैज़ा की दवा ।

मदार के बीस पत्ते सब्ज़ लेकर उनको मक्खन से चोपड़ कर फिर नमक को पीस कर उन पत्तों पर छींटो फिर उनको एक मट्टी के सकोरे में डाल कर सकोरे का मुंह बंद करके थोड़े से कंडों की आग पर रख दें पत्ते जल कर राख हो जायेंगे फिर उनके वज़न के बराबर उनमें गोल मिर्च मिला कर पीस कर रख दो जब काम पड़े तब दो रत्ती खुराक बीमार को दें फायदा होगा ॥२९॥

सुरमा बनाने की रीति ।

१ तोला रांगा १ तोला सिक्का १ तोला जस्त

डेढ़ तोला पारा पहले रांगा सिक्का और जस्त इनको शोध कर पारा में मिला दो मगर पारे को भी शोध लेना यदि काला सुरमा बनाना हो तो आठ तोला काला सुरमा उस पारे में मिलाना अगर सुपेद बनाना हो तो आठ तोला सुपेद सुरमा लेकर कूट कर उसी पारे में मिला देना और सरदचीनी १ तोला समुदरझाग १ तोला कलमीशोरा १ तोला इनको भी उसी में मिला कर खरल करना फिर बीस तोला गुलाब का अर्क उसमें डाल कर खरल करके सुरमा तैय्यार कर लेना आंखों की सब बीमारियों को दूर करेगा ॥३०॥

बादी बवासीर की मल्हम !

१ तोला सिक्का १ तोला मुशककाफूर अढ़ाई तोला मक्खन पहले सिक्के को महीन करो फिर उसमें मुशककाफूर और मक्खन को मिला कर महीन पीस कर मल्हम बना कर गुदा के ऊपर मसों पर लगाओ और गुदा के अंदर भी लगाओ आराम हो जायेगा ॥३१॥

आतशक की मल्हम ।

राल १ तोला मुरदासंग १ तोला सुपेदा १

तोला सिंधूर १ तोला नीलाथोथा ३ माशा कत्था १ तोला मोम १ तोला सब को पीस कर मिला कर फिर मक्खन में खरल करो जबकि खूब मिल कर तैय्यार होजाये तो ज़खम पर लगाओ खुशक हो जायेगा ॥२३॥

दाद की दवा ।

एक तोला सुपेद सुहागा को लेकर चंदन की लकड़ी से तिसको महीन करो फिर उसमें निम्बू का रस मिला-कर गोलियां बना कर रख छोड़ो जब काम पड़े तब एक गोली को घिस कर लगाने से दाद जाता रहेगा ॥२३॥

दांतों का मंजन ।

१० तोला सगजरात ५ तोला, फटकरी दो तोला माजू दो तोला माई दो तोला सुपारी सब को कूट छान कर मिला कर मंजन बना लो यह मंजन सुपेद और बड़ा गुणकारी होगा दांतों को सुपेद बनावेगा और मज़बूत भी करेगा ॥

नामर्दी की दवा ।

मिट्ठा तेलिआ १० माशा, कुचला दस दाने, भुलाने दस दाने, गोल मिर्च दो तोला, गंधक दस

माशे, अफीम दो तोला, लौंग दस माशे, धतूरे का बीज ४ माशा, मालकंगनी ३० माशे, तिल ३० माशे, मदार का दूध दो तोला, डंडाथोर का दूध दो तोला, सुहागा तेलिआ दो तोला, तबकीया हरताल दो तोला, मनछल दो तोला, गौ का घृत दो तोला, शेर की चरबी दो तोला अगर शेर की चरबी न मिले तो मुरगे की चरबी दो तोला, तिल का तेल पचास तोला। इन सब दवाईयों को लेकर पाताल यंत्र से अथवा आतशी शीशे द्वारा इनका तेल निकाल लो उस तेल को किसी साफ़ शीशी में रख दो, बंगला पान में एक रत्ती तेल को डाल कर सवेरे खाया करो और एक रत्ती तेल की इन्द्रि पर मालश करके ऊपर से बंगला पान के पत्ते को बांध दो दूध और घी को खूब खायें खटाई और दही को न खायें थोड़े दिनों तक इसका सेवन करने से पूरा मरद हो जायेगा ॥३५॥

पाचन चूरण।

जीरा, सोंचल नमक, सोंठ, पीपर मिंट काली मिर्च, वावड़िंग सैंधा नमक अजमोद हींग हरड़ इन सब औषधियों को एक २ तोला भर लेकर कूट कर

चूर्ण बना लो यह चूर्ण पाचक और रोचक है और उदर की अग्नि को बढ़ाता है ॥३६॥

हिंगाष्टक।

सोंठ गोल मिर्च पीपल अजमोद सेंधा नमक दोनों जीरे हींग इन सबको एक २ तोला लेकर चूर्ण बनाओ परंतु हींग को घृत में भूनकर मिलाओ यह भी अग्नि को तेज करता है ॥३७॥

जठरा अग्नि को तेज़ करने वाली गोली।

गंधक काली मिर्च सोंठ सेंधा नमक इन्द्र जौ वावड़िग इन सबका चूर्ण बना कर निंबू के रस में मिला कर चने के बराबर गोलियां बना कर १ गोली को नित्य खाया करो इसके खाने से अग्नि तेज़ होती है अजीर्ण दूर होता है ॥३८॥

अब तरह २ के गुणकारी तेलों के बनाने की रीतियों को लिखते हैं:—

मोम का तेल।

२ पाव कच्चा मोम ७ तोला लौंग ४ तोला लुवान और नदी का सुपेद मोटा रेता तीन पाव इन सबको मिला कर खूब खरल करो फिर दो बर्तनों को मिला कर पाताल यंत्र से तेल को

निकाल लो यह तेल सख्त चोट पर मलने से दर्द को हटा देता है और टूटी हुई हड्डी पर भी मलने से आराम हो जाता है इसको मल कर ऊपर से पान का पत्ता बांधो आराम हो जायेगा ॥३६॥

राल का तेल निकालना।

१ छटांक राल निंबू का अर्क पाव भर दोनों को खूब खरल करो फिर इनके बराबर नदी का सुपेद मोटा रेता लेकर इनमें मिलाओ, फिर पाताल यंत्र द्वारा तेल निकालो जिसको सुज़ाक की बीमारी हो तिसको एक छोटी सी बूंद पान में सात रोज़ तक खिलाओ आराम हो जायेगा ॥४०॥

लुबान और गुग्गल का सत।

लुबान अथवा गुग्गल इन दोनों में से जिसका सत निकालना हो उसको एक मट्टी के प्याला में डाल कर उसके ऊपर मट्टी के दूसरे प्याला को औंधा रख कर दोनों के मुखों को मिला दो और ऊपर वाले प्याले पर एक छोटे से कपड़े के टुकड़े को पानी में तर करके रखो और नीचे तिसके दीये की मोटी बत्ती के बराबर आग को बालो उसका जौहर उड़ कर लग जायेगा फिर ठंडा करके उस जौहर को

चाक् से उतार कर एक प्याला में थोड़ा पानी डाल कर उसमें जौहर को डाल कर थोड़ी देर में पानी को नितार कर फेंक दो और आग पर उस जौहर को सुखा लो सुपेद हो जायेगा बलगमी खांसी वाले को और कफ गिरने वाले को फ़ायदा करता है ॥४१॥

नौशादर का तेल।

एक मोटा मारू बैंगन लेकर उसके बीच में नौशादर को भर दो और नम वाली जगह में उसको रख दो तीन रोज़ में सब नौशादर तेल बन जायेगा ॥४२॥

शोरे का तेल निकालना।

शोरा को कायम करके उसको तीन बार आतशी शीशे मे पाताल यंत्र लगा कर खेंचो तेल निकल आवेगा ॥४३॥

सुहागा का तेल

१ छटांक तेलिया सुहागा लेकर उसको कुचल कर पाताल यंत्र से उसका तेल निकाल लो ॥४४॥

तमाकू का तेल

दस तोला तमाकू की पत्ती को लेकर १ सेर पानी मे रात्रि को भिगो दो सबेरे पाव भर

तेल को कड़ाई में डाल कर और उसी में तमाकू और तमाकू वाले पानी को भी डाल कर फिर आग पर पकाओ जब पानी सूख जाये और तमाकू भी जल जाये तब उतार कर ठंडा करके छान कर किसी शीशी में भर दो शरीर के जोड़ों में जिसके दर्द हो या हाथ पांव की गांठों में दर्द हो तो इसके मलने से आराम हो जायेगा ॥४५॥

गंधक का तेल।

पीले रंग की उमदा गंधक १ छटांक लेकर उसको पीस कर तीन छटांक गौ के घी में मिला कर फिर एक साफ कपड़े के टुकड़े को उसमें भिगो कर उसको लोहे की सीख के ऊपर लपेट कर नीचे बर्तन को रख कर उसको दीया सलाई से बाल दो उसका तेल उस बर्तन में टपकता जायेगा उसको जमा करके रख दें। दूसरी रीति यह है—गंधक को पीस कर एक कपड़ा को बिछा कर उस पर गंधक को बिछा कर लपेट कर किसी बर्तन में रख कर आग पर रख दें फिर गंधक से दूना उसमें गौ का दूध डाल कर सुखा कर फिर उसको एक लोहे की सीख पर चढ़ा कर एक तरफ से उसको आग लगा कर

किसी वर्तन पर उसको टेढ़ा कर दें उस बर्तन में जो तेल टपके उसको जमा करके किसी शीशी में रख दें जिसको बादी बवासीर हो इसकी दो तीन बूंदें मसों पर लगाने से मसे सब कट जाते हैं और दो बूंद पारा में मिला कर फिर पान के पत्ते में खाने से भी फायदा होता है खारश पर मलने से भी फायदा होता है॥४६॥

धतूरे का तेल ।

एक मोटी बोतल लेकर उसमें धतूरे के बीजों को भर कर फिर महीन लोहे की तार लेकर उसको लोट कर इतनी मोटी गोली बनायें जो बोतल के मुख में आ जाये और उसी तार से उसको फिर बोतल के सिरे पर भी बांध दें फिर एक मट्टी का पक्का नान लेकर उसमें इतना छिद्र करें जो बोतल का सिर उसमें आ जाये उस नान को चूल्हे पर रख कर नीचे कटारा रख दें और बोतल के गिरदे ऊपर कंडों को सुलगा दें उनकी गर्मी से तेल बोतल से चू जायेगा फिर किसी शीशी में डाल कर रख छोड़ो॥४७॥

हरताल का तेल ।

१ छटांक वरकिया हरताल को लेकर पीस

कर उसको दो बिता के कपड़े पर लगा कर उसके ऊपर मदार का दूध डाल दो जितने में वह तर होजाये इसी तरह नौ दिनों तक बराबर ही उसके ऊपर मदार का दूध डालते रहो फिर उस कपड़ा के टुकड़े करके एक आतशी शीशे में उनको भर दो और दूसरी बोतल का मुंह उस आतशी शीशे से मिला कर जोड़ दो फिर लकड़ी के महीन छिलके उस पर रख कर उनको आग लगा दो जबकि आग ठंडी होजाये तेल निकल आवेगा॥४८

संखिया का तेल।

१ तोला संखिया सुपेद को पीस कर १ छटांक अंडे की ज़रदी में मिला कर फिर उसको लोहे की कड़ाई में डाल कर पकाओ जब ज़रदी चराहट कर के जलने लगे तो कड़ाई को टेढ़ा कर दो थोड़ी देर में तेल निकल आवेगा ॥४६॥

गंधक का तेल।

आंवलासार गन्धक को लेकर एक शीशे में डाल कर दूसरी बोतल का मुंह गंधक वाली बोतल के मुंह से मिला दो और खाली बोतल को नीचे और गंधक वाली बोतल को ऊपर रखो बरसात

दिनों में ज़मीन में गढ़ा खोद कर बोतलों को
में रख कर ऊपर घोड़े की लीद को भर दो
ठवें दिन लीद को बदलते जाओ जब बरसात
त जाये तो निकाल लो नीचे वाली बोतल में
ा सब भर जायेगा ॥५०॥

सब उपधातुओं के तेल निकालने का आसान तरीका।

गंधक वगैरा उपधातु कही जाती हैं जिस
धातु का तेल निकालना हो पहले उसको पीस
र तिली के तेल में या अलसी के तेल में मिला
। फिर तिसको आग पर खूब पकाओ जब उस
ल से उस उपधातु की गंध आने लगे तो उसी
पधातु की तासीर उसमें हो जायेगी फिर उतार
र ठंडा करके उसको शीशे में डाल कर रख दो॥

हर एक तेल के गुण।

गन्धक का तेल खारश को और ज़हर को भी
लने से दूर करता है और रत्ती भर खिलाने से
हैज़े वाले को भी गुणकारी होता है। हड़ताल का
तेल नासूर को और फोड़े के खराब मांस को काटता
है। संखिया का तेल गंठिया को और अधरंग को

क़ायदा करता है और एक रत्ती देने से आतशक वाले को भी फ़ायदा करता है। शिंगरफ का तेल ख़राब ज़ख़म को और दूसरे जखम को जले हुए ज़ख़म को फ़ायदा करता है और एक रत्ती खाने से नामरद को भी फ़ायदा करता है ॥५२॥

गंधक का तेज़ाब बनाना।

आध पाव गन्धक और आध पाव कलमी शोरा दोनों को जुदा २ महीन पीस कर एक मट्टी की पकी हांडी में उनको मिला कर भर दो फिर उस हांडी पर एक मट्टी का कुज्जा उलटा जमा दो और कुज्जे की टूटी मे एक कांच की नाली लगा दो फिर एक सुपेद बोतल मे आधा पानी भर कर उस नाली को बोतल के मुख में मिला कर जमा दो और उस हांडी को चूल्हे पर रख कर नीचे उसके आग जलाओ आग के जलते ही एक तरह का बुखार निकल कर नाली द्वारा बोतल में जावेगा उसी से पानी भारी हो जावेगा जब बुखार निकलना बंद होजाये तो आग को ठंडा करके बोतल को हटा कर फिर उस बोतल वाले पानी को कांच की हांडी में डाल कर आग पर जोश देकर थोड़ी

फटकरी और चांदी का पत्र उसमें मिला दो यह तेज़ाब उमदा होगा ॥५३॥

तेज़ाब मालूल।

गुलाबी फटकरी १ छटांक को लेकर तीन छटांक तेज़ सिरका में मिलाकर रख दो फिर नितार कर उसमें थोड़ा सा शोरे का तेज़ाब और थोड़ा सा नमक का तेज़ाब मिला दो इसी का नाम तेज़ाब मालूल है ॥५४॥

सुगंधि वाले तेल का बनाना।

लौंग लाची कपूर कचरी बालछड़ और पखान वेद हर एक आधी २ छटांक लेकर फिर धुली हुई तिली का एक सेर तेल लेकर उसमें उन सब को कूट कर डाल दो और बोतल में भर कर ऊपर काक लगा कर उस बोतल को सात या दस दिनों तक धूप में रख दो जब तेल में से सुगन्धि आने लगे तो उसको छान कर साफ बोतल में भर दो फिर बालों पर लगाया करो इसके लगाने से बाल काले और सुगन्धि वाले हो जायेंगे ॥५५॥

मेंहदी का तेल।

यह तेल बड़ा गुणकारी है बालों को जलदी

खुपेद नहीं होने देता और नजुला को भी गुणकारी है पाव भर मेंहदी को लेकर छाया में सुखा कर फिर तिसको पानी में पीस कर डेढ़ पाव पानी उसमें और मिला दो और तिसको खूब औंटावो जबकि रंग निकल आवे तो छान कर आध सेर तिलों के तेल में उस रंग को मिला कर आग पर उसको पकाओ जब पानी जल जाये तो तेल को चूल्हे से उतार लो और ठंडा करके बोतल में भर दो फिर बालों पर लगाओ ॥५६॥

आंवला का तेल।

पाव भर आंवले सूखी हुई सनोबर की जड़ की छाल तीन छटांक आध पाव मोरद की पत्ती सब को कूट कर तीन पाव पानी में खूब पकाओ जब खूब रंग निकल आवे तो उतार कर छान कर धोई हुई तिली के तेल में मिला कर आग पर पकाओ जब पानी जल जाये तो उतार कर ठंडा करके बोतल में भर दो ॥५७॥

मोम का तेल।

डेढ़ पाव कच्चा मोम और साढ़े तीन पैसा भर लौंग और दो पैसा भर कोडिया लुबान इन दोनों

ो कूट कर महीन करके मोम में मिला कर फिर
गचा में डाल कर अग्नि पर खूब पकाओ जब सब
चीज़ें एक जान होजायें तो उतार कर ठंडा करके
बोतल में भर दो। यह तेल दरद और उतरी हुई
हड्डी को भी फायदा करता है और भी अनेक रोगों
में काम देता है ॥५८॥

अमृतधारा

५ तोला अजवायन का सत ५ तोला पुदीने
का सत (इसी का दूसरा नाम पिपरमिंट भी है) ५
तोला मुशककाफूर इन सबको एक पक्की शीशी में
डाल कर धूप में ५ मिंटों तक रख दो वह अर्क सा बन
जायेगा-इसी का नाम अमृतधारा है. यह अनेक
रोगों पर चलती है सो लिखते हैं—जिसके सिर में
दरद हो वह दो बूंदों को माथे पर मले यदि आराम
न हो तो दस मिंटों के पीछे फिर दो बूंदों की मालिश
करे और इसी को सूंघे और दो बूंद इसकी खमीरे
मुरव्वा में डाल कर दूध के साथ खाये आराम हो
जायेगा।१। जिसको बलग़मी खांसी हो वह २ माशा
पिपली चूर्ण बना कर उसमें ३ बूंद इसकी डाल कर
खाये और ऊपर से काहुवान का दो तोला अर्क

पी के सवेरे के समय या जिस काल में खांसी ज़ोर करे उस काल में खाये दूसरी खांसी हो तो एक तोला बीह दाने का लुआब निकाल कर उसमें दो बूंद डाल कर खाये ।३। दमे वाले को बलग़मी खांसी की तरह खिलाओ आराम होगा ।४। जिसके मुख से खून या पीक गिरे वह इसकी दो बूंदें पुदीना के अर्क में, या शीरे में खाये ।५। जिसको नज़ुला या ज़ुकाम हो वह इसे सूंघे और खशखाश के बराबर इसकी नसवार ले ।६। जिसके पेट में दर्द हो बदहज़मी हो वह सौंफ के आध छटांक अर्क में दो बूंद इसकी डाल कर पी जाये ।७। जिसको हैज़ा हो जाये उसको १ तोला मिश्री में दो बूंद डाल दो या काज़ुबान के एक तोला अर्क में अथवा सौंफ के १ तोला अर्क में दो बूंद डाल कर घंटे २ के पीछे पिलाने से फ़ायदा होता है ।८। जिसको क़बज़ी हो उसको १ छटांक गुलाब के अर्क में या शर्बत शिकंजबीन में ४ बूंद डाल कर पिला दो ।९। जिसके पेट में गुड़ २ हो या फूल जाये उसको दो बूंद सौंफ के अर्क में डाल कर दो ।१०। जिसको मरोड़ के साथ दस्त आवें उसको अनारदाने का पानी निकाल कर तीन बूंद उसमें डाल कर दो ।११। जिसको कै आती हो उसको ३ माशा रूमीमस्तगी

में १ माशा अनारदाने का पानी मिला कर फिर २ बूंद इसकी डाल कर खिला दो ।१२। जिसको मिरगी हो उसको २ बूंद गुलाब के अर्क में डाल कर उसके नाक में डाल दो।१३। जिसके दांत में दर्द हो वह १ बूंद अंगुली पर लगा कर दांतों पर मले और पानी को थूके ।१४। जिसकी दाड़ में दर्द हो वह दो बूंद रूई के फाहे पर लगा कर दाड़ में रखे और मुंह से पानी को बहावे तीन दिन ऐसा करने से आराम हो जायेगा ।१५। जिसके दांतो से खून आता हो, हिलते हों, पानी आता हो वह दो माशा फटकरी को महीन करके उसमें इसकी दो बूंद डाल कर मले ।१६। जिसके कान में दरद हो वह ६ बूंद गुले-रोगन में इसकी १ बूंद डाल कर कान में डाले ।१७। जिसके कान में जखम हो वह प्याज़ की ६ बूंद में १ बूंद इसकी डाल कर कान में डाले १८ जिस के कान में खुजली हो वह १० बूंद बदाम रोगन में १ बूंद इसकी डाल कर थोड़ी २ देर के पीछे दो २ बूंदे इसकी कान में डालो ।१६। जिसके कान में सोज हो वह १ बूंद इसकी और १० बूंद गुले रोगन और १० बूंद सिरका तीनों को मिला कर कान में डाले ।२०। बवासीर के मसों पर १ बूंद इसकी ५

बूंद सिरका में मिला कर लगाओ ।२१। जिसके नाक से बदबू आवे वह सुपेद संदल के शीरा की दस बूंदों में एक बूंद इसकी मिला कर नसवार ले। २२। छींक लेनी हो तो दस बूंद गुले रोगन में एक बूंद इसकी डाल कर नसवार ले ।२३। फोड़ा निकलने लगे तो उस पर इसकी एक बूंद लगाओ अगर मुंह फोड़े का निकल आवे तो दस तोला कड़वे तेल को जला कर उसमें दस बूंदे इसकी डाल कर फोड़े के ऊपर लगाओ जिसको दाद हो या चंबल हो वह भी इसी तेल को लगाये कानों में वालों के पहरने से किसी २ के कानों में घाव होजाता है उस ज़ख्म पर इसी तेल को लगाने से आराम होजाता है ।२४। जिसका गला बंद होजाये वह आंवलों के पानी में दो या चार बूंदें इसकी डाल कर गले पर मले ।२५। जिसके गले में दरद हो वह दो या चार बूंद की तेल में डाल कर मालश करे ।२६। यदि किसी को गिलटी निकले तो उस पर इसकी मालश करे ।२७। अगर किसी को चोट के लगने से दरद हो तो उस जगह पर इसकी मालश करो ।२८। जिसको बादी बवासीर हो वह मसों पर इसकी मालश करे और मक्खन में तीन बूंद डाल कर खाये ।२९। दिमाग

की कमजोरी वाले को दो बूंद मलाई में सोते समय दो ।२०। प्लेग वाले को दो या तीन बूंद मिश्री पर डाल कर घंटे २ पीछे खिलाओ और अदरक के पानी को गर्म करके घी के साथ या दूध के साथ दो ।२१। ऊपर जो हर एक रोग की खुराक लिखी है वह खुराक जवान के लिये लिखी है बालक को घटा लेनी ॥५६॥

चाह की उत्पत्ति ।

कहते हैं कि एक काल में चीन के बादशाह ने किसी कसूर पर एक आदमी को हुकम दिया जो इसको जंगल में लेजा कर छोड़ आवो और यह जंगल में ही रहा करे बस्ती में कभी भी आने न पावे अगर बस्ती मे आयेगा तो फिर जान से मारा जायेगा तिस आदमी को लेजा कर बादशाह के सिपाहियों ने जंगल में छोड़ दिया, वह जंगल में फिरने लगा जब तीन चार दिनों तक उसको खाने को कुछ भी न मिला तो छोटे २ दरख्तों की छोटी २ पत्तियों को तोड़ कर वह खाने लगा उनके खाने से वह थोड़े ही दिनो मे खूब मोटा ताज़ा होगया। एक दिन बादशाह की किसी फौज का एक अफसर

को पीकर ठंडे पानी से कभी कुर्ला न करें अगर करना हो तो गर्म पानी से करे ऐसे नुकसान नहीं होता। काबुल और पिशावर वगैरा देशों में चाह में मलाई को भी डाल कर पीते हैं सिंध देश में कोई २ चाह में घी को भी डाल कर पीते हैं और बाजे २ जुकाम के दूर करने के वास्ते इसमें केवल नमक को ही डाल कर पीते हैं॥६३॥

फोड़े फुन्सी की दवाई।

नाभी के ऊपर शरीर के किसी भी अंग में जब फोड़ा फुन्सी निकलने लगे तो सवेरे उठते ही अपनी बासी थूक को उसके ऊपर लगाओ, दो तीन रोज में ही वह फोड़ा भीतर ही जल जायेगा और नाभी के नीचे के किसी अंग पर फोड़ा या फुंसी निकलने लगे तो सवेरे उठते ही जिस जगह पर पेशाब करे उसी पेशाब वाली मट्टी को फोड़ा पर लगाये भीतर ही जल जायेगा। यदि किसी को पेशाब की मट्टी के लगाने से घृणा हो तो अपनी बासी थूक को ही लगावे उसी से अच्छा हो जायेगा। ० आजमाया हुआ नुस्खा है॥६४।

हर तरह के घाव की और ज़ख़म की मल्हम।

पंजाबी साबुन १ तोला प्याज़ छिला हुआ १ तोला दोनों को कुतर कर चार तोला तिलों के तैल में डाल कर जलाओ जब जल कर काला होजाये तो उसमें ११ नीम की पत्तियों को डाल कर मिलाओ और १ तोला सुपेद कत्था को पीस कर उसी में खूब मिलाओ फिर दो तोला कपड़ा को जला कर उसी में मिलाओ फिर किसी टीन की डिबीया में उसको डाल दो और सब तरह के फोड़ा और ज़ख़म पर लगाओ अच्छा हो जायेगा ॥६५॥

अजीर्णता की उत्पत्ति

बहुत सा जल पीने से अजीर्ण हो जाता है और कुसमय पर भोजन से अर्थात् दिन में भोजन करने का समय दस से बारां तक और रात्रि को आठ से दस तक है सो इसको उलंघन करके दिन का दो तीन या चार तक और रात्रि को ग्यारां बारां या एक बजे तक भोजन करने से अजीर्णता होती है दिन में सोने से भी होती है अधिक भोजन करने से भी होती है बिना रुचि के भोजन करने से

भी अजीर्णता होती है रात्रि में बहुत जागने से भी अजीर्णता होती है और अति ही कम खाने से भी होती है इस वास्ते इन बातों से रहित होकर भोजन को करने से नहीं होती ॥६६॥

अजीर्णता के उपाय।

घृत का अजीर्ण पांच दिन में तेल का १२ दिन में दूध का १५ दिन में दधि का २० दिन में पचता है घृत के अजीर्ण में गर्म जल का पीना गुणकारी होता है तेल के अजीर्ण में कांजी पीना गुणकारी होता है और गेहूं के अजीर्ण में ककड़ी का खाना और केला तथा अम्र के अजीर्ण में घी का पान करना अच्छा होता है गरी के अजीर्ण में चावलों का धोन पीना अच्छा होता है आम चुसने के अजीर्ण में दूध का पीना गुणकारी होता है और घृत के अजीर्ण में जंभीरी का रस भी हितकारी होता है नारंगी के अजीर्ण मे गुड़ का खाना अच्छा होता है आलू के अजीर्ण में कोदों के अन्न का खाना गुणकारी होता है रोटी पूरी के अजीर्ण में जल का पीना, खिरनी के अजीर्ण में हरड़ का खाना, उरद के अजीर्ण में खांड का खाना, तरबूज के अजीर्ण में गर्म जल का

गीना, मछली के अजीर्ण में आम का चूसना, मद्य के अजीर्ण में शहत के सहित जल का पीना, केला के अजीर्ण में केला की गिरह का खाना। केला की गिरह के अजीर्ण में घृत का पीना, घृत के अजीर्ण में जंभीरी का रस पीना, जंभीरी के रस के अजीर्ण में नमक का खाना, मूली के अजीर्ण में चावलों का धोन पीना, चावलों के अजीर्ण में दूध और पानी का पीना, अनार आंवला इमली इनके अजीर्ण में मोलसिरी का फल खाना, महुआ बेल फल खिरनी खजूर फालसे इनके अजीर्ण में नीम के बीजों को जल में पीस कर पीना, गूलर पीपल आम इनके अजीर्ण में सोंठ को बासी पानी में पीस कर के पीना, भसीड़े खजूर मुनक्का कसेरू सिंघाड़े और खांड इनके अजीर्ण में नागरमोथा को खाना, लहसन के अजीर्ण मे दूध का पीना, गेहूं मटर चना मूंग जो इनका अजीर्ण धतूरे के रस से जाता है, बेर के अजीर्ण में गर्म जल का पीना, जामन के अजीर्ण में सोंठ का खाना अच्छा होता है कथा के अजीर्ण को सोंफ का खाना मांस और कटैर का अजीर्ण आम की गुठली से, चिड़वा का अजीर्ण पीपल और अजवाइन से, उड़द की कांजी से कपूर सुपारी

तांबूल केसर जायफल जवित्री कस्तूरी नारयल इनका अजीर्ण समुद्रफेन से अच्छा होता है कबूतर तीतर के मांस का अजीर्ण कांस की जड़ को जल में पीस कर खाने मे दूर होता है लड्डू पूड़ा का अजीर्ण छाछ से कड़ी पूरी आदिकों का अजीर्ण पिपरा मूल के खाने से पचता है पंचनावों के मांस का अजीर्ण भेड़ी के दूध से दूर होता है सिरका का अजीर्ण समुद्र नोन के खाने से दूर होता है पालक छत्राक करेला बेंगन मूली पोई का साग मीठी तुरवी परवर इन सवका अजीर्ण सरसों के साग के खाने से दूर होता है मटर का अजीर्ण सोंठ से जिमीकंद का अजीर्ण गुड़ से हलदी का अजीर्ण जंबीरी के रस से सब साग मात्र का अजीर्ण तिल के खार से दूर होता है तेल घृत चरबी मज्जा इनका अजीर्ण मूंग के चूर्ण से ॥६७॥

अब कुछ रोगों की शांति के उपाय बताते हैं।

सरदी का रोग गर्म दवाई से, गरमी का रोग ठंडी दवाई से और सब खार खट्टी वस्तु से गुणकारी होते हैं और तीती मिर्च आदि घृत और तेल

के साथ गुणकारी होते हैं और वमन को लाने वाली औषधि का दोष मिश्री से शांत होजाता है। जिस पुरुष का मुख पान के खाने से फट जाये तो वह तेल अथवा सिरका से कुल्ला करे तो अच्छा हो जाये। यदि कोई शराब को पीकर ऊपर से घृत में मिश्री को मिला कर पीवे तो नशा नहीं चढ़ेगा और जो नागरमोथा मुलट्ठी इलायची कूट देवदारू सुगंधि वाला इनका चूर्ण मुख में रखने से मुख से शराब की दुर्गन्धि नही आवेगी। शराब के पीने से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं धन और धर्म तथा आयू भी नष्ट होती है ॥६८॥

पान में दोष।

हमारे देश में पान का खाना बहुत ही है बल्कि बाजे २ स्त्री और पुरुष इसको घास की तरह दिन भर चबाते ही रहते हैं एक २ रुपया रोज पानों पर ही उनका खर्च होजाता है एक तरह का यह भी उनको नशा होजाता है क्योंकि अगर उनको दिन में भोजन न मिले तो कुछ भी तकलीफ नहीं होती मगर पान के न मिलने से उनको भारी तकलीफ होती है अगर मान भी

लिया जाये जो भोजन के ऊपर मुख की सफ़ाई के वास्ते इसका एक बीड़ा खाना कुछ नुकसान नहीं करता मगर इसका अधिक खाना तो दोषों की खान ही है सो लिखते हैं—पान में सुपारी और कत्था जरूर रहता है इनके खाने से जीभ (जिह्वा) मोटी होजाती है जीभ के मोटे होजाने से वाणी का उच्चारण भद्दा पड़ जाता है किंतु अच्छा और साफ़ उच्चारण मुख से नहीं निकलता इस वास्ते विद्यार्थियों के लिये तो इसका खाना बहुत ही बुरा है फिर पान में चूना भी रहता है उसकी तेजी से मसूड़े कट जाते हैं और दांत सब कमजोर होकर जलदी गिर भी जाते हैं। फिर चूना और कत्था के मेल से दांतों पर एक प्रकार की मैल भी जम जाती है जिसको देख कर दूसरे को बुरा मालूम होता है और दांतों की जोकि स्वभाविक सुंदरताई है वह नष्ट होजाती है और चूने से शरीर में प्रायः करके खुजली भी पैदा हो जाती है फिर चूना से हाजमा भी बिगड़ जाता है और पान खाने वाले को बार २ थूकना भी पड़ता है इसी से उसकी बार २ थूकने की आदित भी पड़ जाती है यह भी एक गंदी आदित है पान

का खाना किसी तरह से भी अच्छा नहीं। कई कहते हैं कि पान खाने से हाज़मा शक्ति बढ़ती है ऐसा उनका कथन झूठा है क्योंकि हाजमा शक्ति को चूना घटाता है और इस बात का तजुरबा भी हो चुका है। जो पान के खाने से बहुत तरह के नुकसान होते हैं जिनमें कि दो चार ऊपर दिखा भी दिये हैं यदि हम सड़ा गला और बासी तथा देर हज़म भोजन खायें तो कदाचित् भी पान तिसको पचा नहीं सकेगा और वह भोजन अवश्य ही बीमार कर देगा और जो हम अच्छा गला हुआ और तथा जलदी पचने वाला और अंदाज़ का खायेंगे तो पान के खाने की हम को ज़रूरत क्या है ? फिर हमारा जोकि पेट है वह हमारा बड़ा विश्वासी सेवक है यदि हम उसके काम में रोक न डाले तो वह अच्छी तरह से अपना काम कर सकेगा और हमारी तंदरुस्ती भी बनी रहेगी इस वास्ते हम को उचित्त है कि हम उसी वस्तु का सेवन करें जोकि हम को जलदी पच जाये।

पूर्व देश में कई २ स्त्रियां भी बहुत सा पान खाती हैं बल्कि बकरी भेड़ी की तरह दिन भर

घास की तरह पान को चबाती रहती हैं और होठों के लाल होजाने से और दांतों के काला होजाने से वह अपनी सुंदरताई को मानती हैं। यह उनकी मूर्खता है क्योंकि पान के खाने से जो दोष पुरुषों को होते हैं वह स्त्रियों को भी होते हैं फिर दांतों की शोभा कवियों ने सुपेद होना ही लिखी है इसी वास्ते चम्बा के सुपेद फूल के साथ उपमा की है और कहीं अनार के दानों की भी उपमा दी है काले रंग वाले फूल या फल के साथ कहीं भी उपमा नहीं की। दांतों के काला होजाने से स्त्री भूतनी सी बन जाती है यह भी एक थोड़े ही दिनों की मूर्खता चली जान पड़ती है यदि पुरानी होती तो कवि लोग इसका कुछ हाल काला होने का भी ज़रूर लिखते। पंजाब आदि देशों में स्त्रियां अखरोट के दरख्त की छाल को चबाती हैं उसी से उनके होंठ लाल होजाते हैं मगर उस से दांतों को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचता बल्कि दांत मोतियो की तरह चमकने लग जाते हैं। पान खाने से तो हर तरह नुकसान है मगर मिस्सी की चाल तो बहुत खराब है और पान रोग-जनक और धन-नाशक भी है क्योंकि साल

में लाखों रुपये इसके पत्तों पर खराब होते हैं ॥

अब अरकों के बनाने की रीति लिखते हैं।

यदि सूखी हुई या खुशक चीज़ों का अर्क निकालना चाहो तो पहले उन को कुचल डालो और रात्रि भर उन को पानी में भिगो दो और सवेरे उन को देग में डालकर उनका अर्क खींचो मगर देग के नीचे अग्नि हलकी रखो बहुत तेज़ करने से दवाई अर्क मे चली जायगी और अर्क खराब हो जायगा। यदि कासनी अजवायन बादियान मकोह धनियां सोंठ हलदी काजुबान मुंडी शाहतरा वगैरा का अर्क निकालना हो तो दो सेर दवाई में १० सेर पानी डालो और ५ सेर उनका अर्क निकालो और यदि ताजे फूलों वगैरा दवाइयों का अर्क निकालना हो जैसे कि गुलाब बेदमुशक वगैरा हैं तो उनसे तीन गुणा पानी डाल कर डेढ गुणा अर्क निकालो ॥७०॥

अब थोड़े से अरकों के गुणों को बताते हैं।

बादियान का अर्क पेट से मुवाद को नि

लता है और हाज़मा भी है। धनियां का अर्क दिल और मेहदा को ताक़त देता है और हाज़मा भी है। अजवाइन का अर्क प्यास को लाता है मगर बदहज़मी को दूर करता है। पुदीने का अर्क बद-हज़मी को दूर करता है और मेहदा की बीमारियों को दूर करता है। काज़ुबान का अर्क जिगर दिमाग़ और दिल को ताक़त देता है, सफरा को दूर करता है। केवड़ा का अर्क प्यास को घटाता है खफ़गान को भी दूर करता है दिल को प्रसन्न करता है। बेदमुशक का अर्क दिल और दिमाग़ को ताक़त देता है प्यास को मिटाता है। कासनी का अर्क सिर दर्द और यरकान और तप इनमें फ़ायदा करता है। इलायची का अर्क ताक़त देता है प्यास को मिटाता है। उशबा का अर्क खून के फ़साद को दूर करता है और ताक़त भी देता है मगर तासीर इसकी गर्म है। गुलाब का अर्क सिर दर्द यरकान के तथा तप को भी फ़ायदा देता है नीलोफ़र का अर्क प्यास को कम करता है दिमाग़ को ताक़त देता है। प्रसिद्ध २ अरकों के गुण संक्षेप से लिखे हैं ॥७१॥

अर्क बादियान मुरक्कब।

मेहदा को ताकत देता है, १ सेर सौंफ २ तोला ाद ५ तोला अजवायन देसी ५ तोला पुदीना नका अर्क ऊपर की रीति से निकालो ॥७२॥

ज़रिशक का अर्क।

यह जिगर की तमाम बीमारियों के लिये गुणकारी है और मेहदा को भी बल देता है। सफ़ाई मिजाज के लिये बड़ा गुणकारी है। ज़रिशक, ुरंज का पोस्त, समाक, कासनी के बीज आलूबुखारा सूखा धनिया छिला हुआ हरड़ हर एक बीस तोला सबका ऊपर की रीति से अर्क निकालें और २५ तोला के अंदाज हर रोज़ पीयें ॥७३॥

गिलो का अर्क।

यह तप को और खांसी तथा खून के जोश को भी गुणकारी है नीम पर की गिलो को लेकर कूट कर अर्थात् दरड़ा करके रात्रि भर पानी में भिगो रखें और सवेरे तिसका अर्क खैंचे यदि इसमें असलुलसोस गावजुवान गुलाब के फूल नीलोफ़र के फूल शाहतरा के फूल इन सबको उसमें डालकर अर्क निकालें तो बहुत ही गुणकारी होगा ॥७४॥

शाहतरा का मुरक्कब अर्क।

यह अर्क आतशक को दूर करता है और तमाम बदन के दर्द को भी फायदा देता है और सौदा की बीमारियों को भी दूर करता है और खुजली दाद छाजन को भी हटाता है। शाहतरा बड़ी हरड़ का पोस्त नीम के दरख्त की जड़ जो कि ज़मीन के अंदर होती है अमर बेल मंकोह सरभोक यह सब हर एक एक २ सेर चिरायता आध सेर और चंबेली की जड़ गुलाब के फूल गावजुबान सुपेद चंदन लाल चंदन हर एक पाव २ भर इन सब को देग में डाल कर ऊपर वाली रीति से अर्क निकाल लें और छः तोला अर्क में दो तोला उमदा शहत मिला कर निरने मुंह पीवें। ४० दिनों तक पीवें ॥७५॥

मुंडी का अर्क।

यह अर्क फालज़ लकवा और मिरगी और मेहदा की कमज़ोरी को भी फायदा करता है और खून के फ़साद को भी दूर करता है शाखें पत्ते और फूल और जड़ के समेत मुंडी को पांच सेर लो और बादियान १ सेर और भंगरा भी ज़ड़ पत्ते फूल के

समेत एक सेर लो दालचीनी छोटी इलायची जायफल सौंठ अजवाइन लौंग हर एक एक २ तोला इनको देग में डाल कर ऊपर वाले तरीके से अर्क निकालो अर्थात् सब दवाइयों को रात्रि भर १५ सेर पानी में भिगो कर सवेरे ५ सेर उनका अर्क निकालो। ४ तोला खुराक होगी ॥७६॥

भंगरा का अर्क।

यह अर्क निसौत्रां वगैरा वलग़मी बीमारियों को फ़ायदा करता है। भंगरा मुंडी बादियान हर एक एक २ सेर देसी अजवाइन जायफल छोटी इलायची दालचीनी सौंठ लौंग हर एक एक २ तोला इन सबको १५ सेर पानी में रात्रि को भिगो कर सवेरे पांच सेर अर्क निकालो। इसकी खुराक ५ तोला सवेरे और संध्या को दो ॥७७॥

अब शर्बतों के बनाने की रीतियों को लिखते हैं।

जिस चीज़ का शर्बत बनाना हो उसको रात्रि भर पानी में भिगो दें सवेरे उसको औटा कर छान कर रख दो फिर ऊपर से पानी को नितार कर उसमें सुपेद चीनी को डाल कर पकाओ जब

तार निकले तो उतार कर बोतल में भर दो ॥७८॥

खसखास का शर्बत ।

एक सौ दाना पोस्त के डोडों को बीजों के संहत लो फिर कीकर की गोंद बीहदाना कद्दू का बीज ख्यारीन का बीज खतमी का बीज हर एक पांच २ मिसकाल शीरखिशत ३० मिसकाल पहले पोस्त के डोडों को दरड़ करके खतमी और गोंद ३ पानी में भिगो दो फिर मंद आग पर जोश दो जब आधा पानी सूख जाये फिर उतार कर छान लो फिर आध सेर सुपेद चीनी को उसमें डाल कर पकाओ पकते समय उसमें शीरखिशत को मिलाओ और कद्दू तथा ख्यारीन के शीरे को साफ करके मिलाओ और तैय्यार करके बोतल में भर दो । गर्म नजुला वाले को खांसी वाले को बहुत फायदा करेगा ॥७९॥

शाहतूत का शर्बत ।

गले के दर्द को और खून थूकने को और जिगर तथा मेहदा की गरमी को दूर प्यास को भी बुझाता है । काले २ ॰ उनको १ सेर पानी में जोश देकर

रह जाये तो तीन पाव सुपेद चीनी डाल कर शर्बत को बना कर बोतल में भर दो ॥८०॥

संदल का शर्बत।

यह दिल को ताकत देता है और गर्म खफ़गान को भी दूर करता है मेहदा और जिगर की गरमी को भी दूर करता है और प्यास को भी बुझाता है। पहले सुपेद चंदन को कूट कर अध सेर गुलाब में तिसको दो रोज तक भिगो रखे फिर गुलाब को साफ करके जुदा रखे और इसी चंदन को फिर पानी में जोश दें जो चंदन का असर पानी में निकल आवे फ़िर तिस पानी को छान कर गुलाब में मिला कर एक सेर मिश्री को तिसमें डाल कर शर्बत तैय्यार करें ॥८१॥

गुलेज़ूफ़ा का शर्बत।

यह शर्बत गरमी के दिनों में दमें वाले को और खांशी को फ़ायदा करता है। बीहदाना नीलोफ़र हर एक छः माशा मेथी के बीज दो तोला बनफशा खशखाश अलसी हर एक तीन तोला हंसराज जूफ़ा हर एक पांच तोला हंज़ीर पीली ३५ दाना उनाब लसूड़ा मुनक्का बीज निकाला हुआ

हर एक सौ दाना इन सबका ऊपर की रीति से दो सेर मिश्री में शर्बत बनायें ॥८२॥

फ़ालसा का शर्बत ।

यह मेहदा और जिगर को ताकत देता है, गर्म खफगान को दूर करता है, खुमार को हटाता है, सफरा को मेहदा की तरफ गिरने नहीं देता और सफराई बुखार को और गरमी को भी हटाता है। फालसा मीठा काले रंग का लेकर गुलाब और पानी में मिला कर साफ करके उससे दूनी मिश्री डाल कर शर्बत बनाओ ॥८३॥

शर्बत बजूरी।

यह जिगर की बीमारियों को और तप को भी हटाता है। बदियान कासनी का बीज ख्यारीन का बीज खरबूजे का बीज हर एक दो तोला कासनी की जड़ बादीयान की जड़ हर एक ४ तोला सुपेद मिश्री पाव भर सब दवाइयों को कूट कर रात्रि को गर्म पानी में भिगो रखें सवेरे जोश देकर छान कर शर्बत पका लें ॥८४॥

बनफ़शा का शर्बत।

यह जुकाम और नजुला वगैरा बीमारियों में

काम देता है। गुलबनफ़शा ७॥ तोला लेकर पानी में जोश देकर छान कर फिर मिश्री डाल कर शर्बत को बनावें ॥८५॥

नीलोफ़र का शर्बत।

नीलोफ़र नाम कमल के फूल का है यह सिर दर्द और बुखार तथा खांसी वगैरा बीमारियों में दिया जाता है डेढ़ पाव गुले नीलोफ़र को रात्रि को दो सेर पानी में भिगो कर सवेरे जोश देकर छान कर फिर पानी को नितार कर १ सेर मिश्री मिला कर शर्बत बनाये मगर जोश देने में पानी आधा रहना चाहिये ॥८६॥

निम्बू का शर्बत।

यह हाज़मा करता है, खफ़गान को हटाता है, कै को रोकता है, सफरा को निकालता है। आध सेर कागज़ी निम्बू का रस निकाल कर फ़िर आध सेर साफ़ पानी को तिसमें मिलायें और आग पर जोश दें फिर १ सेर मिश्री तिसमें डाल कर शर्बत तय्यार कर लें ॥८७॥

सिकंजबीन बज़ूरी।

जिगर वगैरा की बीमारियों को फायदा

करती है और पेशाब को भी जारी करती है। कासनी के बीज बादियान कर्फश के बीज कासनी की जढ़ बादियान की जढ़ हर एक दो तोला सब दवाईयों को दो सेर पानी में १२ तोला सिरका डाल कर रात्रि को भिगो दें सवेरे जोश देकर साफ करके डेढ़ सेर मिश्री में सिकंजबी बना लें॥

निम्बू की सिकंजबी।

मेहदा और ज़िगर को ताकत देती है। निम्बू का अर्क १० तोला पानी ११ तोला गुलाब का अर्क आध सेर सिरका पाव भर इनमें आध सेर मिश्री को डाल कर सिकंजबी बना लें॥८६॥

मजून मक्ल।

बवासीर को फायदा करती है और आंतों के भीतर जोकि रीह होती है तिसको भी तोड़ती है और गुदा के भीतर जिसमें से खून आता है उसको भी फायदा करती है। काबली हरड़ का पोस्त बहेड़े का पोस्त गुठली से साफ किया हुआ आंवला संपदान का बीज गंधना का बीज देसी अजवाइन तुलसी हर एक १७॥ माशा गुग्गल तीन छटांक गुग्गल को पहले गंधना के पानी में

मिला कर फिर बाकी की सब ओषधियों को कूट पीस कर उसमें गूंधे माजून बन जायेगी ॥६०॥

माजून जालीनूस ।

सिर के दरद और खफ़गान को फ़ायदा करती है। लौंग मस्तगी अगर कच्चा जायफल बालछड़ हर एक ४ तोला नसौत सुपेद ५ तोला और १४ छटांक सेब का शर्बत लेकर माजून को बना कर रख दे फिर खाया करें ॥६१॥

माजून मुसमिक ।

मुसमिक का अर्थ बंधज है अर्थात् बंधज करने वाली और जिसका वीर्य भोग काल में बहुत जलद गिर जाता हो वह इसको दो चना के बराबर रोज खाया करे उसकी बीमारी जाती रहेगी इसको खाकर फिर भोजन न करे किंतु भोग करने से एक या आध घंटा पहले खाये और फिर ऊपर से थोड़ी देर के पीछे थोड़ा सा दूध पीवे, अब माजून लिखते हैं—अफ़ीम जायफल लौंग कस्तूरी केसर गोल मिर्च सोंठ खुरफा सबको बराबर लेकर और सब के बराबर शहत को लेकर माजून बनायें अर्थात् सबको कूट पीस कर शहत में मिला कर

टीन की डिबिया में रख दें १ माशा इसकी खुराक है ॥ ६२ ॥

जुवारश जालीनूस ।

बालछड़ लौंग बड़ी इलायची सलीखा दारचीनी नागरमोथा सोंठ कालीमिर्च पीपल कुटबहरी ऊद बिलसान तगर मोरद का बीज चुरायता केसर हर एक दो २ तोला मस्तगी ५ तोला इन सब के बराबर सुपेद लेकर मिश्री सबको कूट छान कर दूनी शहत में मिला कर तैय्यार करें खुराक मिसकाल से तीन मिसकाल तक भोजन से पहले दो घंटा इसको खायें या दो घंटा पीछे खायें फिर यह जितनी पुरानी हो अच्छी होती है, इसके खाने से बदन में ताकत बढ़ती है और मेहदा के दर्द को दूर करती है भोजन को भी पचाती है मुख में खुशबू पैदा करती है रीह को तोड़ती है जनून और सिर दरद को भी फायदा करती है बलगम खांसी को भी फायदा करती है गुरदा और मसाने की पत्थरी को भी तोड़ती है ॥ ६३ ॥

जवारस अज़ामी ।

यह वीर्य को बढ़ाती है भोग शक्ति को अधि

करती हैं गुरदा और दिमाग को भी ताकत देती है यह अजमाई हुई है। बामन सुरख बामन सुपेद तोदरी ज़रद तोदरी लाल विसखपड़ा का बीज खरबूजा के बीज की गिरी हालन प्याज के बीज चौके के बीज उटंगन के बीज कतीरागोंद तुख़म हलोन शलगम के बीज अज़मूद के बीज हर एक १३॥ मिसकाल छोटी इलायची पीपल कलीजन दारचीनी सोंठ तज्ज हर एक एक २ तोला सब दवाइयों से तिगुना तुरंजबीन पहले तुरंजबीन को गौ के दूध में रात्रि को भिगो दें सवेरे मल कर छान लें और आग पर गाढ़ा करें फिर नीचे उतार कर सब दवाइयों को कूट छान कर उसमें डाल दें फिर चिकने बर्तन में डाल कर रख छोड़ो उसमें साढे तेरा माशा खुराक ताजे गौ के दूध के साथ नित्य खाया करो ॥६४॥

अब खमीरे के बनाने की रीतियों को लिखते हैं।

जिन औषधियों का खमीरा बनाना हो पहले उनको कूट कर भिगो कर फिर अग्नि पर जोश देकर छान कर उनका शीरा निकाल कर तिस

शीरे को मिश्री की चाशनी में मिला कर पका कर अर्थात जबकि बरफी की चाशनी बन जाये तब थाली में जमा कर कतली काट लो ॥६५॥

खमीरा संदल ।

खफ़गान और सौदा की बीमारियों में फायदा देता है। चंदन का बुरादा १० तोला को तीन पाव गुलाब में भिगो दो आठ पहर तक भीगा रहे फिर छान कर ऊपर की रीति से खमीरा बना लें ॥६६॥

खमीरा गावजुबान ।

यह खफगान को दूर करता है दिल और दिमाग को ताकत देता है और निहायत फायदामंद भी है। गावजुबान के फूल गावजुबान की पत्ती बादरंज बोया का बीज बालंगू का बीज हर एक ४ तोला सुपेद चंदन ३ तोला मुशककाफूर खालस अंबर अशहब चांदी के वरक हर एक ६ माशा १ सेर सुपेद मिश्री की चाशनी बना कर उसमें सब को डालकर ऊपर की रीति से बनायो। खुराक इसकी ५ माशा है ॥६७॥

खमीरा खशखाश ।

यह नजुला को और फिफड़ा तथा सीना

की बीमारियों को दूर करता है दिमाग़ को ताक़त देता है नींद को लाता है जिगर की गरमी को भी दूर करता है । खशखाश के डोडे ५०, बीजों सहित लेकर रात्रि को उनको पानी में भिगो दें और सवेरे मल कर छान कर फिर एक सेर मिश्री डाल कर खमीरा तैय्यार कर लें मगर कद्दू का मग़ज और बादाम की मग़ज़ भी एक २ तोला डालें ॥६८॥

खमीरा मोतियों का ।

यह शरीर के सब बंदों को ताक़त देता है और दिल की कमजोरी को भी हटाता है अनविधे सुच्चे मोती यशत सवज़ हर एक छः माशा जैहर-मोहरा खताई ३ माशा कंद सुपेद आध सेर मीठे सेव का शर्बत आध पाव बेदमुशक का अर्क गुलाब का अर्क हर एक आध पाव गावजुबान का अर्क पाव भर चांदी के वर्क ६ माशा सोने के वर्क दो माशा ऊपर-वाली रीति से खमीरा बनायें खुराक इसकी दो माशा है ॥६९॥

जुलाब का नुसखा ।

सुपेद चीनी सात छटांक और ईसबगोल का लुआब सात छटांक इनको तीन पाव पानी में

पकायें भग्ग उतार कर चाशनी बना कर पीवें मगर ईसबगोल का लुआब गुलाब के अर्क में या बेदमुशक के अर्क में निकालें और चीनी की जगह मिश्री मिला कर बनावें बड़ा फायदेमंद होगा ॥१००

जुलाब की गोली ।

बलग़म और सफरा को यह निकालती है। भूनी हुई सकमुनिआ दो माशा कतीरागोंद ३॥ माशा मुलट्ठी का सत बड़ी हरड़ का छिलका दो माशा रेवंद खताई ३॥ माशा गुलाब के फूल ७ माशा नसौत सुपेद छिली हुई ४॥ माशा नीलोफर के फूल, बनफ़शा के फूल हर एक सात माशा हिंदी सनाह ६ माशा इन सबको कूट छान कर गुलाव के अर्क में सान कर चने के बराबर गोलियां बनावे और सात माशा गर्म पानी के साथ खायें जितनी गोलियां खायें उतने दस्त आवेंगे। दूसरी रीति—हिंदीसनाह बड़ी हरड़ का छिलका काबली हरड़ का छिलका हर एक १ तोला आठ माशा सुपेद मिश्री दो तोला तीनों को पीस कर फिर मुनक्का का बीज निकाल कर पानी में धोकर फिर पीस कर जरा सा पानी देकर कपड़ा में छान कर

तीनों को मिला कर गोलियां बना लो ॥१०१॥

गोली खुशक खांसी की ।

निशासता बबूर की गोंद कतीरा गोंद मुलह्ठी बादाम की गिरी बाकला के बीजों की गिरी कद्दू के बीजों की गिरी ककड़ी के बीजों की गिरी सबको बराबर लेकर फिर सबके बराबर तुरंज बीन लेकर बीहदाना के लुआब में गोलियां बनावे ॥१०२॥

गोली बलग़मी खांसी की ।

यह गोली बलग़मी खांसी को तो अवश्य दूर करती है मगर दमा वाले को भी फ़ायदा करती है। पीपल को कपड़ा में लपेट कर गर्म राख के बीच में घड़ी भर तक रक्खो फिर निकाल कर हाथ से मल कर तिसके दाने २ जुदा २ कर दो वह दाने १ तोला भर हों सुहागा भूना हुआ १ तोला कलीजन १ तोला काली मिर्च १ तोला अकरकरा ६ माशा सब को कूट पीस कर फिर घी कुवार के शीरा में तीन रोज़ तक खरल करें जितना उसमें घी कुवार का रस अधिक खरल किया जायेगा और अधिक महीन पीसी जायेगी उतनी ही अच्छी बनेगी फिर

चने के बराबर गोलियां बना लें। एक या दे
गोली खायें ॥१०३॥

गोली बवासीर की कबज़ी की।

बवासीर को बहुत फायदा पहुंचाती है आज़
माई हुई है काबली हरड़ का पोस्त बड़ी हरड़ का
पोस्त बहेड़े का पोस्त और आंवला हर एक
माशा सौंफ देसी सौंफ रूमी रसौंत हिंदी हर एक
४॥ माशा गन्धना के बीज १३॥ माशा गुग्गल
१॥ तोला इन सब को कूट छान कर बादामरोगन
में चिकना करो और गुग्गल को गन्धना के पानी
में धोकर साफ करो फिर १ तोला इंजीर और
तोला बीज निकाला हुआ मुनक्का भी मिला दो
और फिर हाथ पर बादामरोगन को लगा कर
गोलियां बना कर रखो और तीन माशा से
तोला तक खाओ ॥१०४॥

गोली दस्तों के बन्द करने की।

मोरद का बीज १० माशा गुले अरमनी १०
माशा निशास्ता भुना हुआ अंजबार खुरफा के
बीज भुने हुए खशखाश भुनी हुई हर एक १०
माशा इन सब को कूट छान कर, चने के बराबर

लियां बना लो और ७ गोली खाने से दस्त बन्द
जायेंगे ॥१०५॥

गोली बच्चों के दस्तों को बन्द करने की ।

अनार की कली १ दाना जायफल अफ़ीम हर एक एक माशा चासकू रसोत नरकचूर जीरा सुपेद छीला हुआ हलदी छीली हुई का मग़ज़ कूटा हुआ नीम के दरख़्त की कोंपल बकायन के दरख़्त की कोंपल बबूर की कोंपल इन सबको कूट छान कर मूंग के दाना के बराबर गोलियां बनायें एक गोली बच्चे को दे अगर स्याना हो तो दो दें जुवान को तीन दें सबको फायदा करेगी ॥१०६॥

गोली बच्चों के दस्तों को बन्द करती है।

बच्चों के दस्तों को तो रोकती है मगर प्यास को भी बुझाती है सुपेद जीरा भूना हुआ देसी सौंफ हर एक ६ माशा जायफल दो माशा देसी अजवायन १ माशा अफीम ६ रत्ती सबको कूट छान कर एक कच्चे अनार को चीर कर उसमें भर दो फिर आटे को गूंध कर उस अनार पर लगा कर गर्म राख में तिसको दबा दो जब आटा पक जाये तो राख से निकाल कर ठंडा करके ऊपर के आटे

को उतार कर फेंक दो और दवाईयों के सहित अनार को पीस कर बाजरा के दाने के बराबर गोलियां बना लो और उमर (आयु) के हिसाब से गोली को खिलाया करो ॥१०७॥

पेट दर्द की गोली।

सोंठ पीपल काली मिर्च हरड़ आंवला बहेड़ा की छाल कुटकी बावड़िंग नागरमोथा सुपेद बच हर एक एक २ तोला लेकर महीन पीस कर फिर अदरक के रस में ६ पहर तक खरल करके उड़द के दाना के बराबर गोलियां बना लो इसके खाने से पेट का दर्द और वायु का कोप दूर होजाता है॥

मुख में छालों की औषधि।

चौकिआ सुहागा को लेकर आग पर भून कर पीस कर शहत में मिला कर छालों पर लगाओ या पापड़ी खैर गुजराती इलायची मुरदासंग खड़ियामट्टी इन सब को बराबर लेकर पीस कर ज़रा सा पानी डाल कर मुख के अंदर सब छालों पर इसका लेप करो ॥१०८॥

होठों के छालों की दवा।

दो माशा मोम दो माशा घृत दोनों को अग्नि

पर रख कर १ माशा सेंधा नमक पीस कर उसमें मिला कर दो बूंद पानी की डाल कर फिर तिस को दिन में तीन चार दफ़ा बराबर लगावें आराम हो जायेगा ॥११०॥

दूध के गुणों का निरूपण ।

अब दूध के गुणों को लिखते हैं—कोई हकीम तो दूध में गरमी और सरदी दोनों को बराबर ही मानते हैं और कोई इसको गर्म और तर मानते हैं कोई सरद और तर मानते हैं इसमें कारण यह है कि जितने दूध के देने वाले पशु हैं उन सबके मिज़ाज परस्पर जुदा २ ही होते हैं अर्थात् किसी का सरद किसी का गरम होता है उन्हीं के मिज़ाज के मुताबिक उनके दूध की भी तासीरें होती हैं फिर हर एक दूध में चार चीजें रहती हैं १ मीठापन २ चिकनाई ३ पानी ४ सुपेद रंग। कोई हकीम दूध की चिकनाई को गरमो-खुशक और मोतदिल मानते हैं और इसके पानी को गरमोतर मानते हैं और मीठे पन और सुपेद रंग को सरदोखुशक मानते हैं इसी वास्ते इसको बलकर भी जानते हैं इसी वास्ते हर एक पशु का

दूध गरमी और तरी तथा खुशकी में मुवाफिक ज़रूर होता है अर्थात् दूध हर एक आदमी को किसी न किसी अंश में मुवाफिक ज़रूर होता है। जो दूध बहुत ही सुपेद हो और न बहुत गाढ़ा हो न बहुत पतला हो और अंगुली के नख के ऊपर जिसकी बूंद भी ठहर जाये और रोग रहित जवान पशु का हो वही दूध उमदा और गुणकारी होता है और जितने कि गाय या भैंस और बकरी वगैरा काले रंग वाले पशु हैं उन सब का दूध भारी होता है और देर हज़म भी होता है और जितने दूध के देने वाले सुपेद रंग के पशु हैं, उनका दूध हलका और जलद पचने वाला होता है। गरमी के दिनों में दूध में तरी अधिक होती है और जाड़े के दिनों में कम होती है। जो पशु कम उमर वाला निरोग और जवान होता है उस के दूध में तरावत बहुत होती है और ज़ितनी ही अधिक उमर वाला और बूढा पशु होता है उस के दूध में खुशकी बहुत सी रहती है फिर दूध की तासीर भी मौसमों के अनुसार बदलती रहती है। जब दूध देने वाला पशु भांग या पोस्त वगैरा खराब पत्तियों को खा जाता है तो उस के दूध में

सुस्ती जरूर ही हो जाती है क्योंकि खराब और कावज पत्तियों के खाने से दूध की तासीर भी बदलती रहती है। ताजे मेवे के खाने से ऊपर या मांस मछली के खाने के बाद और खट्टी चीज़ के खाने से पीछे तुरंत ही दूध का पीना मना है क्योंकि दोष-जनक होजाता है इन के खाने से तीन घंटा पीछे दूध पीने से दोष-जनक नहीं होता। दूध का ऐसा स्वभाव है कि जो चीज़ पहले मेहदा में होगी तिसी के साथ बदल जायगा इसी वास्ते ऊपर वाली चीजों के खाने से पीछे दूध का पीना मना किया है, जिसका मेहदा और जिगर दोनों कमजोर हों तिसको भी दूध का पीना मना है। जब गाय वगैरा का बच्चा पैदा हो तो चालीस दिनों के पीछे तिसका दूध पीना अच्छा होता है वरना २१ दिनों से पहले तो नहीं पीना चाहिये। जिस गर्भवती स्त्री को बुखार आता हो तिसको भी दूध नहीं देना चाहिये। गौ का ताज़ा दूध जिस में थन की गरमी अभी हो उस में मिश्री डालकर तुरत ही पीने से बड़ा फ़ायदा [illegible] के सेवन से चेहरे का रंग लाल होजाता [illegible] भी बढ़ता है और दिमाग़ भी [illegible] की

दूध गरमी और तरी तथा खुशकी में मुवाफिक जरूर होता है अर्थात् दूध हर एक आदमी को किसी न किसी अंश में मुवाफिक जरूर होता है। जो दूध बहुत ही सुफेद हो और न बहुत गाढ़ा हो न बहुत पतला हो और अंगुली के नख के ऊपर जिसकी बूंद भी ठहर जाये और रोग रहित जवान पशु का हो वही दूध उमदा और गुणकारी होता है और जितने कि गाय या भैंस और बकरी वगैरा काले रंग वाले पशु हैं उन सब का दूध भारी होता है और देर हजम भी होता है और जितने दूध के देने वाले सुफेद रंग के पशु हैं उनका दूध हलका और जलद पचने वाला होता है। गरमी के दिनों में दूध में तरी अधिक होती है और जाड़े के दिनों में कम होती है। जो पशु कम उमर वाला निरोग और जवान होता है उस के दूध में तरावत बहुत होती है और जितनी ही अधिक उमर वाला और बूढ़ा पशु होता है उस के दूध में खुशकी बहुत सी रहती है फिर दूध की तासीर भी मौसमों के अनुसार बदलती रहती है। जब दूध देने वाला पशु भांग या पोस्त वगैरा खराब पत्तियों को खा जाता है तो उस के दूध में

सुस्ती जरूर ही हो जाती है क्योंकि खराब और कावज पत्तियों के खाने से दूध की तासीर भी बदलती रहती है। ताजे मेवे के खाने से ऊपर या मांस मछली के खाने के बाद और खट्टी चीज़ के खाने से पीछे तुरंत ही दूध का पीना मना है क्योंकि दोष-जनक होजाता है इन के खाने से तीन घंटा पीछे दूध पीने से दोष-जनक नहीं होता। दूध का ऐसा स्वभाव है कि जो चीज़ पहले मेहदा में होगी तिसी के साथ बदल जायगा इसी वास्ते ऊपर वाली चीजों के खाने से पीछे दूध का पीना मना किया है, जिसका मेहदा और जिगर दोनों कमजोर हों तिसको भी दूध का पीना मना है। जब गाय वगैरा का बच्चा पैदा हो तो चालीस दिनों के पीछे तिसका दूध पीना अच्छा होता है वरना २१ दिनों से पहले तो नहीं पीना चाहिये। जिस गर्भवती स्त्री को बुखार आता हो तिसको भी दूध नहीं देना चाहिये। गौ का ताज़ा दूध जिस में थन की गरमी अभी हो उस में मिश्री डालकर तुरंत ही पीने से बड़ा फायदा होता है इस के सेवन से चेहरे का रंग लाल होजाता है और वीर्य भी बढ़ता है और दिमाग को भी बल देता है और दिमाग की

खुशकी को भी दूर करता है कबजी को भी खोलता है और गरमी खुशकी मिजाज वाले के अनुकूल होता है, ताज़े दूध के पीने से बदन की खुशकी और खारश भी दूर होजाती है। दूध वीर्य्य को और भोग-शक्ति को भी बढ़ाता है और गर्म २ पीया हुआ दूध नजुले को फायदा करता है अंदाज़ का पीया हुआ दूध हर एक आदमी को फायदा देता है अधिक पीया हुआ गुणकारी नहीं होता, बिगड़ा हुआ दूध पीना भी हानिकारक होता है। जिस काल में दूध अग्नि पर रखा जाये उस काल में एक टुकड़ा सोंठ का तिसमें डाल देना चाहिये और पीते समय उस में मिश्री मिला कर पीने से वह दूध गुणकारी होता है और दूध को पीकर ऊपर से थोड़ी सी किशमिश खाने से पाचक होजाता है॥

हर एक के दूध, घी तथा दधि के भिन्न २ गुण यह हैं:—

बकरी का दूध सरद और तर होता है कई इस को बाई भी कहते हैं मगर बबूर की पत्ती और जौं के खिलाने से बकरी का दूध किसी तरह का

भी नुकसान नहीं करता और तुरंत दोहा हुआ गर्म २ यह छाती और दिल की बीमारियों को और खफगान तथा बलराम की बीमारियों को भी दूर करता है ॥१॥

भेड़ी का दूध गरमोतर होता है और गाढ़ा भी होता है दिमाग और इन्द्रि को बलकर होता है मगर इसका थोड़ा सा ही पीना अच्छा होता है बहुत सा पीआ हुआ पेट में बोझ और खराब गंधि पैदा कर देता है ॥२॥

गौ का दूध गरमी और सरदी में मोतदिल है और जलदी पच भी जाता है माता के दूध के बराबर यह गुणकारी भी होता है। ताज़ा गौ का दूध बहुत गुणकारी होता है और निसिआं की बीमारी को भी दूर करता है और भी इसमें बहुत से गुण हैं ॥३॥

भैस का दूध गाढा और भारा होता है देर हजम भी होता है फिर बच्चा के पैदा होने से तीन दिनों तक का दूध सब पशुओं का भारा और देर हजम होता है मगर शरीर को मोट्टा करता है और भोग शक्ति को भी बढाता है यह गुण भी तिसमे है और मेहदा मे खराबी को पैदा करता है पेट

फुलाता है पत्थरी और कौलंज की बीमारी को भी पैदा करता है यह दोष भी उसमें है। भैस के दूध का मक्खन गरमोतर होता है मगर मलाई से निकाला हुआ भैस का मक्खन अच्छा होता है अर्थात् मोतादिल होता है और शरीर को भी मोटा करता है आवाज को साफ़ करता है गले और छाती के मवाद को भी दूर करता है और मिश्री के साथ खाने से अधिक गुणकारी होता है फिर भैस के मक्खन में गाढ़ापन और चिकनाई भी होती है मगर मेहदा को सुसत और ढीला भी करता है भूख को भी कम करता है फिर भैस के दूध का पानी गर्म और खुशक होता है मगर मेहदा की मल को निकालता है ॥४॥

गौ का घृत सुगंधि वाला और गरमोतर भी होता है और हाज़मा भी होता है मगर पुराना घी अच्छा नहीं होता ॥५॥

भैस का घृत गौ के घृत से भी ताकत वाला होता है परन्तु कमजोर मेहदा वाले को अनुकूल नहीं पड़ता ॥६॥

होता क्योंकि उसकी गांधि अच्छी नहीं होती, इसी से लोग उसको नहीं खाते ॥७॥

गौ का दधि सरदोतर होता है फिर जितना पतला और खट्टा होता है उतना ही अधिक सरद होता है बदन को तर करता है प्यास को मिटाता है गर्म तासीर वाले को फ़ायदा करता है मगर वाई वाले को नुकसान करता है हज़म भी देर में होता है चीनी या नमक के साथ खाने से जलदी पच जाता है ॥८॥

दधि की छाछ सरदोतर है कोई इसको गरमोतर भी मानते हैं और गौ के दही की ताज़ी छाछ बहुत ही अच्छी होती है प्यास को मिटाती है खून के जोश को दबाती है भूख को जगाती है मेहदा की गरमी और सोज को भी हटाती है ॥९॥

कई वैद ऐसे कहते हैं कि कच्चा दूध खांसी और वाई को करता है मगर थन के तले का गुणकारी होता है ॥११॥

इति स्वामिहंसदासशिष्येण परमानन्दसमाख्याधिरेण
विरचिता 'गुणों का खजाना' नामक ग्रन्थे
चतुर्थो ऽध्यायः ॥४॥

पांचवां अध्याय।

अब इस अध्याय में हर एक फल, फूल
तथा सबज़ी आदि के गुण और
अवगुण लिखते हैं।

अंगूर के गुण।

अंगूर मेवा गरमोतर है पेट में कुछ देर तक ठहरता भी है फिर अंगूर भी अनेक प्रकार के होते हैं मगर सबसे उमदा अंगूर सुपेद ही होता है अंगूर का छिलका और तिसके बीज गर्म और खुशक होते हैं यह बदन को मोटा करता है और साफ़ खून को भी पैदा करता है। यह छाती और फिफरे को भी ताकत देता है और पेट को भी नरम करता है मगर मेहदा और जिगर को बहुत सा खाया हुआ नुकसान करता है परन्तु अंगूर को खाकर ऊपर से खट्टामिठा अनार खाओ तो नुकसान नहीं करता, अंगूर को खाकर ऊपर से ठंडा पानी कदाचित् भी न पीवें क्योंकि इससे बुखार वगैरा की बीमारियां पैदा होजाती हैं और दरखत

से तोड़ कर भी तुरंत न खाये कुछ देर रख कर खाये। बदाना (छोटा) अंगूर सब तरह के अंगूरों से अच्छा होता है फारसी में अंगूर को मवीज़ और हिंदी में दाख और मुनक्का तथा मेवा भी कहते हैं॥

हंजीर के गुण।

हकीम लोग ताज़ी हंजीर को गरमोतर कहते हैं यह मेहदा में कुछ देर ठहरती भी है रेचक भी है भोग शक्ति को भी बढ़ाती है साफ़ खून को भी पैदा करती है बदन को मोटा करती है जिगर को भी ताकत देती है बलगम और सौदा को भी नरमी के साथ निकालती है सोज़ और बवासीर को भी फ़ायदा करती है खांसी को और छाती के दर्द को भी हटाती है। सूखी हंजीर खुशकी और तरी में मोतदिल होती है और यह तीन तरह की होती है एक सुपेद दूसरी काले रंग की तीसरी पीले रंग वाली होती है तीनों में सुपेद अच्छी होती है कच्ची अंज़ीर नुकसान करती है॥२॥

खुरमानी के गुण।

खुरमानी मेवा सरदोतर होता है बवासीर को फायदा करती है। खुरमा, छुहारा, खजूर यह सब

मेवे प्रसिद्ध हैं, यह सब गर्म और खुशक होते हैं मगर खून साफ़ और पैदा करते हैं बदन को मोटा करते हैं गुरदे को ताकत देते हैं छाती और फिफड़े को भी फ़ायदा करते हैं पत्थरी को तोड़ते हैं मगर अधिक खाने से नुकसान भी करते हैं कब्ज़ भी हैं ॥

बादाम के गुण ।

मीठे बादाम की गिरी गरमो तर है और दिमाग़ को ताकत और तरावट देती है पेट को भी नरम रखती है बदन को मोटा करती है बीस गिरी को और छोटी इलायची को बीस दिनों तक रोज़ नित्य घोट कर तिसमें मिश्री डाल कर पीने से खूनी बवासीर अच्छी होजाती है। बादाम-रोग़न गरमी और सरदी दोनों मौसमों में मोतादिल है सिर पर मलने से दिमाग़ को तर रखता है खुशकी और नजुले को भी दूर करता है ॥४॥

पिस्ता के गुण ।

पिस्ता गर्म और खुशक है मगर साफ़ खुन को पैदा करता है वीर्य्य को और भोग शक्ति को भी बढ़ाता है बदन को मोटा करता है दिल और

 को भी ताकत देता है खफ़गान को भी

ाता है मगर गर्म मिज़ाज वाले को अधिक खाने
सिर दर्द पैदा करता है ऊपर से तुरशी खाने से
र नुकसान नहीं करता ॥५॥

अखरोट के गुण ।

अख़रोट की गिरी गर्म और खुशक है वीर्य
ो बढ़ाती है पेट को नर्म करती है दिमाग़ को
ाकत भी देती है किशमिश के साथ मिलाकर
ाने से अधिक गुणकारी होती है, हंजीर के साथ
मिलाकर खाने से रेचक होती है, वैद्य लोग इस
ो गर्म और भारी मानते हैं और बलग़म को
ढ़ाने वाला भी मानते हैं; मगर सफरा और खून
ी बीमारी को दूर करने वाला भी मानते हैं ॥६॥

सेव के गुण ।

इस तरह तो सेव पिशावर वगैरा देशों में
और दूसरे पहाड़ों में भी कहीं २ होता है मगर
उमदा सेव कशमीर का ही होता है, यह बहुत
दिनों तक रह भी सकता है और देखने में भी
सुंदर होता है। मीठा सेव गरमी और सरदी में
मोतादिल होता है और कोई २ इस को गर्म और
तर भी मानते हैं, खट्टा सेव सरद और खुशक

होता है गर्म मिज़ाज वाले को मुआफ़िक़ तो होता है मगर कबज़ होता है और रोग-जनक भी होता है। मीठे सेव का पानी दिमाग़ और जिगर को ताकत देता है इसका शर्बत भी फ़ायदा करता है इसका मुरब्बा बल को बढ़ाता है ॥७॥

बीह के गुण ।

बीह मेवा पिशावर में ही बहुत होता है मीठी खट्टी और खटमिठी तीन प्रकार की बीह होती है तीनों में मीठी बीह सरद और तर होती है और कई इस को मोतदिल भी मानते हैं मगर कबज होती है अग्नि की भुब्बल में पका कर खाने से दस्तों को बंद कर देती है मुरब्बा भी इसका दस्तों को रोकता है खट्टी बीह इस से भी कबज़ होती है मीठी बीह के खाने से मेहदा की ताकत बढ़ती है बीह का पानी मेहदा को अधिक ताकत देता है। भोजन से पीछे और पहले इसका खाना अति नुकसान करता है ॥८॥

नासपाती के गुण ।

नाशपाती भी बहुत से देशों में होती है मगर सब से उमदा कश्मीर की होती है। मीठी

नासपाती मोतादिल होती है और खट्टी सरद और तर होती है मगर सब किसम की नासपाती देर हज़म होती है गन्दे खून को पैदा करती है बदन को मोटा और मेहदा को साफ़ भी करती है ॥९॥

अनार के गुण ।

मीठा अनार मोतादिल होता है जिगर को ताकत देता है खून को साफ़ करता है भोजन के पीछे खाने से भोजन को पचाता है गर्म खफ़गान को और छाती के दरद को भी हटाता है आवाज़ को भी साफ करता है मगर अधिक खाने से मेहदा सुस्त हो जाता है परन्तु खट्टे अनार के साथ मिला कर खाने से फिर नुकसान नहीं करता । खट्टा अनार सरद और खुशक होता है खून के जोश को दूर करता है और जिगर को कमजोर करता है । तीसरा एक खटमिठा अनार होता है जोकि न तो खट्टा ही होता है और न मीठा ही होता है यह अनार गरमी और सरदी में मोतादिल होता है ॥१०॥

तूत के गुण ।

तूत मेवा कुछ अठारा या बीस तरह का होता है और रंग में भी कोई सुपेद कोई लाल

कोई काला कोई गुलाबी कोई सबज होता है एक बदाना तूत ही सब तूतों से उमदा होता है और सब तो दानेदार ही होते हैं। तूत सब तरह के गर्म और तर होते हैं एक तूत एक २ अंगुली भर का लंबा होता हैं उसको पिशावर में सेवीं कहते हैं दूसरे देशों में उसको भी तूत ही कहते हैं तूत मेवा रेचक भी होता है अवल नंबर का तूत बदाना कावल देश में ही होता है जब तक कि वह दस पांच दफ़ा सरद पानी में धोया नहीं जाता तब तक वह खाया नही जाता, इतना तेज़ मीठा होता है कि कावल के देश में तूतों को भाड़ कर टोकरियों में भर देते हैं और उनके नीचे बर्तन रख देते हैं टोकरियों के छिद्रों द्वारा तूतों का शीरा बह कर बर्तनों में जमा होता है उसी की मिठाईयां बनती हैं, उस देश में गन्ना नहीं होता। कावल से उतर कर पिशावर में दूसरे दरजा का तूत होता है और अन्य देशों का इसके नीचे तीसरे दरजा का है। मीठा तूत साफ खून को पैदा करता है और दिमाग को भी तर रखता है जिगर को भी फ़ायदा देता है शरीर को मोटा करता है पेट को नर्म करता है और भोग शक्ति को भी

बढ़ाता है पेशाब को भी जारी करता है परन्तु अधिक खाने से मेहदा को बिगाड़ता है। खट्टा तूत सरद और खुशक होता है मगर काले रंग का खट्टा और मोटा तूत सरद और तर होता है कबज़ भी होता है और हाज़मा होता है पेशाब को अधिक लाता है प्यास को दबाता है फ़िफड़े को नुकसान करता है, अनार का पानी ऊपर से पीने से नुकसान नहीं करता। लाल रंग का तूत कबज और खुशक होता है सफरा को दूर करता है पेट को बन्ध करता है ॥११॥

नारियल के फल के गुण।

नारियल के फल को गरी भी कहते हैं यह गर्म और खुशक होता है वीर्य को पैदा करता है गुरदा को गर्म और बदन को मोटा करता है सरदी की बीमारियों को और बवासीर को भी फायदा करता है और शकर तथा मिश्री के साथ खाने से अधिक फ़ायदा करता है मगर गर्म मिज़ाज वालों को मुवाफिक नहीं किन्तु सरद मिज़ाज वाले को मुवाफिक होता है ॥१२॥

ताड़ के फल के गुण।

ताड़ का फल कच्चे नारियल की तरह होता है

और इसके भीतर कुछ दाने होते हैं और किसी के अंदर एक ही दाना होता है तिस दाने का नाम तरकुल है वह थोड़ा मीठा होता है मगर कड़ा होता है फल का मिज़ाज सरद और खुशक है दाना इस का सरद और तर होता है खाने में देर हज़म और भारी भी होता है ॥१३॥

आम के गुण।

इस भारतवर्ष में आम के बराबर दूसरा कोई भी मेवा नहीं, आम चार सौ जाति से भी अधिक होता है मगर यह मेवा गर्म ही देश में होता है ठंडे पहाड़ों में नहीं होता। यह बड़ा नाज़ुक भी है जब इसका फूल आता है तिस काल में यदि ज़रा सी भी बदली होजाती है या पूर्व की हवा चलती है तो सब गिर जाता है इसी वास्ते हमेशा सब ज़िलों में यह नहीं होता किसी न किसी ज़िले में इस पर ज़रूर आफ़त पड़ जाती है। जिन २ ज़िलों में गरमी का मौसम जलदी आ जाता है वहां पर आम भी जलदी ही पैदा होकर पकने लगते हैं। एक बीजू आम होते हैं दूसरे क़लमी होते हैं तीसरे बारा-

से लेकर दो सेर वज़न तक का आम इस देश में होता है बंबई मालदेव लंगड़ा खुर्पेद वगैरा इनके नाम भी अनेक ही हैं। छोटे २ कच्चे आमों को कोई सरद और तर और कोई सरद और खुशक कहते हैं यह मसाने और गुरदे को भी फायदा करता है आम की खटाई ताज़ी और सूखी दोनों सरद और तर होती है। आम का मुरब्बा सफराई मिज़ाज वाले को फ़ायदा करता है भूख को बढ़ाता है मेहदा और दिल को भी ताकत देता है। आम का अचार गर्म और तर होता है कोई इस को गर्म और खुशक भी मानते हैं यह बल को बढ़ाता है शरीर को मोटा करता है खफ़गान और जिगर को भी फायदा करता है मगर छाती और दांतों को नुकसान करता है। पैल का पका हुआ आम मेहदे और गुरदे तथा मसाने को मजबूत करता है कब्ज़ी को खोलता है शरीर के रंग को अच्छा करता है बादी बवासीर को भी फ़ायदा करता है बलग़म सौदा और वाई को भी फ़ायदा करता है पेशाब को जारी करता है खून को पैदा करता है मगर गर्म मिज़ाज वाले को अधिक खाने से नुकसान करता है यदि गौ का दूध ऊपर से पी लो

तो फिर नुकसान नही करता। जो आंम खटमिठा होता है वह शरीर में गरमी और होठों और मुख में भी गरमी और खांसी को पैदा करता है पतले रस के आमों को कुछ देर तक पानी में गिभो कर फिर भोजन से कुछ देर पीछे चूस कर ऊपर से दूध पीने से बहुत फ़ायदा होता है और जो आम गाढ़ रस का होता है और चाक़ू से काट क़र खाया जाता है वह गद होता है देर हज़म भी होता है आम की जोकि अमावट बनती है तिसका मिज़ाज गर्म होता है आंम की गुठली का मगज़ मेहदा को फ़ायदा करता है भूख को बढ़ाता है और भूना हुआ आम हाज़मा होता है ॥१४॥

आम की गुठली के गुण।

आम की गुठलियों को जोश देकर ऐसी जगह में रखो कि बरसात का पानी उन के ऊपर पड़ता रहे जब बरसात बीत जाय तो उन का मगज़ निकाल कर उस में कागज़ी निम्बू का अर्क और सोंठ तथा काली मिर्च और निमक इन को मिलाकर खरल करके छोटी सी टिकिया बनाकर रख छोड़ो, जिस बच्चे को दस्त आते हों उस को ज़रा सा खिलाने से दस्त बन्द होजाते हैं ॥१५॥

जामुन के गुण।

जामुन सरद और खुशक होता है और कब्ज भी है निमक लगाकर खाने से पच जाते हैं बल-गमी दस्तों को और बलगमी खांसी को दूर करता है जंगली जामुन देर हजम होता है यह वीर्य को बढ़ाता है दस्तों को रोकता है और बदन को बल देता है ॥१६॥

खट्टे के गुण।

खट्टा एक फल पंजाब में और जम्बू वगैरा के पहाड़ों में भी होता है यह निम्बू से बहुत बड़ा होता है रस इसका खट्टा होता है और छिलका बहुत मोटा होता है इसका अचार भी पड़ता है छिलका इसका गर्म और खुशक है इसके सूंघने से बदन गर्म होजाता है इसकी खटाई सरद और खुशक होती है मगर मेहदा की सोज को दूर करती है और कपड़ा पर मलने से स्याही को भी दूर कर देती है यह पेट के दरद को दूर करता है बीज इसके जेहर की भांति हैं ॥१७॥

संगतरा के गुण।

संगतरा सरद और तर है दिल को ताकत देता

है खफ़गान को दूर करता है शराब के नशे को भी कम करता है ॥१८॥

केवला (मिट्ठा) के गुण।

मिट्ठा सिलहट का सब से उमदा होता है यह सरद और तर है खफ़गान को और सफ़रा की तेज़ी को और प्यास को तथा मेहदा की जलन को बुझाता है पेशाब को जारी करता है ॥१६॥

नारंगी के गुण।

यह सरद और तर है कै को और दस्तों को तथा प्यास को रोकती है केवला के साथ इसका थोड़ा ही फ़र्क़ होता है केवला नारंगी से बड़ा होता है और संतरा केवला के बराबर ही होता है छिलका इसका केवला से महीन होता है और बड़ा होता है और खटाई भी इसमें अधिक होती है ॥२०॥

सफतालु के गुण

सफतालु सरद और तर होता है पेट को नरम करता है प्यास को बुझाता है खून और सफ़रा के जोश को भी रोकता है ॥ २१ ॥

इम्बली के गुण

इम्बली सरद और खुशक होती है मेहदा और

दिल को ताकत देती है मगर बहुत खाने से नुकसान करती है और शर्बत इसका गर्म मिजाज़ वालों को बहुत फायदा करता है ॥२२॥

आंवला के गुण

आंवला सरदा और खुशक है इसका मुरब्बा और आचार भी बनता है इसका मुरब्बा मेहदा को ताकत देता है और गर्म ख़फ़गान को दूर करता है भूख को लगाता और भोग शक्ती को बढ़ाता है बवासीर को बंद करता है मगर कब्ज़ है ॥२३॥

करोंदा के गुण

करोंदा सरद और तर है प्यास को बुझाता है मगर बलग़म को पैदा करता है ॥२४॥

कैथा के गुण

कैथा सरद और खुशक तथा कब्ज़ भी है भूख को बढाता मगर अधिक खाने से खांसी को पैदा करता है ॥२५॥

खिरनी के गुण

खिरनी गरम तर होती है बदन को मोटा और वीर्य्य को गाढा करती है मगर कौलंज को पैदा करती है ऊपर से मीठा या गुलकंद खाने से फिर नुकसान नहीं करती ॥२६॥

कटहल के गुण

कटहल कच्चा सरद और तर होता है इसकी तरकारी और इसका आचार भी बनता है सफरा और कब्ज़ को फायदा करता है बदन को मोटा करता है यह पका हुआ मीठा होता है मगर देर हज़म है ॥२७॥

शरीफा फल के गुण

शरीफा फल का दूसरा नाम सीता फल है यह सरद होता है इसको खाकर ऊपर से पानी का पीना मना है वैदों के मत में यह वीर्य्य को बढ़ाता है ॥२८॥

फालसा के गुण

यह फल दो तरह का होता है एक खट्टा होता है इसकी तासीर सरद है दूसरा मीठा होता है यह मेहदा और दिल को ताकत देता है बुखार को भी हटाता है मगर कब्ज़ होता है फिर यह खांसी को छाती की जलन को और खुशकी को दूर करता है कोई वैद इसको देर हज़म और कब्ज़ भी कहते हैं बवासीर वाले को भी फायदा करता है और बदन को मोटा करता है ॥२९॥

बिल के गुण।

पका हुआ मीठा बिल गर्म और तर होता है और कच्चा सरद और तर होता है आधा पका हुआ सरद और खुशक होता है फिर पका हुआ मीठा बिल दिल और दिमाग जिगर और मेहदा को ताकत देता है और दस्तों को भी रोकता है मगर अधिक खाया हुआ बवासीर को पैदा करता है देर हज़म भी है शर्बत इसका कबज़ नहीं होता। यह बलग़म बुखार और सफरा को भी फायदा करता है ॥३०॥

खरबूज़ा के गुण।

यह गर्म और तर होता है दिमाग़ को तर रखता है पसीना और पेशाब को जारी करता है निहार मुंह इसका खाना अच्छा नहीं क्योंकि सफराई बुखार को पैदा करता है और भोजन के पीछे खाने से बदहज़मी करता है इस वास्ते भोजन से दो घंटा पीछे इसका खाना अच्छा होता है वैदों के मत में यह गर्म है मेहदे को ढीला करता है ॥३१॥

ककड़ी के गुण

पंजाब में इसका नाम तर है यह

दरजा में सरद और तर है गरमी और प्या
को दूर करती है पेशाब को जारी करती है पे
को नर्म करती है यह खरीफ और रबी दोन
फसलों में होती है खरीफ की ककड़ी रगों
नुकसान करती है और किसी २ जगह में एक ह
फसल में होती है जो ककड़ी पक कर फट जात
है वह सरद और तर होती है ॥३२॥

खीरा के गुण

खीरा के खाने और सूंघने से सिर के दरद क
फायदा पहुंचता है सफरा और खून के जोश
को दबाता है गरमी के बुखार वाले को भ
फायदा करता है परन्तु वादी और वाई है निमव
और गोल मिर्च के साथ खाने से नुकसान नहं
करता ॥३३॥

सिंगाढ़ा के गुण

सिंगाड़ा ताजा पहले दरजा में सरद औ
तर है खुन के दस्तों को बंद करता है मसान
की पत्थरी को निकालता है सिंगाड़ा सूखा भारी
होता है बदन को मोटा करता है दिल
और प्यास को दूर करता है और वी

शकरकंदी के गुण

यह सरद और तर है और कब्ज भी है मगर हलवा इसका कम कब्ज़ है लाल शंकरकदी मोतदिल है और देर हज़म भी है दिमाग को ताकत देती है मनी को पैदा करती है ॥३५॥

शहत के गुण।

हकीम लोग इसको गर्म और खुशक बताते हैं फिर यह लाल सुपेद काली और सबज चार प्रकार की होती है चारों में जोकि ताजी लाली लिये होती है वह अच्छी होती है बाकी की तीनों अच्छी नहीं होती। दो बरसों से पहले का जो शहत होता है वह बिलकुल खराब होता है और खांसी वगेरा बीमारियों को पैदा करता है और ताज़ा साफ किया हुआ शहत मेहदा से खराब मल को निकालता है बलगम को निकालता है छाती को साफ करता है ॥३६॥

ऊख (गन्ना) के रस के गुण।

ऊख का ताज़ा रस हाज़मा है कबज़ी को खोलता है और छाती के बलगम को भी दूर करता है ॥३७॥

गन्ने के गुण।

गन्ने का नाम पूर्व में पौंडा है यह ऊख से बहुत नर्म होता है दूसरे दरजा में यह सरद और तर है यह सुपेद काला और लाल तीन तरह का होता है मगर तीनों में सुपेद ही अच्छा होता है ऊख भी तीन ही तरह का होता है शरीर में बल पैदा करता है हाज़मा होता है सफरा के फ़साद को हटाता है पेशाब को जारी करता है मुंह के मज़े को भी बना देता है ॥३८॥

शक्कर के गुण।

लाल शकर गर्म और तर होती है पेट को नर्म करती है सफरा को बढ़ाती है बलग़म को घटाती है सुपेद शकर का नाम ही चीनी है इसमें गरमी कम होती है मिश्री में भी गरमी कम होती है पुरानी शकर नुकसान करती है ॥३६॥

राब के गुण।

राब दूसरे दरजा में गर्म और तर है बदन को बल देती है पसीना लाती है, हाज़मा होती है छाती के दरद को भी दूर करती है ॥४०॥

गुड़ के गुण ।

यह गर्म और खुशक होता है कवजी को खोलता है हाज़मा भी होता है छाती के दरद को भी दूर कर करता है मगर अधिक खाने से नुकसान करता है पुराना गुड़ दवाईयों के काम में आता है ॥

चन्दन सुपेद के गुण ।

यह सरद और खुशक होता है मेहदा और दिल को ताकत देता है खफ़गान गर्म को दूर करता है और शरीर की सोज को तथा तेज बुखार को भी फायदा करता है गरमी के सिर दरद को भी दूर करता है गरम तप को और प्यास को भी फायदा करता है। खाली चंदन का खाना अच्छा नहीं क्योंकि भोग शक्ति को घटाता है शहत या मिश्री के साथ खाने से फिर नुकसान हनीं करता ॥

कसतूरी के गुण ।

कस्तूरी बहुत तरह की होती है मगर सबमें उमदा कस्तूरी खुतनी और खताई होती है उसके नाफा पर बाल बिलकुल नहीं होते हैं उसकी सुगंधि भी उमदा होती है मगर ताज़ी ही अच्छी होती है और ताज़ी का रंग पीला होता है पुरानी का रंग

काला होता है इसकी तासीर गरम और खुशक है जितनी पुरानी अधिक होती है उतनी ही खुशक भी होती है सूंघना इसका अच्छा होता है खाने से भोग शक्ति को बढ़ाती है दिल की कमज़ोरी को और सौदा तथा खफगान की बीमारी को भी फ़ायदा करती है फालज लकवा और मालीखोलिया वगैरा बीमारियों को भी फ़ायदा करती है नजुला को भी रोकती है मगर गर्म मिजाज वाले को नुकसान करती है काफ़ूर के साथ नुकसान नहीं करती। कस्तूरी दो तरह की होती है एक असली दूसरी नकली दोनों में से जो नकली अर्थात् बनावटी होती है उसका रंग बहुत काला होता है और सख़्त भी होती है वज़न में भारी होती है देर में गलती भी है असली की पहचान इस तरह से है— एक सूई में सूत का तागा डाल कर पहले तिसको कस्तूरी के नाफ़ा में से निकाल कर फिर तिसको लहसन की गांठ में निकाल लेना जबकि उस डोरा में लहसन की गन्धी मालूम न हो तो जान लेना कि यह असली है और कोई पहले नाफा में निकाल कर फिर तिसको हींग मे निकालते हैं जब हींग की गंधि तिसमें ना आये तो जान लेना कि असली

है। दूसरी परीक्षा इसकी इस तरह से करते हैं ज़रा सी कस्तूरी को अपनी हथेली पर रख कर मुख की थूक से उसको मलना यदि थूक के संबन्ध से गल जाये तो असली है यदि न गले और बत्ती की तरह बन जाये तो जान लेना कि यह नकली और बनावटी है। तीसरी परीक्षा—ज़रा सी कस्तूरी को आग की चिनगारी पर रखो यदि तिसमें से रुदिर की गंधि न आवे तो जान लेना कि यह असली है अगर उसमें रुदिर की गन्धि आवे तो जान लेना कि यह नकली है ॥४३॥

अम्बर के गुण।

अम्बर भी एक असली और दूसरा नकली होता है असली अम्बर दांत से नहीं कटता नकली दांत से कट जाता है यही इसकी परीक्षा है यह खाने और लगाने तथा सूंघने के काम में आता है तासीर इसकी गर्म और खुश्क है सरदी की बीमारी वाले को फ़ायदा करता है आधे सिर के दरद को नज़ुला को खफ़गान को फालज को लक़वा को दिल और मेहदा की कमज़ोरी को भी फ़ायदा करता।

लोबान के गुण

यह गरम और खुशक है दिल और दिमाग़ को ताकत देता है फिर इसकी गंधि से बलग़म और दिमाग़ की बीमारी जाती रहती है नेत्रों की बीमारी को भी फ़ायदा करता है ॥४५॥

काफूर के गुण।

यह सरद और खुशक है इसके सूंघने से दिल को ताकत आती है इसका खाना पेशाव की जलन गुरुदा की बीमारी और प्यास को भी फ़ायदा करता है सूंघने से नकसीर बंद हो जाती है नेत्रों में लगाने से नेत्रों की बीमारियों को भी रोकता है नेत्रों में से कीचको निकलने नहीं देता है तासीर इसकी ठंडी है अधिक खाने से भोगशक्ति को बढ़ाता है और भूख को भी कम करता है और बलग़म सफ़रा और खराब खून प्यास और गरमी को भी फ़ायदा करता है बहुत काल तक खाने से नपुंसक बना देता है ॥४६॥

खस घास के गुण।

यह घास एक तरह की सुगंधित वाला होता

बनाते हैं इसकी गंधि से मकान की वायु शुद्ध हो हो जाती है दिमाग़ को भी गुणकारी होती है ॥४७

गुलाब के गुण।

गुलाब का फूल अनेक तरह का होता है और इसके रंग भी बहुत तरह के होते हैं। यह दो तरह का होता है एक तो मौसमी गुलाब होता है जोकि चेत वैशाख में ही फूल देता है इसी में सुगंधि बहुत रहती है इसी का अर्क और अतर भी निकाला जाता है गुलकंद भी इसी की ही बनती है और अनेक दवाईयों के नुसखों में भी यही पड़ता है। दूसरा सदा गुलाब होता है इसमें गन्धि कम होती है देखने मात्र ही यह सुंदर होता है इसका अर्क वगैरो भी नहीं निकलता। तासीर इसकी सरद और खुशक है कोई मोतदिल मानते हैं बलगमी जुलाब में भी पढ़ता है दिल दिमाग़ जिगर और मेहदा की गरमी को भी यह हटाता है बदहजमी को भी दूर करता है ॥४८॥

सेवती के फूल के गुण।

यह सरद और हलका होता है, कुशाद भी है और चेहरे के रंग को भी उजला करताहै ॥४

केवड़े के फूल के गुण।

यह गरम और खुशक होता है कई हकीम इसको मोतदिल मानते हैं मगर कई इसको गरम और खुशक भी मानते हैं इसके सूंघने से दिमाग़ को फ़ायदा पहुंचता है अर्क इसका मोतदिल है खून के जोश को यह कम करता है और जो २ इसके अर्क में फ़ायदे हैं वही सब इसके अतर में भी फ़ायदे हैं और तेल इसका सब तरह के दरद को फ़ायदा करता है ॥५०॥

केतकी के फूल के गुण

केतकी का दरख़त भी केवड़ा के दरख़त की तरह ही होता है इसके फूल का रंग ज़रद होता है और बहुत सी सुगंधि भी तिसमें होती है इसके फूल की तासीर भी केवड़ा के फूल की तरह है इसका सूंघना दिल और दिमाग़ को ताकत देता है ॥५१॥

वेदमुशक के फूल के गुण

और फूलों के फूलने की बहार से पीछे फूलता है अतर इसका सुगन्धि वाला होता है दिल और दिमाग़ को ताकत देता है और वीर्य्य

को बढ़ाता है मगर पका हुआ कबज़ होता है बंधेज को बिगाड़ता है परंतु वाई के दरद को दूर करता है ॥५२॥

मौलसरी के फूल के गुण।

यह सरद और खुशक होता है फल इसका बहुत सरद और तर होता है फूल और अतर इसका सुगंधि वाला होता है दिल और दिमाग़ को ताकत देता है वीर्य को बढ़ाता है । पका हुआ फल इसका कबज होता है और बंधेज को भी बिगाड़ता है परंतु वाई के दरद को दूर करता है ॥५३॥

मोतिआ के गुण

इसी का दूसरा नाम बेला है तीसरा नाम रबेल भी है यह गरम और तर होता है कई हकीम इसको सरद और तर भी मानते हैं का इस का सूंघना दिल और दिमाग़ को ताकत देता है तेल इसका सिर के दरद को हटाता है अतर इसका तेल से भी अधिक गुणकारी होता है इसके सूंघने से बुखार खफगान हिजकी और केकी भी फायदा पहुंचता है चित्त को भी प्रसन्न करता है वैद्य लोग इसकी तासीर को सरद मानते हैं ॥५४॥

सुपेद चम्बेली के गुण।

इसका फूल गरम और खुशक होता है सरदी लकवा फालज की बीमारियों को फायदा करता है मगर गर्म मिज़ाज वाले को फ़ायदा नहीं करता। इसके तेल के मलने से सरीर नर्म होता है अतर इसका और अधिक गुणकारी होता है ॥५५॥

चम्पा के फूल के गुण

इसका रंग पीला होता है तासीर गरम और खुशक है गुलकंद इसका वलग़म को दूर करता है मगर भूख को दवाता है फिर एक नागचम्पा का फूल होता है यह फूल गर्म और तेज़ होता है इसके सूंघने से नेत्रों को फ़ायदा पहुंचता है और भूख भी वढ़ाता है ॥५६॥

नरगस के फूल के गुण।

इसका फूल भोगशक्ति को वढ़ाता है और इसका तेल चंबेली के तेल की तरह गुणकारी होता है ॥५७॥

हारसिंहार और तुण के गुण।

यह भी सुगंधि वाला होता है इस के फूल में कपड़े भी रंगे जाते हैं तासीर इसकी सरद

र खुशक होती है। तुण का फूल पीले रंग का
और गन्धि वाला होता है इसके फूल से भी कपड़े
गे जाते हैं मगर खुशक होता है ॥५८॥

जूई के फूल के गुण

इसका फूल सरद और तर होता है इसके
र से नेत्रों को और मेहदा को फ़ायदा पहुंचता
पत्थरी को भी दूर करता है ॥५६॥

गुलेशब्बो के फूल के गुण ।

यह खुशक होता है इसके सूंघने से दिमाग़
का बलग़म दूर होता है इसका गुलकंद खफ़गान
ा हटाता है ॥६०॥

पालक के साग के गुण

यह साग सरद और तर है कबज़ी को दूर
करता है सीने की बीमारियों को और खांसी को
भी दूर करता है गरम और सरद मिज़ाज वाले
के भी गुणकारी होता है और भी इसमें गुण हैं॥६

कुलफे के साग के गुण ।

यह दूसरे दरजा में तर और तीसरे दर
में सरद है गरम मिजाज वाले को फ़ायदा क
...भी खोलता है ॥६२॥

करमकल्ला के गुण

यह गरम और खुशक है चेहरे के रंग को अच्छा करता है आवाज़ को साफ़ करता है बवासीर वाले को और खुशक मिज़ाज वाले को नुकसान करता है ॥६३॥

लाल साग के गुण

लाल साग सरद और तर है प्यास को कम करता है बादामरोग़न के साथ बनाया हुआ खांसी को भी दूर करता है ॥६४॥

बाथू के साग के गुण ।

यह पहले दरजा में सरद और तर है कबजी को खोलता है गरम मिज़ाज वाले के जिगर को भी फ़ायदा करता है पेट को नर्म और बदन को तर रखता है प्यास को भी दबाता है परंतु पेट में बाई को पैदा करता है रोज़ खाने से मेहदे और गुरदे को नुकसान करता है ॥६७॥

काहू के साग के गुण ।

यह दूसरे दरजा में सरद और तर है साफ़ खून को पैदा करता है पाचक भी है प्यास को भी कम करता है सिरका के साथ खाने से भूख

को बढ़ाता है अधिक खाना इसका भोगशक्ति को घटाता है ॥६६॥

मेथी के साग के गुण।

यह साग गरम और खुशक है कमर के दरद को जिगर और मसाना की कमजोरी को योनी के दरद को अर्थात् इन सब को गुणकारी है सरद मिजाज़ वाले को गुणकारी होता है मगर बहुत खाना इसका भी नुकसान करता है ॥६८॥

पुदीना के गुण।

यह दूसरे दरजा मे गरम और खुशक है परंतु ताज़ा हरा पुदीना कम खुशक होता है मेहदा और दिल को ताकत देता है इस की सुगंधि भी अच्छी होती है मेहदा के दरद को और दांतों के दरद को भी फायदा करता है और इलायची के साथ पुदीना का निकाला हुआ अर्क बदहज़मी को दूर करता है भूख को बढाता है ॥७०॥

गन्धना के साग के गुण।

यह दूसरे दरजा में गरम और खुशक होता है मगर सिर के दरद को और नेत्रों की कमजोरी को पैदा करता है और सिरका के साथ खाने से नुकसान नहीं करता ॥७१॥

कासनी के गुण ।

इसका साग सरद और खुशक होता है परंतु गरम और तर बीमारी को गुणकारी होता है और गरम मिजाज वाले को भी गुणकारी होता है सरद मिजाज वाले को मुआफिक नहीं होता है और जिगर के दरद को भी दूर करता है ॥७२॥

सरसों के साग के गुण ।

यह चौथा दरजा में गरम और खुशक है बलग़म को छांटता है जुबान को खुश करता है सिरकी रतूबत को भी दूर करता है मुख के मज़ा को भी बनाता है पेट के कीड़ों को भी दूर करता है मगर गर्म मिजाज वाले के मुआफिक नहीं होता ॥७३॥

मूली के साग के गुण ।

मूली का साग गरम और खुशक होता है बलग़म को छांटता है अन्न को पचाता है मगर कच्ची मूली देर हज़म होती है ॥७४॥

चने के साग के गुण

चने का साग गरम और तर है मगर कच्चा बहत सा खाया हुआ पेटमें दरदको पैदा करता है ॥

अरबी के पत्तों के साग के गुण

यह गरम और तर होता है चौके का साग सरद और खुशक होता है परन्तु खट्टा होता है दस्तों को रोकता है सफरा को भी दूर करता है गरमी से भूख की कमी को बढ़ाता है सरद मिज़ाज वाले को मुआफ़िक नहीं होता गर्म मिज़ाज वाले को मुआफिक होता है ॥७६॥

रामदाने के साग के गुण ।

इस का साग बहुत ही गरम होता है और दस्तावर भी होता है गर्म मिज़ाज वाले को नुकसान करता है सरद वाले को फ़ायदा करता है॥७७॥

लूनीआं कुलफे के गुण ।

इस की तासीर ठंडी होती है नजुला को यह रोकता है मगर भूख को घटाता है बहुत खाने से नेत्रों के रोग को भी फ़ायदा करता है ॥७८॥

चंलाई के साग के गुण ।

यह सरद और तर है पेट को नरम करता है शरीर को तर रखता है प्यास को और गरम खांसी को भी रोकता है वैद्य लोग इस को ठंडा मानते हैं तासीर मीठी और पाचक भी है ॥७६॥

पवी के साग के गुण ।

यह वाई है मगर सफरा और वलगम को दूर करता है पाचक है शरीर को ताकत देता है मेहदा की अग्नि को तेज करता है ॥८०॥

सौंचल का साग ।

यह पहाड़ों पर और पहाड़ों की तरहि में आप से आप ही होता है इस की गंदल में लस बहुत होती है स्वादु वहुत होता है पहाड़ों में अनेक तरह के साग होते हैं ॥८१॥

कद्दू के गुण ।

कद्दू सरद और तर है जलद हजम होता है मगर कुछ वाई भी है इस का अचार भी स्वादु होता है खटाई के साथ खाने से कौलंज की बीमारी वाले को नुकसान करता है वाई नहीं करता ॥८२॥

कुंबड़ के गुण ।

यह सरद और तर है देर हजम है कच्चे का आचार और तरकारी बनती है पके की लपसी बनती है ॥८३॥

ककड़ी के गुण ।

यह दूसरे दरजा में सरद और तर होती है

प्यास को मिटाती है पेशाब को जारी करती है इस की तरकारी गरम मिज़ाज वाले को फायदा करती है ॥८४॥

खीरा के गुण।

यह दूसरे दरजा में सरद और तर है यह बहुत तरह का होता है पेशाब को जारी करता है प्यास को हटाता है गरम मिज़ाज वाले को फ़ायदा करता है मगर देर हजम है बादी है बहुत खाने से नुकसान करता है ॥८५॥

सुपेद पेठे के गुण।

यह सरद और तर होता है पेशाब को जारी करता है खांसी और मसाना की बीमारी को दूर करता है मसाना की पत्थरी को भी निकालता है प्यास को दबाता है सफरा को हटाता है ॥८६॥

तोरी के गुण।

यह दो तरह की होती है और दोनों सरद और तर होती हैं तप वाले को फ़ायदा करती है कहीं २ यह चार तरह की भी होती है ॥८७॥

करेला के गुण।

यह भी दो तरह का होता है एक सुपेद

सबज होता है तासीर इस की गरम और खुशक है सफरा को पैदा करता है बलग़म को रोकता है वीर्य्य को बढ़ाता है बाई वाले को फ़ायदा करता है मगर रेचक है ॥८८॥

बैंगन के गुण।

यह दूसरे दरजा में गरम और खुशक है और रेचक भी है भड़था इस का सरद होता है इस का आचार भी बड़ा स्वादु होता है ॥८९॥

कंदरु के गुण।

यह सरद और तर होता है मेंहदा को कमज़ोर करता है आवाज़ को साफ़ करता है इस की तरकारी और आचार भी बनता है ॥९०॥

चिचिंडा के गुण।

यह सरद और तर होता है अन्न को पचाता है भूख को पैदा करता है सफराई तप और खारश को भी हटाता है इस की तरकारी ठंडी हलकी और हाज़मा भी होती है॥९१॥

भिंडी तोरी के गुण।

यह बड़ी पुष्ट होती है प्रमेह की बीमारी वाले को बड़ी गुणकारी होती है वीर्य्य को गाढ़ा करती

है बल को बढ़ाती है तासीर इस की सरद और तर है रेचक भी है ॥६२॥

सुहांजन की फली के गुण ।

यह गरम और खुशक होती है और कवज़ भी होती है मगर वाई मिज़ाज वाले को बड़ा फ़ायदा करती है ॥६३॥

गोभी के फूल के गुण ।

गोभी का फूल सरद और कवज़ है मगर स्वादु बहुत होता है इस की तरकारी आचार वग़ैरा बहुत सी चीजें बनती हैं ॥६४॥

अगस्त के फूल के गुण ।

इस का फूल सरद और खुशक होता है मगर देर हजम और कवज भी होती है ववासीर के खून को और हैज के खुन को भी रोकता है ॥६५॥

कचालू के गुण ।

कचालू गरम और तर होता है और कोई इस को सरद और खुशक भी मानता है वाई भी है मगर वीर्य्य को बढाता है बहुत दिन खाने से आंव को पैदा करता है गरम मसाला से वाई नहीं करता ॥६६॥

चकंदर के गुण।

यह पहले दरजा में सरद और तर है दूसरे दरजा में सरद और खुशक है पेट की मल को निकालता है छाती पर नज़ुला को गिरने नहीं देता है और गरम मिज़ाज वाले को मुआफिक भी होता है ॥६७॥

शलगम के गुण।

यह गरम और तर होता है और जलद पच भी जाता है नेत्रों को ताकत देता है मगर मेहदा को कमज़ोर भी करता है गरम मिज़ाज वाले को फ़ायदा करता है इस का आचार भी स्वादु होता है ॥६८॥

मूली के गुण।

यह गरम और खुशक है पेट को नर्म करती है बवासीर और कौलंज की बीमारी वाले को फ़ायदा करती है पेशाब को जारी करती है ॥६९॥

गाजर के गुण।

गाजर कोई गरम और तर मानते हैं और कोई सरद और तर मानते हैं यह जिगर और मेहदा को ताकत देती है वीर्य्य को बढ़ाती है पेशाब

को जारी करती है बलग़म को काटती है छाती मेहदा और जिगर के दरद को भी दूर करती है गुरदे और और मसाना की पत्थरी को भी निकालती है तरकारी इसकी देर-हज़म होती है मुरब्बा इसका पुष्ट होता है ख़फ़गान को हटाता है ॥१००॥

जिमींकंद के गुण।

जिमींकंद गरम और खुशक है इसकी तरकारी चटनी और अचार भी बनता है बवासीर वाले को फ़ायदा करता है और पुष्ट भी होता है इमली और मूली की पत्ती में उबालने से इसका काँटा भुर जाता है ॥१०१॥

आलू के गुण।

आलू गरम और खुशक होता है छिलका इसका कब्ज़ होता है इस वास्ते छील कर बनाना चाहिये ॥१०२॥

केसर के गुण।

यह गरम और खुशक होता है मगर ताज़ा केसर बड़ी सुगंधि वाला होता है चावलों में डालने से उनके रंग को सुंदर बना देता है इसके अधिक खाने से भूख कम हो जाती है ॥१०३॥

बड़ी इलायची के गुण।

यह हाज़मा होती है अच्छे डिकारों को लाती है मगर आंतों को नुकसान करती है ॥१०४॥

छोटी इलायची के गुण।

यह पसीने और मुख को खुगिन्ध वाला कर देती है मगर फिफड़े को नुक़सान करती है कतीरा गोंद के साथ नुकसान नहीं करती ॥१०५॥

लौंग के गुण।

लौंग गरम और खुशक है मेहदा जिगर और दिमाग़ को ताकत देता है कै को भी रोकता बलग़म और सौदा को भी दूर करता है मुख को सुगंधि वाला बना देता है नजुला और फ़ालज को भी दूर करता है भोग शक्ति को भी बढ़ाता है मगर गुरदा और आंतों को नुकसान करता है बबूर के गोंद के साथ मिलाकर खाने फिर नहीं करता ॥१०६॥

तेजपात के गुण।

यह दूसरे दरजा में खुशक और तीसरे में गरम है शरीर को मोटा करता है आंतों को भी फ़ायदा करता है पेशाब को जारी करता है स्त्री के

हैज को दूध को और पसीना को भी जारी करता है मेहदा और जिगर को भी फ़ायदा करता है फिफड़े और मसाना को नुकसान करता है ॥१०७॥

दालचीनी के गुण।

यह गरम और खुशक होती है इसके डालने से तरकारी सुगंधि वाली हो जाती है वाई वलगम और सौदा को भी दूर करती है ताकत को बढ़ाती है आवाज को साफ करती है मेहदा दिमाग़ और जिगर को भी ताकत देती है मगर गर्म मिजाज वाले को नुकसान करती है कतीरा गोंद के मिलाने से नहीं करती ॥१०८॥

जीरे के गुण।

काला जीरा गरम और खुशक होता है भोजन को पचाता है वाई को दूर करता है मेहदा को फायदा करता है पेशाब को जारी करता है और जिस भोजन मे डाला जाता है और इसको सुगंधि वाला बना देता है दूसरा सुपेद जीरा होता है इसकी उसकी तासीर में थोड़ा सा ही फ़र्क होता मगर दोनों सुगंधि वाले और हलके भी होते हैं वाई और वलगम को भी दूर करता है मेहदा को ताकत देता है ॥१०९॥

हलदी के गुण

हलदी गरम और खुशक है यह तरकारी की बदबो को दूर करती है और खूबसूरत भी बना देती है बलग़म को भी हटाती है दिल को ताक़त देती है खून और खारश को भी फ़ायदा करती है ॥११०॥

काली मिर्च के गुण ।

कालीमिर्च गरम और खुश्क है यह वाई और बलग़म को दूर करती है खट्टे डिकारों को भी दूर करती है भोजन को पचा देती है दिमाग़ मेहदा और जिगर को भी फ़ायदा करती है ॥१११॥

नमक के गुण

यह गरम और खुशक है मुख को साफ़ करता है दुर्गन्धि को हटाता है भोजन को पचाता है बदहज़मी को हटाता है पके हुए बलग़म को निकालता है अधिक खाना इसका नुकसान करता है ॥११२॥

कलौंजी के गुण ।

यह बदन को गर्म करती है रतूबत को सुखा देती है अन्न को पचाती है पेशाब को जारी

करती है मगर गुरदे और हैज को नुकसान करती है वलग़म को और पत्थरी को भी निकालती है॥

लाल राई के गुण ।

राई लाल और सुपेद यह दोनों चौथे दरजा में खुशक है इसको महीन पीस कर लोग चटनी और आचार वगैरा में डालते हैं इसी से वह खट्टे हो जाते हैं यह रतूवत को दूर करती है प्यास को लगाती है मुख को भी साफ़ करती है कई इसको गरम और सरद भी मानते हैं वलग़म और वाईगोला को भी फ़ायदा करती है मगर पेशाव में जलन और सिर दरद को पैदा करती है नेत्रों को भी नुकसान करती है ॥११४॥

मेथी के वीजों के गुण ।

मैथी के वीज गरम और खुशक होते हैं चटनी और तरकारियों में भी डाले जाते हैं पेट को नरम और साफ़ भी करते हैं वाई को भी दूर करते हैं भूख को वढाते हैं मगर सफराई वीमारी को पैदा करते हैं ॥११५॥

हींग के गुण ।

यह गर्म और खुशक होती है सब तरकारियों

और दाखों में भी पडती है पेट के कीड़ों को यह मारती है आवाज़ को साफ़ करती है हाजमा भी करती है मगर जिगर और मेहदा को नुकसान करती है वाई बलगम और पेट के दरद को भी दूर करती है ॥११६॥

सोए के बीजों के गुण ।

सोये के बीज और पती यह दोनों गरम और खुशक हैं मगर बलगम वाई और मेहदा के दरद को फ़ायदा करते हैं ॥११७॥

सौंफ़ के गुण ।

यह गरम और खुशक है नेत्रों की रोशनी को और मेहदा को यह फ़ायदा करती है पेशाब और हैज़ को जारी करती है मगर देर हज़म है वैद्य लोग इसको सरद मानते हैं, भूख को बढ़ाती है मेहदा और ज़िगर को गर्म रखती है ॥११८॥

सौंठ के गुण ।

यह गरम और खुशक है मगर हाज़मा है आंतों को और बलगम को भी फ़ायदा करती है मेहदा और जिगर को भी गर्म रखती है ॥११९॥

कलौंजन के गुण ।

यह गरम और खुशक है मगर मेहदा में हाज़मा शक्ति को बढाता है आवाज को साफ़ करता है पेशाब को रोकता है कतीरा गोंद के साथ नहीं रोकता मुख की दुर्गंधि को दूर करता है ॥

धनियां के गुण ।

यह मोतदिल है शरीर की दुर्गन्धि को दूर करता है भोजन के उत्तर हैज़ा होने वाले को फ़ायदा करता है दमे की बीमारी वालेको नुकसान करता है सबज़ धनियां ठंडा होता है इसी से भोग शक्ति को यह घटाता है ॥१२१॥

प्याज के गुण ।

यह गरम और खुशक होता है बदन को गरम करता है भोग शक्ति को बढाता है तरकारी इसकी पुष्ट होती है यह तरकारियों का मसाला है बाई आदिक बीमारियों को दूर करता है वीर्य्य को बढ़ाता है रंग को साफ़ करता है बदन को मोटा करता है सिरका में इसका आचार भी बनता है कच्चा देर हज़म होता है ॥१२२॥

लस्सन के गुण।

पंजाब में इसको थोम कहते हैं और यह गरम और खुशक भी होता है तरकारी का यह मसाला है वाई को हटाता है शरीर के जोड़ों की रतूबत को सुखाता है, खूत को जारी करता है पेशाब हैज और पसीना को भी साफ़ करता है पेट के कीड़ों को भी निकालता है गले को साफ़ करता है सरद मिजाज वाले को और बूढ़े को बहुत फ़ायदा करता है ॥१२३॥

एकपुटिया लस्सन के गुण।

यह गरम और तेज़ होता है जिस गठ में एक ही तुरी होती है उसको एकपुटिआ कहते हैं शरीर को ताकत देता है इसकी तीन चार तुरियों को दूध में औंटा कर पीने से जोड़ों का दरद और वाई का दरद ज़ाता रहता है भूख को बढाता है बलगमी बीमारियों को भी दूर करता है परंतु दिमाग़ और नेत्रों तथा गुरदा को नुकसान भी पहुंचाता है घृत और खटाई के साथ नुकसान नहीं पहुंचाता गुणकारी हो जाता है ॥१२४॥

अदरक के गुण ।

अदरक गरम और खुशक है हाज़मा है मेहदा और आंतों की वाई को निकालती है और जिगर और दिमाग को ताकत देता है चटनी और आचार की वादी को दूर करके स्वादु बना देती है ॥१२५॥

लाल मिर्च के गुण ।

यह लाल पीली और सवज तीन रंगों वाली होती है दाल वगैरा सब तरकारियों को यह स्वादु बना देती है अन्न को पचाती है कामाग्नि को तेज़ करती है मेहदा और दिमाग की रतूबत को भी दूर करती है मगर खुशक मिज़ाज़ वाले को नुकसान करती है और वीर्य को पतला करके बंधेज को विगाड़ती है सिरका या कागजी निम्बू के रस या निमक या घृत के साथ खाने से फिर नुकसान नहीं करती, बहुत छोटी लाल मिर्च बहुत तेज़ होती है ॥१२६॥

पुदीना के गुण ।

यह दूसरे दरजा में गरम और खुशक होता है मेहदा को ताकत देता है हिचकी को रोकता है भोजन को हज़म करता है वलगमी कै को दूर

करता है पेटके कीड़ों को भी निकालता है भोग की शक्ति और नेत्रों की रोशनी को भी बढ़ाता है॥

तेलों के गुण।

तिली का तेल गरम और खुशक होता है कई इसको मोतदिल भी मानते हैं। सरसों का तेल गरम और तर होता है मगर तलख और तेज भी होता है बलग़म को कुछ फ़ायदा करता है नेत्रों को भी कुछ फायदा करता है। अरिंड का तेल रेचक होता है दूध में डाल कर पीने से दस्तावर होता है और जो हज़म हो जाये तो अधिक गुणकारी होता है। बादाम का तेल गर्म और तर होता है और मोतदिल भी होता है ॥१२८॥

गेहुं के गुण।

गेहुं को पंजाब में कणक कहते हैं कच्ची गेहुं के खाने से पेट में दाने पैदा होते हैं और भट्ठी में भूनी हुई कणक देर हज़म होती है खाली खाने से पेट में कीड़ों को पैदा करती है गुड़ के साथ मिला कर खाने से फिर कीड़ों को पैदा नहीं करती। गेहुं का दलिया हलका होता है और जलदी पच भी जाता है कमज़ोर आदमी को बड़ा

फ़ायदा करता है। यह पहले दरजा में गरम और तर होती है खून को साफ़ करती है मोतादिल होती है निशास्ता इसका खुशक होता है घृत में भूनकर खाने से पतले दस्त भी हट जाते हैं छाती और फिफरे की सखती दूर हो जाती है जुकाम भी इससे रुकता है मगर हमेशा खाना इसका अच्छा नहीं नई गेहुं गरम खुशक होती है मगर तीन बार पानी मे धोकर सुखा कर पिसवाने से फिर गर्मी को नहीं करती ॥१२६॥

गेहुं के भेदों का निरूपण ।

काले रंग की गेहुं अच्छी नहीं होती क्योंकि खाने में नुकसान करती है, लाल और हरे रंग वाली मोटे दानों वाली गेहुं अच्छी होती है यह वीर्य्य को बढाती है कबजी को दूर करती है मगर देर हज़म होती है, सुपेद गेहुं की रोटी अच्छी होती है पानी में भीगी हुई रोटी देर हज़म होती है गर्म मिज़ाज वाले को नुकसान करती है सरद मिज़ाज़ वाले को नुकसान नहीं करती दूध में भी भिगोई हुई रोटी देर हज़म होती है ॥१३०॥

चावलों के गुणों का निरूपण

चावल सैंकड़ों जाति के होते हैं और चावलों का खाना भी बहुत से देशों में है कई हकीम इन को गरम और खुशक और कई सरद और खुशक और कई मोतादिल बतलाते हैं। एक साठी का चावल लाल रंग का होता है तासीर उसकी सरद और तर होती है परंतु कब्ज होता है सबसे उमदा चावल सुपेद पुराना होता है वह भी जोकि रस में मीठा है और पकाने में लंबा २ हो जाये वह खाने में स्वादु और अच्छा भी होता है यही चावल दूध घृत और चीनी के साथ खाने से वीर्य्य को बढ़ाता है कब्जी को हटाता है मगर मजाज वाले को फ़ायदा नहीं करता पुराना चावल कमज़ोर आदमी के लिये बहुत ही अच्छा होता है नया चावल तिसको नुकसान करता है और नये धान को उबाल कर जो चावल निकाला जाता है वह हलका होता है और भूनिया कह लाता है, और जोकि धान के उबाले से विना चावल निकाला जाता है वह अरवाक होता है, चावल के आटे की रोटी काबज होती है बाई को पैदा करती है। भिन्न जाति के चावलों की तासीर

भी भिन्न २ होती है उमदा चावल पिशावर और पीलीभीत में बहुत सा पैदा होता है बंगाल और तिरोहित में कहीं २ अच्छा महीन पैदा होता है उसी उमदा चावलों के किसम २ के पुलाव भी बनते हैं जोकि मोटे सुपेद चावल होते हैं उन की नरम खिचड़ी होती है ॥१३१॥

चने के गुणों का निरूपण।

कच्चे चने का नाम बूट है यह गरम और तर होता है और देर हजम भी होता है गलता भी नहीं सूखे चनों को भी हकीम गरम और तर कहते हैं और कोई गरम और खुशक भी कहते हैं वीर्य्य को बढ़ाता है सुपेद रंग का चना पंजाब के किसी एक ही हिस्सा में होता है और दो तरह का होता है एक मोटा दूसरा छोटा चना पेट को नर्म और खून को साफ करता है वीर्य्य को भी बढाता है भोग शक्ति को भी अधिक करता है काले रंग का चना पेशाब को जारी करता है फालज और जोड़ों के दरद को और बलग़म की बीमारी को भी फायदा करता है आवाज़ को साफ करता है भूना हुआ चना खुशक और कब्ज़ होता है भूने हुए चने का छिलका उतार कर उनको साफ करके उन में शकर

को मिला कर सोते समय खाने से बंधेज करता है और चने के बेसन में सुगंध वाले घृत को मिला कर फिर शरीर पर मले तो खारश दूर हो जाती है शरीर भी नर्म हो जाता है, चने की रोटी खुशक और देर हज़म होती है मगर घृत के साथ जलदि पचती है और कोई वैद्य चनों को सरद और कबज़ भी मानता है बवासीर और संग्रहणी वालों को नुकसान करता है चने का पानी बहुत पुष्ट होता है चने का रस बल को बढ़ाता है ॥१३२॥

मूंग के गुणों का निरूपण ।

यह सबज़ रंग के और मोटे अच्छे होते हैं पहले दरजा में यह सरद और तर होता है मगर इस का छिलका खुशक होता है साबित मूंगों की दाल बड़ी स्वादु होती है सफराई बुखार को खांसी और नजुला को और खारश की बीमारियों को भी फायदा करती है पेट को भी नर्म करती है मगर भोग शक्ति को घटाती है धोई हुई मूंग की दाल पेट को नर्म करती है वैद्य इस को कबज़ भी कहते हैं इसकी खिचड़ी देर हज़म होती है ॥१३३॥

उड़द के गुणों का निरूपण ।

उड़दों को ही पंजाब में मांह कहते हैं यह

गरम और तर होते हैं वाई को पैदा करते हैं छिलका इन का कब्ज़ होता है धोई हुई दाल उड़द की वीर्य्य को बढ़ाती है रेचक भी होती है हींग का छोंक लगाने से और अदरक को इस में डालने से फिर वाई को नहीं करती और कई तरह से बनती है ॥१३४

मसूर के गुण।

मसूर पहले दरजा में सरद होते हैं दूसरे दरजा में खुशक होते हैं और कब्ज़ भी होते हैं हमेशा इन का खाना मना है यह काले रंग के खून को पैदा करते हैं कब्ज़ भी होते हैं एक मल का मसूर होता है वह घृत मसाला से स्वादु बनता है। जो गुण मसूर में हैं वही गुण इस की रोटी में भी हैं इस की दाल हमेशा खाने से नजर कम हो जाती है यह फिफड़े और आंतों को भी नुकसान पहुंचाता है भोग शक्ति को भी घटाता है कोई गरम कोई सरद कोई मोतादिल भी कहता है मेहदा और दिमाग को भी बिगाड़ते हैं सौदा को उभारते खटाई लस्सन और अदरक के डालने से फिर नुकसान नहीं करते ॥१३५॥

अरहर की दाल के गुण।

अरहर की दाल एक सुपेद दूसरी लाल

तीसरी पीले रंग की होती है यह बलग़मी और सफ़राई मिज़ाज वालो को फ़ायदा करती है कोई इस को गरम और खुशक मानते हैं कोई सरद और खुशक मानते हैं ॥१३६॥

जौं के गुण।

कोई जौं को सरद और खुशक मानते हैं इस की रोटी भी सरद और खुशक होती है पुराना भूना हुआ जौं अधिक खुशक होता है कब्ज भी होता है सत्तू इस के बहुत ठंडे होते हैं मगर कबज होते हैं वाई को पैदा करते हैं मसाला इन का गुड़ है जौं को कूट कर छिलका उतार कर पीस कर रोटी बनाई जाये तो अच्छी होती है ॥१३७॥

ज्वार के गुण।

इस का दूसरा नाम मकी भी है इस को हकीम लोग सरद और खुशक कहते हैं दस्त को रोकती है देर हज़म होती है शरीर को बढ़ाती है मगर वाई होती है ॥१३८॥

बाजरा के गुण।

यह सरद और खुशक और कब्ज़ भी होता है और पेट की तरी को खुशक करता है खराब

खून को पैदा करता है देर हज़म भी है मसाला इस का घृत और दूध है यह पच जाने पर बल को पैदा करता है इस की रोटी की तासीर खुशक होती है॥१३६॥

सावां के गुण।

सावां गरम और खुशक होता है वाई को पैदा करता है श्रावण के महीना में यह नया पैदा होता है रंग इस का पीला होता है रोटी इस की खून को खुशक करती है बदन को सखत करती है बलगम को पैदा करती है सफरा को बढ़ाती है॥१४०॥

सागू दाना के गुण।

सागू दाना पहले दरजा में तर है दूसरे दरजा में खुशक है बदन को मोटा करता है कमज़ोर को फ़ायदा करता है ॥१४०॥

पोस्त के दाने के गुण।

इसी का नाम खशखाश है स्याह और सुपेद यह दो तरह का होता है सुपेद सरद और खुशक है कोई सरद और तर भी मानते है नज़ुला को फ़ायदा करती है ॥१४२॥

तिलों के गुण।

तिल भी दो तरह के होते हैं एक काले दूसरे सुपेद मगर दोनों की तासीर गरम होती है मेहदा को नुकसान करते हैं भूखे को घटाते हैं प्यास को बढ़ाता है छिलका उतार कर भून कर गुड़ मिला कर खाने से फिर नुकसान नहीं करते एक तिल छोटे और दूसरे मोटे होते हैं तासीर में बराबर होते हैं ॥१४३॥

मोठ वगैरा के गुण।

मोठ मड़ुवा काकन और चीणा यह सब अन्न ज्येष्ट के महीना में होते हैं और भी बहुत से कोदों वगैरा मोटे छोटे अन्न पूर्व देश में होते हैं इन अन्नों को गरीब लोग ही खाते हैं ॥१४४॥

लोबिया के गुण।

लोबिया भी दो प्रकार का होता है एक छोटे दाने वाला लाल रंग का होता है वह सब देशों में होता है दूसरा सुपेद रंग का मोटे दाने

होता है सुपेद रंग वाला सीने और फिफड़े को नर्म करता है वीर्य्य को पैदा करता है बदन को मोटा करता है पेशाब को जारी करता है ॥१४५॥

वाकला के गुण।

इसी का दूसरा नाम वागली है अवल दरजा में सरद और खुशक होता है गाढ़े खून को पैदा करता है खांसी और सीने के दरद को भी दूर करता है इसी कच्ची फली के बीज की तरकारी वड़ी स्वादु होती है ॥१४६॥

* दोहा *

संमत एक अरु नवपुन, पष्ट अष्टपुन आन।
फाल्गुण शुदिद्वादशी, ग्रन्थ यह पूर्ण जान॥

॥इति स्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधिरेण विरचिता 'गुणों का खजाना' नामक ग्रन्थे पञ्चमो ऽध्यायः ॥५॥